अँजोर

कक्षा-7 खातिर
भोजपुरी पाठ्य पुस्तक

(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, द्वारा विकसित)
बिहार स्टेट टेक्स्ट बुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना द्वारा मुद्रित

दिशा बोध :

- **श्री राजेश भूषण,** राज्य परियोजना निदेशक, बिहार शिक्षा परियोजना, बिहार, पटना
- **श्री हसन वारिस,** निदेशक राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, पटना-800006
- **श्री मुखदेव सिंह,** क्षेत्रीय शिक्षा उप निदेशक, तिरहुत प्रमंडल
- **श्री रामेश्वर पाण्डेय,** कार्यक्रम पदाधिकारी, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना
- **श्री बसन्त कुमार,** शैक्षिक निबंधक, बिहार स्टेट टेक्सट बुक पब्लिसिंग कॉ०लि०, पटना
- **डॉ० सैयद अब्दुल मोइन,** विभागाध्यक्ष, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
- **डॉ० श्वेता शांडिल्य,** शिक्षा विशेषज्ञ, यूनिसेफ, पटना
- **डॉ० ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी,** प्राचार्य, टी० आई० एच० एस०, पटना

पाठ्यपुस्तक विकास समिति

लेखक सदस्य –

1. **डॉ० महामाया प्रसाद 'विनोद',** पूर्व प्राचार्य, +2 उच्च विद्यालय, अमनौर, सारण
2. **डॉ० जीतेन्द्र वर्मा,** सह-सम्पादक, अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, पटना
3. **डॉ० रवीन्द्र शाहाबादी,** व्याख्याता, स्नातकोत्तर भोजपुरी विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
4. **श्री ओम प्रकाश पंडित,** व्याख्याता, कर्पूरी ठाकुर महाविद्यालय, मोतीहारी, पू० चम्पारण
5. **श्री संजय कुमार,** प्राथमिक विद्यालय, लहेजी, धुमनगर, सीवान

समन्वयक – **डॉ० सुरेन्द्र कुमार,** व्याख्याता (बिहार शिक्षा सेवा) राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना

समीक्षक – 1. **प्रो० ब्रजकिशोर,** अध्यक्ष, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

आरेखन एवं चित्रांकन – श्री सीता राम, ज्ञान विज्ञान समिति, पटना

आभार – यूनिसेफ, बिहार, पटना

आमुख

बिहार सरकार के नवका पाठ्यचर्या के आलोक में राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् ई किताब पाठ्य-पुस्तक निर्माण समिति के सहयोग से विकसित कइले बा।

भारतीय संविधान के मुताबिक भारत के हरेक नागरिक के अपना मातृभाषा में ज्ञान प्राप्त करे के अधिकार बा। भोजपुरी बोले वाला अबहीं ले एक अधिकार से वंचित रहले ह। अइसे त बिहार में पिछला कई बरिसन से उच्च आ उच्चतर वर्गन में एकर पढ़ाई हो रहल बा बाकिर ई पहिला अवसर बा जे बिहार सरकार एकरा के मातृभाषा के रूप में विद्यालयी स्तर पर माध्यम बनावल गइल बा।

एह किताब में सतवाँ के छात्रन के क्षमता के ध्यान राखल गइल बा। एकर उद्देश्य छात्रन के भाषाई अभिव्यक्ति बनावल बा। एह किताब के एगो उद्देश्य लड़िकन के भाषा के मारक क्षमता से परिचितो करावल बा। ई पाठ्य पुस्तक लड़िकन के जीवन के मानसिक दबाव आ बोरियत कम क के खुशी भरे में कारगर होई।

'अँजोर' में ई प्रयास कइल गइला बा कि जीवन के विभिन्न पक्षन के बात के रोचक ढंग से साहित्य के विभिन्न विधन के माध्यम से परोसल जाव। एह किताब के पढ़ला से लड़िकन में अभिव्यक्ति के क्षमता के विकास होई। एह पाठ्य-पुस्तक में संकलित रचना के रचनाकार लोग के प्रति हमनी आभारी बानी।

पाठ्य पुस्तक विकास समिति बड़ी मेहनत आ लगन से कई गो औपचारिक आ अनौपचारिक बैठकन में एकरा के तैयार कइलस। हम एह समिति के प्रति अभारी बानी।

(हसन वारिस)
निदेशक (प्रभारी)
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

राह के अँजोर

जब मातृभाषा के दीया- बाती जरेला त राह में ज्ञान के अँजोर फइल जाला। जिनगी में सब भषन के महत्त्व बा बाकिर मातृभाषा लड़िकन के विकास में सबसे निर्णायक भूमिका निभावेला। एकर उपेक्षा कइला से लड़िकन के व्यक्तित्व के विकास में बाधा पड़ी। भोजपुरी बड़हन क्षेत्र के लोगन के मातृभाषा हिय। एकरा के बोले वाला देश-विदेश सब जगे बाड़े। एह में लड़िकन के भाषिक कौशल के विकास पर ध्यान दिहल गइल बा। पाठ चयन में एह बात के ध्यान राखल गइल बा कि लड़िका हरेक पाठ से भाषा के कवनो-ना-कवनो कौशल से परिचित होखो आ पहिले से सीखल भाषिक क्षमता विकसित आ मारक क्षमता वाला बनो।

किताब के शुरुआत रामेश्वर सिन्हा पीयूष के कविता **'हमहूँ खेले जाइब'** से होता। एह कविता में अइसन रवानगी बा कि सहजे जबान पर चढ़ जाता। एह में शब्द-युग्म के संगे-संगे खेल-कूद के नया-नया शब्दन से लड़िका परिचित होइहें। शब्द कवना तरे अपना परंपरागत अर्थ छोड़ के नया अर्थ स्थापित क लेला-ई बात एह कविता में प्रयुक्त गाँज आ अइसन आउर शब्दन से बुझाता।एह में बाल मनोविज्ञान के नीमन पकड़ बा। आशारानी लाल के लिखल **'ऊ हमार रहे'** भोजपुरी के प्रतिनिधि रेखाचित्र ह। एह से लड़िका रेखाचित्र विधा से परिचित होइहें। ई समाज में अबले उपेक्षित वर्ग के प्रति सहानुभूति जगावता। एह में लड़िका शब्दन के पर्यायवाची सीखीहें। एकांकी **'छाता'** (जगदीश सहाय 'असीम') कई तरह के भाषिक क्षमता से परिचित करावता। नाटकीय भंगिमा से भरल एह एकांकी में लड़िका विराम चिन्ह के प्रभाव आ उपयोगिता आउर बॉडी लैंग्वेज के महत्त्व के जानकारी भी प्राप्त करीहें।

सरहुल आदिवासी लोग के महान पर्व हवे। एह अवसर पर गावल जायेवाला लोकगीत के भोजपुरी अनुवाद दिहल गइल बा। एह से लड़िका आदिवासी संस्कृति से परिचित होइहें। एह में लड़िका विशेषण बनावे के सीखीहें। आजादी के लड़ाई में भोजपुरिया क्षेत्र के महान योगदान रहल बा। **'बहुरिया के ललकार'** निबंध अइसने गौरवगाथा कह रहल बा। मेहरारू लोग के नेतृत्वकारी भूमिको पर एह में प्रकाश पड़ल बा। एह में लड़िकन के दोसरा भाषा के शब्दन के संगे साहचर्य

के सीख मिलता। घाघ- भड्डरी के कहाउत आजो लोग का जबान पर बा। कृषि-कार्य आ मौसम परिवर्तन से संबंधित ई कहाउत भोजपुरी भाषा के प्रभावी क्षमता आ वक्रता के ज्ञान करावता। एह से परंपरो के संरक्षण होता। प्रसिद्ध लेखिका महाश्वेता देवी के कहानी **'डाइन'** समाज में फइलल अंधविश्वास आ मेहरारू के प्रति होखेवाला भेदभाव के खिलाफ भाव जगावता। बंगला में लिखल एह कहानी के साँच भोजपुरियो जिनगी के साँच बा। एह से लड़िका संवाद- कला आ अनुवाद-कला से भी परिचित होइहें। भोजपुरिया क्षेत्र में संत साहित्य आजो जनता के कंठहार बनल बा। संत कबीर आ संत टेकमन राम के पद जिनगी के सुख-दु:ख से जुड़ल बा। एह से छात्र प्रतीक आ सांकेतिक भाषा सीखे कावर बढ़िहें। बिस्मिल्लाह खाँ भोजपुरिया गौरव रहीं। एह से छात्र संगीत के कई गो नया-नया शब्दन से परिचित होइहें। बिस्मिल्लाह खाँ के जीवन-यात्रा प्रेरणा से भरल बा। उहाँ के शून्य से शिखर पर पहुँचनी।

भोजपुरी लोक साहित्य बड़ा समृद्ध रहल बा। **'नीमिया के डाढ़ि'** नाँव के लोकगीत क्रिया आ आउर भाषिक क्षमता सीखावता। संगही हृदय के भीतर छू लेवे के लोक गीत के शक्ति बतावता। भोजपुरी कवि रामदेव द्विवेदी **'अलमस्त'** के कविता **'बिलाई भगतिन'** हास्य से भरल बा। एह में लड़िका के मुहावरा, प्रत्यय, लिंग से परिचित करावल गइल बा। हँसी-ठिठोली में कहलो बात प्रभावी हो सकता-भाषा के एह क्षमता से ई कविता परिचित करावतिया। **'जंगल में मंगल'** (भगवती प्रसाद द्विवेदी) कहानी पर्यावरण पर आधारित बिया। ई कहानी गाछ बचावे के भाव भरतिया। एह में छात्र वाक्य संरचना विशेष रूप से सीखिहें।

किताब के आखिर में रोचक सामग्री दिहल बा। एह से परीक्षा में प्रश्न ना पूछल जाई। परंपरागत खेल गीत, बुझउवल, लोरी बड़ा मजदार बा। एह में दूगो कविता आ दू गो कहानी दिहल बा। रामलखन सिंह के कविता **'आम'** आ लक्ष्मीकांत सिंह के कविता **'चाँद'** में लड़िकन के मनोभावन के अभिव्यक्ति भइल बा। भोजपुरी के प्रसिद्ध कहानीकार गिरिजाशंकर राय **'गिरिजेश'** के कहानी **'डेढ़ लाख टकिया सिपाही'** आ विजय कुमार तिवारी के कहानी **'भभूत'** समाज के सही राह देखावता।

पाठ से अभ्यास बनावे में एह बात के ध्यान राखल गइल बा कि छात्र में सोच के क्षमता विकसित होखे। पाठ के संगे-संगे छात्र के परिवेश से जुड़ल प्रश्न भी कइल गइल बा। व्याकरण के प्रश्न पाठ से पूछल गइल बा। एकरा के रोचक बनावल गइल बा। कुछ अइसनों प्रश्न पूछल गइल बा, जवन छात्र के कल्पना शक्ति के बढ़ावता।

भोजपुरी के मानक स्वरूप उभर चुकल बा। हमनी कई गो औपचारिक आ अनौपचारिक बैठकन में विचार-विमर्श के बाद तय कइनी कि '' अब भोजपुरी बोली भर नइखे रह गइल। ई अब खाली गीत-गवनई के भाषा नइखे रह गइल। अब ई विचार आ शास्त्र के भाषा बन चुकल बिया। जल्दीए ई शासन-प्रशासन, ज्ञान-विज्ञान आदि के भी भाषा बनी। अइसन स्थिति में एकरा खातिर देवनागरी लिपि के कवनो अक्षर, संयुक्ताक्षर भा मात्रा छोड़ल ठीक नइखे। एह से अभिव्यक्ति में कठिनाई होई।''

''जवना चीज खातिर भोजपुरी में शब्द बा नि:संदेह ओकरा के अपनावे के चाही बाकिर हिंदी, अंग्रेजी आ आउर कवनो भाषा के शब्दन के भोजपुरियावे के फेर में ओकर वर्तनी बिगाड़ल ठीक नइखे। एह से अराजकता पैदा हो जाई। जरूरत पड़ला पर दोसरा भाषाके शब्द के बेहिचक अपनावे के चाहीं। एह से भोजपुरी समृद्ध होई। बंगला, मैथिली इहे कइले बा। एह से भोजपुरी के विकास होई। अंग्रेजी के समृद्धि के एगो बड़हन वजह इहो बा कि ऊ अपना जरूरत के मुताबिक कवनो भाषा के शब्दन के अपना लेवे ले। शुद्धतावादी दृष्टिकोण से हिंदी के बहुत नुकसान भइल बा। हमनी के खाँटी भोजपुरी के आग्रह से बचे के चाहीं। जब भोजपुरी के हर तरह के अभिव्यक्ति के माध्यम बनावे के बा, त मुख सुख, स्थानीय प्रयोग आदि के आग्रह से ऊपर उठे के होई। अंग्रेजी, हिंदी सहित सभ भषन के स्थानीय रूप बावे बाकिर ओह हिसाब से लिखल ना जाला। मौखिक भाषा आ लिखित भाषा में हमेशा अंतर रहेला।''

''चूँकि भाषा सामाजिक संपत्ति हवे, ई समाज में जनम लेले आ समाजे में विकसित होले। एह से समाज में आइल बदलाव के हिसाब से भोजपुरी के अपना के ढाले के पड़ी। एह घड़ी कई गो कारण से एक जगे से दोसरा जगे के आवागछ, संपर्क बढ़ रहल बा। एकर प्रभाव भाषा पर भी पड़ रहल बा।''

''भाषा में बदलाव होत रहेला। दुनिया के सब भषन में अइसन होला। एकरा के रोकल नईखे जा सकत। भोजपुरी में जवन बदलाव आ रहल बा ओकर स्वागत करे के चाहीं। हरेक भाषा के एगो ग्राम रूप (Cocknex) आ एगो शिष्ट रूप होला। भोजपुरी खाली गँवई लोग के भाषा नइखे रह गइल।''

एह किताब में दिहल श्रीमती रामस्वरूपा देवी के तस्वीर ऊपरावे में श्री अजय प्रताप सिंह (अमनौर, सारण) के योगदान रहल बा। एकरा खातिर उहाँ के धन्यवाद के पात्र बानी।

शिक्षक लोगिन से

ई पहिला अवसर बा जब भोजपुरी सतवाँ वर्ग में पढ़ावल जातिया। एजवाँ एह बात के ध्यान राखे के चाहीं कि एह वर्ग में आइल विद्यार्थी बचपन आ किशोरवय के सँधि स्थल पर खड़ा रहेलन। एह उमिर के खासियत ई होला कि ऊ अपना परिवेश के प्रति उत्साह से भरल रहेले। ऊ हरेक चीज के स्वाद लेवे खातिर उत्सुक रहेले। अपना मातृभाषा के ऊ नीमन तरे से बोले-समझे के जानतारे। अब एकरा आगे के बात सीखावे के बा। मातृभाषा में कवनो बात कहल-समझल-सीखल आसान होला। एकरा माध्यम से ऊ बात आसानी से बूझ सकता। विद्यार्थी में अइसन भाषिक क्षमता विकसित कइल जाव जवना से ओह लोग के जीवन-संग्राम में मदद मिलो। एजवाँ सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के ई बात इयाद राखे के चाहीं कि 'गद्य जीवन संग्राम की भाषा है।'

भोजपुरी एगो अन्तरराष्ट्रीय भाषा हिय। एकरा के बोले वाला भारत के अलावे नेपाल, मॉरीशस, फिजी, हालैण्ड, सूरीनाम, ट्रीनिडाड सहित कई देशन में बड़हन संख्या में बाड़े। एकरा में भोजपुरी के प्रयोग हो रहल बा। विद्यार्थी के भोजपुरी के शक्ति से परिचित करावत एह से लाभ उठावे लायेक बनावे के बा। भोजपुरी जनभाषा हिय। एह में कईएक भाषा के शब्द मिलल बाड़े सन। संस्कृत, द्रविड़ भषन, अरबी, फारसी, अंग्रेजी सहित कईएक भषन के शब्द एह में फेटा गइल बाड़े। एकर एगो झलक रउवा किताब के अंत में दिहल शब्दकोश में शब्द के मूल देखला से पता चली। शब्दन के मूल ना खाली शब्दन के अर्थ खोलेला बलुक विभिन्न भषन के आपसी संबंधन आ सामाजिक-राजनैतिक स्थितियनों के बातावेला। विद्यार्थी के बहुभाषिकता के दिशा में प्रेरित करे के चाहीं। अपना मातृभाषा के प्रति गौरव के भाव रखत ऊ दोसरो भाषा के सीखस आ सम्मान के भाव राखस। किताब में व्याकरण के समझ बढ़ावे खातिर अभ्यास दिहल बा। एकरा के रोचक ढंग से बतावल जाये के चाहीं। व्याकरण खातिर फरका से कवनो किताब नइखे दिहल जात। विद्यार्थी के शब्दकोश के उपयोग करे खातिर प्रेरित कइल जाव। किताब के आखिर में दिहल शब्दकोश छोटहन बा। एकरा अलावहूँ शब्दकोश के उपयोग करावे के चाहीं।

विषय-सूची

क्रम	शीर्षक		लेखक	पृष्ठ
1.	हमहूँ खेले जाइब	(कविता)	रामेश्वर सिन्हा 'पीयूष'	
2.	ऊ हमार रहे	(रेखाचित्र)	आशारानी लाल	
3.	छाता	(एकांकी)	जगदीश सहाय 'असीम'	
	खण्ड			
4.	सरहुल	(लोकगीत)		
5.	बहुरिया के ललकार	(निबंध)	पाठ्य पुस्तक निर्माण समिति	
6.	कहाउत		घाघ-भड्डरी	
	खण्ड			
7.	डाइन	(कहानी)	महाश्वेता देवी	
8.	पद	(कविता)	कबीर दास	
9.	पद	(कविता)	टेकमन राम	
10.	शहनाई के सरताज	(जीवनी)	पाठ्य पुस्तक निर्माण समिति	
11.	नीमिया के डाढ़ि	(लोकगीत)		
12.	बिलाई भगतिन	(हास्य कविता)	रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त'	
13.	जंगल में मंगल	(कहानी)	भगवती प्रसाद द्विवेदी	

पढ़ऽ-गुनऽ

1.	खेलगीत	(गीत)		
2.	बुझउवल			
3.	आम	(कविता)	रामलखन सिंह	
4.	चाँद	(कविता)	लक्ष्मीकांत सिंह	
5.	डेढ़ लाख टकिया सिपाही	(कहानी)	गिरिजाशंकर राय 'गिरिजेश'	
6.	भभूत	(कहानी)	विजय कुमार तिवारी	

शब्दकोश

अध्याय-एक

रामेश्वर सिन्हा 'पीयूष'

रामेश्वर सिन्हा 'पीयूष' भोजपुरी के कवि हईं। इहाँ के जनम 2 मार्च 1946 ई० के बक्सर जिला के कुकुठा गाँव में भइल रहे। इहाँ के पटना विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त कइनी।

पीयूष के प्रकाशित किताब बा–सुर पंछी, रेत के परछाहीं, शीशा के चूर, जाड़ा के धूप।

एह कविता में लड़िका के मन के मनोहारी चित्र उभर के आइल बा। संगही एह में लड़िकन के बाल-सुलभ चंचलता, ओकर उत्साह आ ऊँच लक्ष्य के दर्शन होता।

हमहूँ खेले जाइब

माई! हमहूँ खेले जाइब!
बैट बाल मँगवा दऽ हमके
रन पर रन के गाँज लगाइब!

साँझ-सुबह हम खेलब जाके
पढ़बो करब रात खा आके
तंग करब ना हम तहरा के
मन आपन हम खूब लगाइब
माई! हमहूँ खेले जाइब!

सभ लइकन के बैट किनाइल
हमरा के अबहीं ना आइल
देखि-देखि के मचले मनवा
कतना दिन ले मुँह लटकाइब।
माई! हमहूँ खेले जाइब!

चउका पर छक्का मारब हम
देखब, केकरा में केतना दम
ध्यान लगाके खेलब माई
सभ लइकन के बैंड बजाइब।
माई! हमहूँ खेले जाइब!

गावस्कर, गंभीर बनब हम
सौरभ, धोनी वीर बनब हम
तेन्दुलकर-अस नाम कमाइब
माई-बाबू के शान बढ़ाइब।
माई! हमहूँ खेले जाइब!

आज कहब बाबूजी से हमहूँ
माँगी ना कुछऊ हम कबहूँ
हमरे ओरी से बोलिहऽ तू
नाहीं तऽ तहके बतलाइब
माई! हमहूँ खेले जाइब!

●

अभ्यास

पाठ से

1. तहरा सबसे नीमन खेल कवन लागेला ?
2. तहार प्रिय क्रिकेटर के ह आ काहे ?
3. तहरा काहे क्रिकेट भा दोसर कवनो खेल, खेले के मन करेला ?
4. कवि खेले के अलावे आउर का करे के कह रहल बा ?

पाठ से आगे

1. का तहरा विद्यालय में क्रिकेट खेलल जाला ?
2. भारत के महिला क्रिकेट टीम के स्थिति के पता कर ऽ।
3. का तहरा मनपसंद चीज कीनइला पर पढ़े में बेसी मन लागेला ?
4. कवनो खेला में दूध-भात का होला ?
5. पहिले गाँव में क्रिकेट से मिलत-जुलत कवन खेल खेलल जात रहे ?

अनुमान आ कल्पना

1. तू कवनो खेलवना कीने खातिर अपना बाबूजी से ना कह के माई से काहे कहेल ऽ ?
2. तू भा तहार कवनो साथी खेल में गाल करेला ?
3. का क्रिकेट आ गुल्ली-डंडा में कुछ समानता बा ?
4. खेल खेलला में खाली मन लागेला कि अउरो कवनो लाभ होला ?

भाषा से

1. नीचे लिखल शब्दन के अर्थ बताव–
   (i) पीच
   (ii) रन
   (iii) एल०बी०डब्लू
   (iv) आउट
   (v) गाँज

2. एह कविता में कवना-कवना अंग्रेजी शब्दन के प्रयोग भइल बा ?

3. दू गो शब्दन के बीच जब - के चिन्ह लागेला त ओकरा के योजक-चिन्ह कहल जाला। एह चिन्ह के माने होला 'आउर'। साँझ आउर सबेरे, साँझ-सबेरे। एकरा के द्वन्द्व समास कहल जाला।

अइसन पाँच गो युग्म-शब्दन के वाक्य में प्रयोग करऽ।

इहो पढ़ीं

संख्या बनावे वाला इकाई

कागा	=	एक
दूआ	=	दू के इकाई
गंज	=	चार के इकाई
गाही	=	पाँच के इकाई
कोड़ी	=	बीस के इकाई

परंपरागत गुणन सूची

सवइया	=	$1\frac{1}{4}$
डेढ़ा	=	$1\frac{1}{2}$
अढ़इया	=	$2\frac{1}{2}$
अँगुठा	=	$3\frac{1}{2}$
ढँगुचा	=	$4\frac{1}{2}$
पँहुचा	=	$5\frac{1}{2}$
बिटगिरहा	=	11

शब्दार्थ

बैट	–	क्रिकेट के लकड़ी के बल्ला
गाँज	–	ढेर
चउका	–	क्रिकेट में जब बॉल बाउन्ड्री के पार जाला त एके वेर चार रन बनेला एके चउका कहल जाला।
छक्का	–	क्रिकेट में जब बॉल बिना जमीन छूले ऊपरे-ऊपर बाउन्ड्री के पार जा ला त एके वेर छः रन बनेला। एकरे के छक्का कहल जाला।
हमरेओरी	–	हमरा तरफ

अध्याय-दू

आशारानी लाल

आशारानी लाल भोजपुरी के प्रतिष्ठित लेखिका हईं। इहाँ के जनम बलिया जिला (उत्तर प्रदेश) के सँवरूपुर गाँव में 16अगस्त, 1940 ई० के भइल रहे। इहाँ के कर्मभूमि बिहार के सीवान जिला बनल। इहाँ के रचना समाज के उपेक्षित वर्ग के प्रति सहानुभूति जगावेली सन। भोजपुरी में नारी-विमर्श के स्वर सबसे पहिले इहें के रचना में सुनाइल। इहाँ के अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से पुरस्कार मिल चुकल बा।

श्रीमती लाल के प्रकाशित किताबन के नाँव एह तरे ***बा-ए बचवा फूलऽ फरऽ*** *(1996),* ***हमहूँ माई घरे गइनीं*** *(2001),* ***दिठौना*** *(2004),* ***माटी के भाग*** *(2005), सितली(2006)।*

'ऊ हमार रहे' एगो मार्मिक रेखाचित्र बा। ई समाज के उपेक्षित वर्ग के प्रति सनेह जगावता।

ऊ हमार रहे

एगो छोटहन छौना रहे। ओकर माधुरी मूरत आ सलोनी सूरत आजो हमरा आँखी के सोझा जाड़ा के गझिन कुहासा बन के कबो-कबो छा जाला। ओह कुहासा के पार कुछु लउकबे ना करेला आ थोरही देर में एकाध गो पानी के बूँदो गाले पर ढरक जाला। जब ई सलोना छौना एगो छोटहन आ गोटहन लइका बन के हमरा लगे आइल रहे, त हम बीमार रहीं। दूधवाला कहलन कि राउर सेवा करे खातिर एगो टेल्हा रउरा के दे तानी। हमरा से राउर दशा देखल नइखे जात। ऊ रउरा लगे रही त दतुवन पानी त उठा के रउवा के देबे करी आ रउवा ओसे कुछ आराम जरूरे हो जाई।

दू चार दिन बाद मन बड़ा खुश भईल। दूधवाला के एह दया पर कि एगो फुदकत हमरा लइकने नीयर टेल्हा लेआके हमके दिहलन।

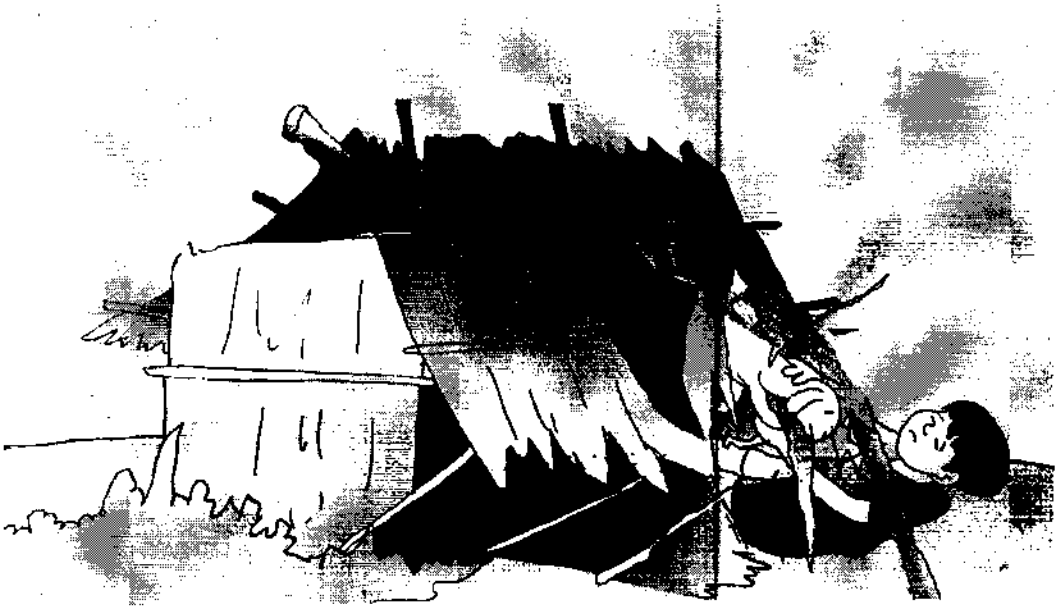

आज ऊ टेल्हा हमरा लगे नइखे। चाहे हम ई कहीं कि एह दुनिया में नइखे त कवनो बाउर बात ना होई। हमरा लगे ऊ दू-तीन बरीस ले रहलस। एतने दिन हमार साथ ओह बिरजू से रहे, बाकी ऊ हमरा दिल में हमरा लड़िकन से तनिको कम जगहा ना बनवलस। बिरजू साँवर रहे कि करिया एह दुनू में फरक त ना बता सकीले, बाकी हरदमे हँसत रहे। बड़ फुदूर-फुदूर धउरे, ओसही जइसे कवनो बौना धउरेलन सन। ऊ हमरा के माई कहिके बोलावे। हमहूँ ओके खूबे मानत-जानत रहीं, आ हमके एह में कवनों फरक ना बुझाय कि ऊ हमरा के माने कि हम ओके। हमर बेटने के अइसन उहो हमरा मनें में घुस के बइठल रहत रहे। बिरजू के बोली में त मिसरी घुलल रहत रहे। ऊ हमरा लइकन के बब्बूजी-पप्पूजी छोड़ के दूसर कुछ ना कहे, इहाँ ले कि हमरा घरे एगो कुकुर पोसल रहे जेकर नाँव रहे हीरो तऽ बिरजू ओहू के हिरोजी ही कहे। कबो, कबो त ऊ ओह कुकुरा लगे बइठ के ओकर किलनी निकाले आ ओसे खूबे बतियावे। कहे कि-ए हीरोजी रउआ भूख लागल बा? का खाइब? दूध-रोटी कि पूरी-पराठा? सबेरे साँझ हीरोजी के लेके लइकन के संघे घुमावे जरूर जात रहे। कहे कि-ढेर न कुकुर भूके लागे सन्। एही से ढेला ले

लंतानी कि उन्हनी के भगावत रहब, ना त दूसर लइका लिहो-लिहो करिहन सन । बिरजू के बोली ठीके कबीर के प्रेम के बोली रहे जे औरन के तन शीतल करबे करे, अपनहूँ शीतल होय। बिरजू अढ़ाई आखर प्रेम के खूबे पढ़ले रहे ।

एह बिरजू के केतना हिम्मत रहे कि ऊ कबो डेराय ना । राती -बिराती अकेले कतहूँ जाये में हिचके ना। ई पुछला पर कि डर नइखे न लागत। कही कि-हम काहे के डेराइब ! हमरा से त भूतहो डेराई ! जब कबो अन्हार देख के ओके टार्च दे दिहल जाव । त ऊ ओके अपना जाँघिया में खोंस के रख ली। ई कहला पर कि टार्च जरा के तब लेके जा, त कही कि-"नाही नऽ । हमके छोटहन देख के कुल छीन न लिहन सन। इहाँ कुकुर रहेलन सन। रहे दीं जब काम परी त जरा लेइब।" ई कहते ऊ अन्हारे में धउर जाई।

हमार मन कबो मनबे ना करेला कि कहीं कि बिरजू दोसर रहे, नाऽ-ऊ हमार रहे-इहे कहब। जब-जब उ हँसत रहे-तऽ हमार मन हरियरा जाव । एक बेरी ऊ मन मरले बइठल रहे तऽ पूछला पर कहलस कि ए माई हउवा बड़ा जोर से आँन्ही नियर बहता। बड़ा न पतई वनवा में गीरत होई। हम पुछली त कहलस-खूब न बटोराई बड़ा मजा आई।

ऊ का होई रे ? आरे रउवा नइखी जानत-हमनी के घोनसार न झोकाला। पतई बटोर के गाँज लागेला, तबे न घर के खरची चलेला। ऊ अपना माई के सेवा करे आ माई ओकर मुँह ताकत रहँस। ई ना बुझाइल कि के केकर करजा खइले बा आ ई करजा के नाता जुटल कइसे बा जे आजुवोले एह मन से टूटत आ उड़त नइखे। ई त नाता जबले हम जीयब नाहिए छूटी। छुटबो कइसे करी-इहे न बिरजू रहे कि अम्माँजी मरल रही त हमनी के रोवत देखि के धउरल मीरगंज से हथुवा चल गइल आ हमरा देवर के बोला ले अइलस। एतना मयगर लइको हमरा जमलो होई की ना एहमें संसये बा। एह बिरजू में त मोका परला पर हम ऊ मोह-माया आ दम-खम देखलीं कि अगर अड़ोस-पड़ोस कबो हमके अनाप-सनाप बोललस चाहे आँख देखवलस, त ऽ ऊ ओके खाली कड़ा बात से भर देत रहे आ ओह लोगिन के आँख निकाल लेवे पर ऊतारू हो जात रहे। एह घरी ऊ सोचबे ना करे कि ऊ एगो छोटहन लइका बा। एह घरी ऊ हमार रहे आ हम ओकर। एगो टूअर-टापर लइका में एतना बड़हन-बड़हन गुन जीये खातिर भरल रहे कि ओके हम त कबो अनदेखी नाहिए कर सकीला।

बिरजू के गोल-गोल मुखड़ा ओह में गोल-गोल आँख आजो हमरा आँखी के सोझा अइसही नाचता जइसे ऊ ललकी जँघियवा आ करियकी कमीजीया पहिनले हमरा सोझा ठाढ़ होखे-आ हमरा से हँस-हँस के कुछु बतियावत होखे-आ हम ओकर हँसत-बिहँसत मुहँवा निहारत होखीं। भले बिरजू हमरा लगे नइखे त ऊ बा केकरा लगे ?

डेढ़-दू बरीस ले रहला के बाद एक दिन ओकर मामा अइलन आ कहलन कि-एकर माई बोलवले बिया। हमरा इहाँ से रुपिया-पइसा आ कपड़ा-लता ले के चार-छव दिन खातिर हमरा के छोड़ के त बिरजू गइलन बाकी आज ले लवटलन नाहीं। ओकरा गइला के दसो दिन अबे ना बितल रहे कि ओह गाँव के उहे दूधवाला अइलन त पुछली अपना बिरजू के बारे में। ऊ बतवलन कि ए मलकीनी जब ऊ रउवा इहाँ से गइल त ऽ ओकरा तीसरे दिन हऊ बड़की अन्हिया ना आइल रहे-ईयाद बा न? ओहि दिन त ऊ मतारिया-बेटवा अपना पलनिया में सुतल रहन सन। अन्हिया आइल त भगलन सन बाकी ओकर बकरिया ओही में छुटि गइल। त ऽ ई बिरजुवा बकरिया लेवे ओह में घुसल। त ओकरा घुसते छन्हिया गिर गइल। ऊ बचवा बकरिया के साथ ही चल देलन।

आहि-ए-बिरजू। तोर ममवा त पहिलहूँ कई बेर तोके बोलावे अइलस-बाकी ना त तू जाये के कहल ना हम भेजलीं। एह बेरी हमरा ई का हो गइल कि तोहके अपना से दूर कऽ दिहलीं-ए बिरजू अब हम का करीं ए बचवा? हमके तू अब कइसे भेटइब ए हमार बाबू? इहे कहि के जब हमरा आँसू बहे लागल त दूधवाला कहलन-ए मलकीनी ! रउवा का रोवतानी। रोवे के त ओकरा माई के ना बा-जवना के मरद त पहिलही छोड़ के चल गइल आ अब एगो लइको रहे-त उहो-ओकरा सोझहीं-ओके छोड़ के चल गइल। देखीं न ओकर किसमत कइसन बा? बाकी ऊ का करो-एह पेट के पोसे खातिर आजो आपन काम करतिया। धोनसार रोजे जरावेले आ ओमे चार घंटा रोजे बइठेले। रउवा काहे के रोवतानी। रउवा ना न ओके भेजलीं, ओकर मउवतिया न ओके बोला लेलस।

बिरजू आज एह दुनिया में नइखे। बाकी अपन जवन जगहा एह हमरा मन में-ऊ बना गइल बा-ऊ कबो धूमिल ना होई। आज हमरा इहे बुझाता कि सूर कृष्ण खातिर कहले रहन कि-

बाँह छुड़ाए जात हो, निबल जानि के मोहि ।
हिरदे से जो जाइए, सबल बखानो तोहि ।।

अब हमरा इहे बात अपना बिरजू खातिर कहे के बा, जेकर सूरत हू-ब-हू ओह कृष्ण के मूरत से मिलत-जुलत बा। एही से फेर कहतानी कि-'ऊ हमार रहे ।'

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. बिरजू केकरा के बचावे खातिर पलानी में गइल ?

   (क) कुत्ता के बच्चा के (ख) बकरी के बच्चा के

   (ग) अपना छोट भाई के (घ) केहु के ना

2. घोनसार में का होला ?

   (क) कपड़ा फींचाला (ख) नहाइल जाला

   (ग) भूँजा भूँजाला (घ) पढ़ाई होला

3. 'ढाई आखर प्रेम के पढ़े से पंडित होय' ई केकर पंक्ति ह ?

   (क) कबीर (ख) रहीम

   (ग) सूर्यदेव पाठक पराग (घ) बिसराम

4. 'ऊ हमार रहे' केकरा खातिर कहल गइल बा ?

5. 'ऊ हमार रहे' कवना विधा के रचना ह ?

पाठ से

1. बिरजू के व्यक्तित्व के कवन-कवन विशेषता प्रभावित करऽ ता ? लिखऽ ।

2. 'ऊ हमार रहे' शीर्षक के आधार का बा ?

3. एह रेखाचित्र के दोसर शीर्षक का हो सकता ?

4. बिरजू के बोली कबीर के प्रेम के बोली कहल गइल बा, कइसे ?

5. बिरजू के प्रति लेखिका के कइसन भावना बा ? सोच के लिखऽ ।

6. बिरजू लेखिका के मन में आपन लइका होखे के एहसास करावता। कइसे ?

7. लेखिका के बिरजू के इयाद काहे आवता ?

पाठ से बाहर

1. ई पाठ 'रेखाचित्र' ह। रेखाचित्र के विशेषता का होला ? जानकारी प्राप्त करऽ ।

2. आपन पुस्तकालय से एह तरह के दोसर भाषा के 'रेखाचित्र' खोज के पढ़ऽ।

भाषा से

1. एगो चीज खातिर कवगो शब्द होला जवना के पर्यायवाची कहल जाला। जइसे–छौना = बबुआ, लइका, मुनवा, व टेल्हा।

नीचा लिखल शब्दन के पर्यायवाची लिख ऽ।

सूरत

पानी

बाउर

महतारी

बढ़िया

2. 'छोटहन छौना' में छोटहन विशेषण बा आ छौना विशेष्य। नीचे दिहल तालिका में सही विशेषण आ विशेष्य के रेखा से जोड़

बाउर	छौना
गझिन	सूरत
सलोनी	बात
गोटहन	लइका
छोटहन	कुहासा

अनुमान आ कल्पना

1. तू अपना प्रिय आदमी पर रेखाचित्र लिखऽ।

2. तहरा अलग-अलग बिरजू खानी कवनो पात्र होखे त पता करऽ कि एह रेखाचित्र से ओकर जिनगी केतना मिलता ?

शब्दार्थ

छौना	-	छोटा लड़िका
सूरत	-	चेहरा
गझिंन	-	सघन
सलोना	-	सुन्दर
टेल्हा	-	छोट लड़िका

करिया	-	काला
सीतल	-	ठंढा
कुकुर	-	कुत्ता
धउर	-	दौड़
घोनसार	-	जहँवा भूँजा भूजाला
पलानी	-	झोपड़ी, मँड़ई

अध्याय-तीन

जगदीश सहाय 'असीम'

जगदीश सहाय 'असीम' भोजपुरी के मान्य नाटककार बानी। इहाँ के नाटक से भोजपुरी नाट्य-साहित्य के स्तर ऊँच भइल बा।

इहाँ के नाटक 'अनहोनी' बहुते चर्चित भइल।

एह एकांकी से भाषा के मारक क्षमता के पता चलता। संगही छोट परिवार के महत्त्व बतावता। ई एकांकी विराम-चिन्ह के प्रयोगो सीखावता।

एकांकी

छाता

झलक-1

स्थान--मनसुख लाल के घर। ड्राइंग रूम में घुसताड़े।

मनसुख – (थकावट से निसाँस छोड़ के कुर्सी पर बइठ ताड़े) ओह! ....आठ बज गइल? ...सत्यानाश! ... अब कब दाढ़ी बनाइब, नहाइब, खाइब, का ऑफिस जाइब? ... हाली-हाली तइयारी करेके चाहता। (उठताड़े) पहिले दाढ़ी...हँ, पहिले दाढ़ी बनाईं! .... (सामान निकाल ताड़े) सेफ्टीरेजर, ब्रश, शेविंग क्रीम...ब्लेड अरे हँ ब्लेड? ... सत्यानाश! अरे नयका ब्लेडवा का हो गइल!! ... (मेहरारू के पुकार ताड़े) पप्पू के महतारी! अरे ओ, पप्पू के महतारी!!...

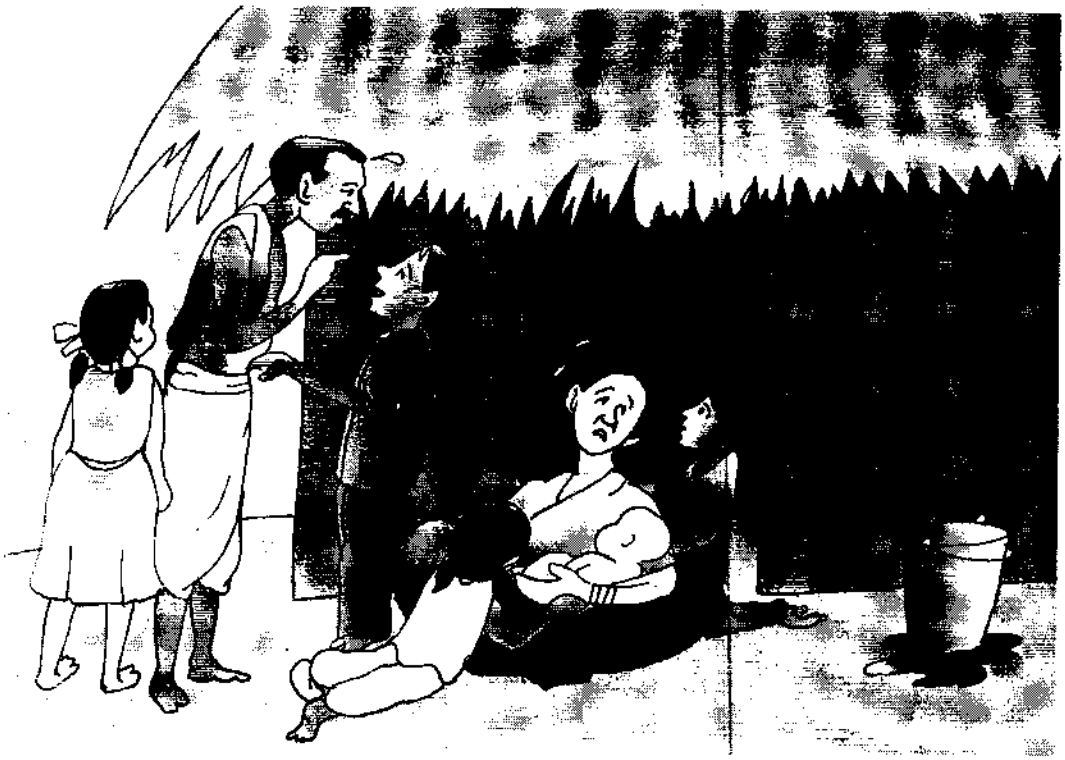

पत्नी – (प्रवेश) काहे के चिचिआ के गरदन में घाव करतानी? हम का परदेश में बइठल बानी?... हाय रे करम !

मनसुख – (बात काट के) आ त हम कवन रसगुल्ला छील के खातानी ।... सत्यानाश ! हमहूँ त तीन दिन से तोहरे के अगोरले बानी !...

पत्नी – हँ, हँ... बहुत बड़ एहसान करतानी ।... हाय रे करम । अब मरदे-मेहरारू में एहसान के बात उठे लागल !... (दरद होता) ओह,...ओह !! (बइठ जाताड़ी)

मनसुख – सत्यानाश !... अबही ले तोहार दरद कम ना भइल...

पत्नी – कम...होता ? ...ओह ! ...अब त... ई दरद संगे जाई ! ...हाय रे करम !

मनसुख – आरे ना बीती हर पर, ना फार पर, जवन बीती, करूआर पर ! ... सत्यानाश ! ... ऊ त मनसुख लाल नू सहीहें !...

पत्नी – रउआ...त...खूब सहतानी ! ... तनिका कुछ... भइल ना... कि पप्पू के महतारी के चलान कस दिआता... ...हाय रे करम ! ...ओह...

मनसुख – सत्यानाश ! हम त भुलाइए गइल रहीं ! अब देख ना, काल्हे नया ब्लेड ले आइल रहीं, आज पते नइखे चलत ।...

पत्नी – हाय रे करम ! सबेरही बड़का ब्लेड खोजत रहे...बुझाता...लेके स्कूल चल गइल बा का...

मनसुख – सत्यानाश ! ई तीन गो बेटा-बेटी त नाच नचवले बाड़ेसँ !... तीन दिन का बाद त ऑफिस जातानी, ओहू में बकरा लेखा दाढ़ी लेले जाए के परी ।

पत्नी – आ अऊरी आज-भर नाहिए जाइब, त कवन राज उलट जाई?... हाय रे करम !... साँचो पप्पू के बाबू जी, आज बुझाता कि बाँव ना जाई ।

मनसुख – तोहरा त तीन दिन से एही लेखा बुझाता ।... नोकरी के हाल मेहरारू चऊआ का ना नू बुझाई ?... सत्यानाश ! ...आरे तौलिया का हो गइल ?

पत्नी – अबगे त एहिजे रहल ह । अरे हो देखीं, छोटका लपेटले बा । ...हाय रे करम ।...

मनसुख – (झपट के छीनतारे, लइका रोवता) सत्यानाश !... (झार ताड़े) सत्यानाश !!... गरदा आ तेल लगा के चिक्कट क देलस ।... (सूंघ ताड़े) उँह...उँह... मगज में बास घुस गइल । ...कवनो समान जे ठीक से रहत होखे !

पत्नी – त, अब का करब?... रउवे नू खून हवेसँ !... ओह ।... ओह !! ...दरदिया त बढ़ते जाता !... हाय रे कमर ! (लइका के) चुप रह मत रोअ... झूठहूँ न रोवा देली नन्हका के !... हाय रे करम !

(उठताड़ी, चक्कर आवता, बेहोश होके गिरताड़ी)

मनसुख – (हड़बड़ा के) हँ हँ... पप्पू के महतारी !... (संभारताड़े) ए पप्पू के महतारी !! सत्यानाश !... ई त बुझाता, बेहोश हो गइली !... (लइका के रोवाई तेज होता, त, डाँटताड़े)... रोइबे ? चुप !... (रोवाई आउर तेज होता त, एक तमाचा मारताड़े, बाँह

धके घर से बहरी करताड़े) जो भाग,... बहरा जाके मन भर रोइहे... (दाँत पीस ताड़े) (पुकारताड़े) अरे, ए रामलाल भाई ! ..ए झम्मन ! तनी सुन जा लोगिन हो !....

दूगो आवाज – का भइल जी, मनसुख लाल ?...

मनसुख – आरे का कहीं कि का भइल ?... सत्यानाश हो गइल ! ...

दूगो आवाज – (भीतर घर में) अरे ई त पपुआ के माई बेहोश हो गइल बाड़ी !... ए झम्मन, तनी रेक्शावाला के बोलइब ।...

(रिक्शा के घंटी बाजता)। औरत के अस्पताल पहुँचावल जाता। (परिवर्तन)

झलक-2

स्थान–मनसुख लाल के घर। गंगाराम दुआरी पर खाढ़ बाड़ें। मनसुख लाल अस्पताल से लवटताड़े।

गंगाराम – नमस्कार बाबू !

मनसुख – नमस्कार भाई !... का हो गंगाराम, केने चलल बाड़?

गंगाराम – रउरे लगे साहेब भेजनी हँ बाबू !

मनसुख – सत्यानाश !... का बात बा हो ? कुछ गड़बड़ बा का ?...

गंगाराम – ना ना... गड़बड़ का होई ?... कवनो पार्टी वाला काल्हे से धरना देले बा। रउआ बिना ओकर बिल नइखे बनत !... एही से साहेब भेजनी हँ कि देख आव का हाल बा !

मनसुख – हाल का कहीं, ए गंगाराम !... सत्यानाश ! दे...खते बाड़... अस्पताल से लवटल आवतानी वाईफ के डेलीवरी केस रहे !...

गंगाराम – अरे वाह मनसुख बाबू ! बधाई हो !... का भइल ह?

मनसुख – सत्यानाश !... भवानी भइली ह।

गंगाराम – बधाई हो बाबू !... अब चलतानी, खुशखबरी तनी ऑफिसो में पहुँचा दीहीं !...

मनसुख – अरे ई कवन खुशखबरी बा ?... अबहीले त तीने गो तबाह कइले रहले सँ–अब एगो अउरी सत्यानाशी भइली ।...

गंगाराम – बाप रे। रउआ चारगो संतान हो गइलेसँ ? ... हँ भाई, रउआ कवनो हमरा लेखा चपरासी बानी ।... बड़ आदमी के बड़ बात।

मनसुख – अरे गोली मार बड़-छोट के ।... इहनिए के त पोसे में हम बिगड़ गइलीं आ तबो पूर नइखे परत। ...सत्यानाश !... आ छोड़, अब ई दुख त जिनगी भर खातिर बा। चल भीतर, तनी चाय पीके जइह... तोहरे बहाने हमहूँ...

गंगाराम – साहेब त तुरंते लवटे के कहले रहीं–बाकी, चलीं... फेरू का जानी, कब संयोग मिली। (अंदर जाता लोग। छोटका आ मुनिआ देख के ठाढ़ होताड़े सँ)

मनसुख – हई देख हमर पलटन। हई छोटका ह आ हई मुनिआ हिअ ! सत्यानाश ...तनी हऊ कुरसिया खींच के बइठ।... बड़का के नाँव पप्पू ह, स्कूल गइल बा, अब लवटी ।...

गंगाराम – (कुरसी खींच के बइठताड़े) स्कूल सबेर के बा का ?...

मनसुख – हँ, ... करीब छव महीना हो गइल, दू शिफ्ट चलता। अरे मामूली भीड़ बा स्कूलन में ? सत्यानाश !... क गो स्कूल धंगली ओकरा 'ऐडमीशन' खातिर, बाकी एकही जवाब–सीट नइखे ।... ई त भाग सोझ रहे कि कवनो हाल से नाँव लिखा गइल ।....

गंगाराम – बाप रे बाप ? नाँव लिखाए में ई हाल बा त नोकरी के का होई !

मनसुख - सत्यानाश!.....तनी तू बइठ, हम चाय चढ़ा के आवतानी।.....(मनसुख चूल्हा पर पानी धरताड़े। लइका संगे लागत बाड़ेसँऽ)

मनसुख - (डाँटताड़े) आरे, तू लोगिन का परिछाहीं बनल बाड़ जा ? सत्यनाश ! (गंगाराम लगे आके बइठताड़े) आउर सुनाव हो गंगा राम, तोहरा क गो बाल-बच्चा बाड़ेस ? ...

गंगाराम - हमरा त बाबू, एकही बसंती बाड़ी।.....घरवावाली कहत रहे कि एगो लइका हो जाए द तब ऑपरेशन करइह.....बाकी, हम देखलीं कि एकरे परवरिश हो जाव त बहुत बा ।.....

मनसुख - सत्यानाश !.....(लइकन के डाँटताड़े) अरे ना मनब लोगिन ? कहलीं.....नू कि बहरी जा के खेल जा ।.....

गंगाराम - खेले दीं बाबू, लइकन के जाते अइसन होला । अपना हाथे गोड़े हो जइहें स त अपने बुद्धि हो जाई ।

मनसुख - अरे बड़ झमेला बा भाई । तू नीके कइल कि नसबंदी करवा लेल। सत्यानाश !..... .....बाकी गंगा राम ! ऑपरेशन में बहुत तकलीफ होला का ?

गंगाराम - तकलीफ ?..... आरे ऑपरेशन त नाँवे भर के बा, दू मिनट के त खेलवाड़ ह !.. .. हमरा त चूँटी कटला अइसन बुझाइल आ..... बस, खिस्सा खतम.....!

मनसुख - (अचरज से)अच्छा..... (मद्धिम आवाज में) अहो गंगा राम, अब कुछ फरको बुझाता ?

(मनसुख दउरताड़े)

गंगाराम - का हो गइल बाबू ?

मनसुख - (मुनिया के उठवले आवताड़े, ऊ जोर से रोवतीआ) ल देखऽ तमाशा !..... चाय के गरम पानी हाथ पर उझील लेलस !..... सत्यानाश !.... देख ना, सउँसे हाथ जर गइल बा ।

गंगाराम - च... च, ओहो । अरे जल्दी करीं बाबू,.....हाली-हाली अस्पताल ले जाईं।.....

मनसुख - सत्यानाश !.....एक कप चाय तक नसीब ना भइल !....(लइकी के डाँटताड़े) आरे, चुप रह, ...

गंगाराम - कुभाखा मत बोलीं बाबू.....दवा-बीरो कराईं ।..... हमहूँ अब चलतानी.....(उठताड़े) चाय त फेरू कबो पी जाइब।.....

मनसुख · सत्यनाश !...... तनी साहेब से हमार लाचारी समझा के कह दीह ।......देखते बाड़ बिपत ।........

गंगाराम - हँ, हँ, जरूर कह देब ।.......अच्छा बाबू, नमस्कार !......(प्रस्थान)

मनसुख - नमस्कार !....... (लइकी के डाँटताड़े) आरे चुप। नाहीं त पटक देब, अईंठा जइबू।. ..... सत्यानाश ।.......

(परिवर्त्तन)

झलक-3

[स्थान - गंगाराम के घर। बसंती आ ओकर माई दुआरी पर ठाड़ बाड़ी सन । गंगा राम आफिस से लवट ताड़े ।]

बसंती - (थपरी बजा के) बाबू आ गइलन, बाबू आ गइलन ।.......(दउरतीआ).... बाबू !.. ....बाबू !!........

गंगाराम - ओ हो, बंसती बेटा !.......हा......हा......(निहूर के धरताड़े)

बसंती - बाबू, हमार चकलेट ?

गंगाराम - आ, हमार मिठुआ ?

बसंती - ऊँऽ पहिले चकलेट। ....(रूसतीआ)

गंगाराम - अरे हँ, ... पहिले चकलेट। .... ए......ऽ.....हँ.......ई बेटी के चकलेट। (पैकेट धरावताड़े)

बसंती - हूँ...... (लेतीया) अब बाबू के मिठुआ ! .... (गाल सामने करतीआ)

गंगाराम - (चुम्मा लेताड़े) च च! ...... (अंगुरी धके खड़ा हो ताड़े, घर कावर चलताड़े) अच्छा बसंती,आज पढ़ाई का भइल ह? ......

बसंती - बाबू, आज त मजा आ गइल ह। आज चाचा नेहरू के जीवनी पढ़ावल गइल ह। चाचा नेहरू बच्चा सभ के खूब प्यार करत रहले। ....

गंगा० – अरे हई देख, दुआरीए पर हमनीका बतिआवत रह गइलीं जा! ..... चल, भीतरे चलींजा।..... चल बेटा (भीतर गइल लोग। बसंती के माई पकौड़ी ले आवताड़ी)

(परिवर्तन)

झलक- 4

(स्थान-ऑफिस। दू बेर कालबेल के आवाज सुनाता।)

गंगाराम – (चैंबर खोल के) जी साब। .....

आफिसर – गंगाराम, मि० लाल आ गइले?

गंगा – जी ना, साब।.....

आफिसर – आ जास त तुरंते भेजिह।.....

गंगाराम – जी साब।..... (दरवाजा बंद हो जाता। थोड़ा देर का बाद फेरू खुलता)

मनसुख – मे आई कम इन, सर? .....

आफिसर – यस, यस ..... आईं मि० मनसुख लाल ..... बइठीं। .....

मनसुख – थैंक्यू सर। ..... (गते-गते) सत्यानाश .....। ..... (बइठताड़े)

आफिसर – मि० लाल, रउरा घड़ी में केतना बजता?

मनसुख – एगारह बजता सर, सत्यानाश! राउर घड़ी खराब हो गइल का,सर?

आफिसर – जी हँ, एही से एह में सवा एगारह .....

मनसुख – सत्यानाश! सर, भारत टाइम सेन्टर वाला से मत बनवाइब, अउरी खराब क दीही, आ ....

आफिसर – आ आउर का करी?

मनसुख – आ सर, नीक-नीक पूरजा निकालियो लेवेला ..... जी सर!

आफिसर – तब का करेके चाहीं मि० लाल?

मनसुख - सर, हमरा पहचान के एगो घड़ीसाज बा। सत्यानाश! रउआ त सर, देखलहीं होखब?

आफिसर - जी ना हमार अइसन भाग्य कहाँ! .....

मनसुख - सर, हमार त पुराना जानकार ह, बड़ा मानेला। ..... सब्जीबाजार में एगो बिजली का पोल लगे गुमटी लगवले बा- सत्यानाश! .... बाएँ से गिनब त, पोल के नंबर .... एक, दू, तीन .....

आफिसर - ह्वाट नान्सेंस! हम पूछतानी कि आफिस आवे के इहे समय हऽ?

मनसुख - नो सर ..... तनी देरी हों गइल ह। ..... आई एम सॉरी .....

आफिर - नो मैटर, हई 'वारनिंग' लीहीं आ होशियार रहे के कोशिश करीं! आफिस के डिसिप्लिनो कवनो चीज होला! ..... अण्डर स्टैण्ड?

मनसुख - सर लाचारी में हो गइल सर! .... हम बड़ा झंझट में रहीं... सत्यानाश! .....

आफिसर - हमरा सभ मालूम बा। ..... रउआ का खबरो ना दे सकत रहीं? .....

मनसुख - सर, आइ एम रियली बेरी सॉरी -बाकी, सत्यानाश! .....

आफिसर - ह्वाट सत्यानाश! .....

मनसुन - कुछ ना, सर, ... तकियाकलाम। ..... सत्या ..... ('हुप' क के रोकताड़े)

आफिसर - मि० लाल, रउरा जान बूझ के झंझट लगवले बानी।.....

मनसुख - का करीं सर, ... अइसन हो गइल बा कि छुअते .....

आफिर - गलत। ..... अपना गंगाराम के देखीं, केतना सुखी परिवार बा, केतना मजा बा। ....

मनसुख - ऊ त सर, नसबंदी करा लेले बाड़े। ..... ('हुप' कके रोकताड़े)

आफिसर - रउरो करा सकीला। ..... अदमी बढ़िआए से का दिक्कत होता-ई रउरा नइखे बुझात?

मनसुख - बुझात काहे नइखे सर? ..... सत्या ..... (रोकताड़े) .....एही मारे क गो बस मिस कइली हँ। .....

आफिसर - जी हँ, अबहीं त शुरुआत बा, आगे-आगे देखीं-का-का भोगे के परेला! ..... लइकन के पालन, पढ़ाई, नोकरी ..... सब समस्या हो जाई।

मनसुख - बाकी सर, लइका त ईश्वर के देन हवेसँ .....

आफिसर - जी ना, बोझा हवेसँ। ..... आ मि० लाल, बोझा जतने हलुक रही- राहता चले में ओतने आसानी होई।

मनसुख - मगर सर, प्रकृति के विरोध कइल जरूर खराबी करी? ..... सत्या ..... (रोकताड़े)

आफिसर - आरे भाई एहमें विरोध कहाँ बा ? ..... हमनी का त बचाव करतानी..... रउरा घाम आ बरखा से बचे खातिर छाता लगाइला ना?

मनसुख - काहे ना सर, घाम बरखा में आदमी अइसही चली? ..... सत्या ..... (रोकताड़े)

आफिसर - ओहीतरे संतान-बरखा से बचावे बाला छाता ह नसबंदी। ..... जाईं, जेतना जल्दी हो सके, एह छाता के जोगाड़ क लीहीं।.....

मनसुख - थैंक्यू सर,अब हमरा सब बुझा गइल ..... थैंक्यू वेरी मच .....

पटाक्षेप

●

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1 मनसुख लाल के सबसे लमहर दुख का बा?

(क) गरीबी (ख) मेहरारू के बीमारी

(ग) अधिका बाल-बच्चा (घ) कड़ियल अफसर

2. मनसुख के मेहरारू के कउवाँ लड़िका होखे के बा?

(क) चउथा (ख) पाँचवाँ

(ग) तीसरका (घ) सातवाँ

3. गंगाराम के परिवार काहे सुखी बा?

(क) खूब कमाता (ख) कंजूस बा

(ग) घर से मजबूत बा (घ) परिवार छोट बा

4. मनसुख लाल हर बात के बाद एगो शब्द के दोहरावे ले जेकरा के तकियाकलाम कहल जाला ऊ कवन शब्द बा?

(क) जे बा कि (ख) मानल जाय कि

(ग) सत्यानाश (घ) सर्वनाश भ गईल

जवन सही होखे ओकरा पर टिक (✓) लगावऽ

1. पपुआ के माई बेहोश भ गइली

(क) गिरला के कारण ( ) (ख) बीमारी के कारण ( )

(ग) बच्चा होखला से ( ) (घ) नखड़ा कइला से ( )

2. 'छाता' नाटक के प्रमुख पात्र के ह?

(क) गंगा राम (ख) पप्पू

(ग) छोटका (घ) मनसुख लाल

पाठ से

1. एह नाटक में आइल अंग्रेजी वाक्यन के भोजपुरी में लिखऽ ।
2. एह नाटक में तहरा सबसे नीमन पात्र के लागता आ काहे?
3. एह कहानी के सारांश अपना इयार के चिट्ठी लिख के बतावऽ?
4. एह नाटक के मंचन के दौरान कवन-कवन बाधा बा? ओकरा के बदल के एह एकांकी के लिखऽ।

पाठ से आगे

1. भोजपुरी नाटक के इतिहास के बारे में पता करऽ।
2. भोजपुरी नाटकन में हास्य पात्रन के केतना महत्त्वपूर्ण भूमिका रहेला?

भाषा के संगे

1. एह नाटक में आइल विराम चिन्हन (।, !, ?,) के प्रयोग ध्यान से पढ़ के बताव कि एह सब के प्रयोग कहाँ-कहाँ होला?
2. निम्नलिखित वाक्यन में कवन विराम चिन्ह लागी-

   (i) शाबाश तू परीक्षा में टॉप कइल

   (ii) का राम मर गइले

   (iii) सीता खा ताड़ी

   (iv) राम मोहन सोहन आ रमेश मेला गइल रहले

   (v) बेटा ना बेटी

3. तकियाकलाम केकरा के कहल जाला?

परियोजना कार्य

1. एह नाटक के अपना संघतिअन के संगे मंचन करऽ।

शब्द के उच्चारण में परिवर्तन भइला से ओकरा अर्थों में परिवर्तन हो जाला। जइसे तू जइब। तू जइबू ?

ध्वनि, उच्चारण के महत्त्व बताई ।

बॉडी लैंग्वेज

- *आदमी के देह के हाव-भाव बहुत कुछ कह जाला। एकरे के बॉडी लैंग्वेज (आंगिक भाषा) कहल जाला । प्रेम, घृणा, क्रोध,डर जइसन भाव आदमी के बॉडी लैंग्वेज से बुझा जाला।*
- *बॉडी लैंग्वेज में आदमी के कपड़ा लता, केश-विन्यास, चाल उठे-बइठे के तरीका के बड़ा महत्त्व होला। साक्षात्कार, कार्यालय, सार्वजनिक स्थल सहित जीवन के सब स्थलन पर बॉडी लैंग्वेज के महत्त्व बा।*
- *छाता एकांकी में बॉडी लैंग्वेज के प्रमुखता मिलल बा। एकर पात्र मनसुख के बॉडी लैंग्वेज पर ध्यान दीं।*

शब्दार्थ

सेफ्टीरेजर	-	दाढ़ी बनावे वाला यंत्र
चिचिआ के	-	जोर से बोलल
अगोरल	-	एके जगहा रह के इन्तजार कइल
करूआर	-	हल के आगे के भाग
नन्हका	-	छोटका लड़का
वाइफ	-	मेहरारू, पत्नी
डेलीवरी	-	बच्चा के जन्म भईल

शिफ्ट	–	पारी
ऐडमिशन	–	प्रवेश नामांकन
परवरिश	–	पालन-पोषण
नसबन्दी	–	बच्चा ना होखे के ऑपरेशन
उझील	–	उलिट
कुभाखा	–	खराब बोली, अशुभ बोली
मिठुआ	–	बच्चा के चुम्मा लिहल
घर का ओर	–	घर के ओर
चैंबर	–	ऑफिस के कमरा

अध्याय-चार

आदिवासी लोग के जीवन में बहुते पर्व-त्यौहार मनावल जाला। सरहुल ओह लोग के महान पर्व हवे। एह अवसर पर गावल जाये वाला लोकगीत में मानव मन के सहज-सरल अभिव्यक्ति भइल बा।

एकर अनुवाद डा० आसिफ रोहतासवी कइले बानीं।

सरहुल-गीत

जाड़ा बीतला प आइल बाड़ ऽ
राजा-रानी अस सजल बाड़ ऽ
हम ढेर दिन से सोच में परल रहीं
बाकिर चइत के चान आज उगल।

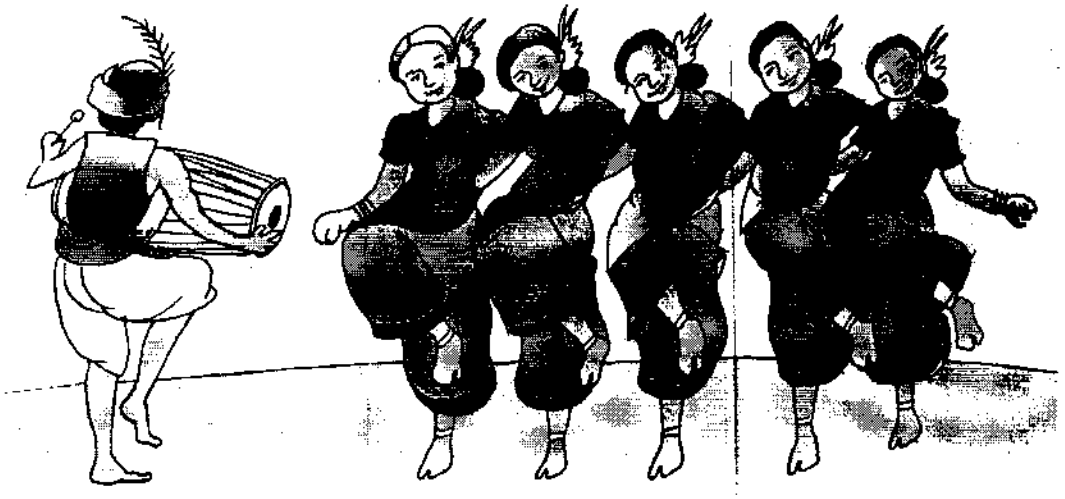

पुरान पीयर पतई झर गइली स

सखुआ नया पल्लो के साड़ी पहीन लेलस

जंगल के गाछन के देखली

कोंढ़ी लागल, फूलत-फरत।

हरियर आ लाल पल्लो चमकत बाड़ें सऽ

तू कवन तेल लगा लेले बाड़ऽ

जंगल के सुघर फूलन के गमक

हमरा छाती में घुम रहल बा

राम गाछ तर निहुर के

आसमान के सिंगबोंगा भगवान के

गोड़ लागत बाड़ें

सोच के खुश हो रहल बाड़ें कि सरहुल मनी

आ सखुआ के फूलन के एगो डाढ़ माँगत बाड़न।

●

अभ्यास

पाठ से

1. चइत के चाँद उगला पर गाछ के पतई में कवन परिवर्तन देखल जाला?
2. गाछ का नीचे निहुर के राम काहे प्रणाम करत बाड़ें?
3. सरहुल कइसन पर्व बा? कहवाँ के लोग ई पर्व मनावेला?
4. एह पाठ में कवना गाछ के फूल के डाढ़ माँगे के चर्चा बा? माँगला के का महत्त्व बा ?
5. राजा-रानी अइसन के आ काहे सजल बा?
6. जंगल के कवन चीज कवि का छाती में घुम रहल बा?
7. गीतकार का सोच के खुश हो रहल बा?

पाठ से आगे

1. सरहुल जइसन कवनो दोसर पर्व के वर्णन करऽ जवन भोजपुरिया क्षेत्र में मनावल जाला।
2. होली आ सरहुल के आयोजन में मिले वाली समानता आ विभिन्नता के पता क के लिखऽ।

	समानता	विभिन्नता
पहनावा	-	
खानपान	-	
भाव	-	
विशेष साधन	-	

3. अपना क्षेत्र में मनावल जाये वाला सबसे प्रचलित त्यौहार के मनावे के तरीका के वर्णन करऽ।
4. सरहुल मनावे के पुरान परंपरा से आज जवन भिन्नता आ गइल बा, केहू से पूछ के लिख ऽ।

भाषा

1. एह लोकगीत में 'कइसन पतई झड़ गइल बाटे?, के उत्तर होखी 'पीयर'। इहवाँ पीयर विशेषण बा। नीचे लिखल वाक्यन में से विशेषण के खोज के लिखऽ ।

'नया पल्लो के सारी पहीन लेलस'

'हरियर आ लाल पल्लो चमकत बाड़ें स'

'जंगल के सुघर फूलन के गमक'

कल्पना से

1. जाड़ा बीतला पर सरहुल आ होली मनावल जाला। जाड़ा के आगमन के समय कवन त्यौहार खूब प्रचलित बा ? ओकर वर्णन करऽ।

2. एह लोकगीत से मिलत-जुलत कवनों लोकगीत भोजपुरी में बा कि ना ? पता कर ऽ ।

परियोजना कार्य

1. आदिवासी परंपरा, लोकगीत, भाषा के बारे में पता करऽ ।

नीचे लिखल प्रश्न से सही विकल्प के चुनाव कर ऽ ।

1. आदिवासी लोग के पर्व ह - -

   (क) होली (ख) दियरी- बात्ती

   (ग) सरहुल (घ) छठ ।

2. सरहुल बेसी कहाँ मनावल जाला - -

   (क) बिहार (ख) बंगाल

   (ग) झारखंड (घ) उड़ीसा ।

3. सरहुल लोकगीत के अनुवादक के हवे -

   (क) सूर्यदेव पाठक 'पराग' (ख) डॉ० आसिफ रोहतासावी

   (ग) बलभद्र (घ) केहू ना।

4. सरहुल कवन महीना में मनावल जाला -

   (1) माघ (2) चइत

   (3) कुवार (4) सब महीना में ।

शब्दार्थ

अस	-	जइसे
कोढ़ी	–	कली
निहुर	–	झुकल
गोड़ लागल	–	प्रणाम कइल

अध्याय-पाँच

एह पाठ के निर्माण पाठ्य पुस्तक निर्माण कार्यशाला में भइल बा।

देश के आजादी खातिर बहुते कुर्बानी देवे के पड़ल। लोग अपना साहस आ बलिदान से देश के आजादी के कथा लिखल। अइसने कथा बा मढ़ौरा गोरा हत्याकांड के, जवना में लोग अपना साहस आ बलिदान से इतिहास के दिशा दिहल।

बहुरिया के ललकार

उन्नइस सौ बेआलिस के अगस्त क्रांति भारत के स्वतंत्रता-संग्राम के एगो निर्णायक लड़ाई रहे। गाँधी जी अंग्रेजन के भारत छोड़े के कह के देश के लोगन के 'करो या मरो' के नारा दिहनीं। उहाँ के नारा सऊँसे देश में लुत्ती खानी फइल गइल। सगरो आंदोलन के आगि धधक उठल। बिहार के सारण जिला में मढ़ौरा एगो औद्योगिक उप-नगरी रहे। एकरा बगले में रहे अमनौर। बहुरिया के लमहर जमींदारी रहे जवन स्टेट कहात रहे। उहाँ के मरद हरिमाधव प्रसाद सिंह नामी स्वतंत्रता सेनानी रहीं। ओह समय कांग्रेस के गतिविधि चलावे खातिर उहाँ का स्वराज आश्रम के स्थापना कइले रहीं। जवना में राजेन्द्र बाबू आ जवाहर लाल नेहरू भी

आइल रहलीं। आजुओ लोग ऊ जगहा के जवाहर बाग कहेला। आंदोलन के लपट इहँवो पहुँच गइल। बहुरिया रामस्वरूपा देवी आंदोलन के बिगुल फूँक दिहली, देखते-देखते आंदोलनकारी जत्था डाकघर आ स्टेशन जरा दिहलस। ई खबर सरकार तक पहुँचत देर ना लागल। ब्रिटिश सरकार के कान खड़ा भ गइल। लगले अंग्रेजी फौज के एगो टुकड़ी मढ़ौरा आ धमकल। आवते-आवते ऊ लगले आतंक फइलावे। निरपराध लोगन के मारे-पीटे। एकरा विरोध में 18 अगस्त के मढ़ौरा के महथा गाछी में एगो लमहर आमसभा भइल। सभा के अध्यक्षता करत रहीं राम कुमार तिवारी। पाँच-सात हजार के भीड़ इकट्ठा रहे। जन-शैलाब उमड़त चल आवत रहे। बहुरिया जी मंच पर खड़ा भइलीं। 'करो या मरो', 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' के गगनभेदी नारा गूँज उठल। एतने में भीड़ के तितर-बितर करे खातिर शक्तिशाली हथियार संगे लेके 'टॉमियन' (अंग्रेजी फौज) के एगो टुकड़ी सभा स्थल का एकदम नियरा आ गइल। आवते उ लोग शांतिपूर्ण भीड़ पर दनादन फायर करे लागल । भीड़ भागे लागल। बहुरिया जी के ई देखल ना गइल। उहाँ के अपना हाथ के चूड़ी उतार के देखावत लोगन के ललकार के कहनीं-''रउआ सभे चूड़ी पहिर के घर में बइठीं..... हम तलवार लेके अकेले लड़ब एह अंग्रेजन से।''

ललकार सुनते गाँव-गँवई के लोगन के जोश जाग गइल। खून खौल उठल। महथा गाछी का बगले में सड़क बनावे ला रोड़ा-पत्थर राखल रहे। ऊ लोग ओकरे से फौज के भगावे लागल। ललकार पर लौटल भीड़ उग्र भ गइल रहे। लोग टॉमियन पर रोड़ा-पत्थर बरसावे लागल। ऊ सभे

भागे लगलन स । ओकनी के मोटरगाड़ी जेने लागल रहे ओनहीं से रोड़ा-पत्थर बरसत रहे। ऊ सभे दूसर ओरि भागल। भादो के महीना रहे। धान आ मकई के खेत में पांक-पानी भरल रहे। ओकनी के बूट ओही में धँसे लागल । लोग के जवने चीज मिलल ओही से लागल मारे। लगही औरत लोग धान कूटत रही। ऊ मूसरे से कूट दिहल। छव जना के लोग काम तमाम क दिहल। एगो ओकनी के साथी टॉमी गाड़ी अगोरत रहे। ऊ अपना जान पर खतरा जान के भीड़ का ओर बंदूक तान दिहलस। बाकिर जब ऊ गोली छोड़ते तबले लेरूआ गाँव के खोदाईबाग स्कूल के छात्र रामजीवन उनका भर पाँजा दबोच लेलस ऊ के टॉमी आपन जान त ना बचा सकले बाकिर अपना बंदूक से रामजीवन का छाती पर गोली दाग दिहलस। रामजीवन उहवें शहीद भ गइलन।

ई हिन्दुस्तान के इतिहास में कवनो मामूली घटना ना रहे। अब उठल समस्या लाशन के लुकावे के। वासुदेव नारायण इलाका के स्वतंत्रता संग्राम के एगो नामी योद्धा रहनीं। उहाँ का सभे से विचार क के नारायणी नदी (गंडक) में लाशन के डुबावे के योजना बनवलीं। लगुनिया के भगत जी आदि का सहयोग से एगो बैलगाड़ी पर कुल्हि लाशन के लादल गइल। मसुरिया के डाँठ से ओकरा के तोपल गइल। राता-राती परशुरामपुर का दियारा में नारायणी के किनारे ले गइल लोग। देह में घइला बान्ह-बान्ह के कुल्हि के बढ़ियाइल नारायणी (गंडक) में डुबा दिहल गइल। एने झमा-झम बरखा बरसल जवना से सगरी खून आदि दहा गइल।

अंग्रेजन के दमन चक्र पूरा इलाका पर अइसन चलल कि लोग घर-दुआर छोड़ के भाग गइल रहे। सरकार देखते गोली मार देवे के आदेश जारी कइले रहे। अमनौर के आश्रम जरा दिहल गइल, बहुरिया जी के घरो तूड़ दिहले। जयमंगल महतो अपना घर से झाँक के देखत रहलें उनकरो गोली मार दिहले। ई घटना के चर्चा प्रिवी काउन्सिल तक पहुँच गइल। बहुरिया जी के गिरफ्तार करे पुलिस आइल। गाँव-जवार के सभे पुलिस के घेर लिहल। लोग जाही ना देव। स्थिति बिगड़ो ना ई सोच के बहुरिया जी लोग से हट जाय के निहोरा कइलीं। जे लोग अपना आँख से ई घटना के देखले रहे ओकरा से वर्णन सुन के रोंआँ खड़ा हो जाला। आजुओ बहुरिया रामस्वरूपा देवी के लोग बिहार के लक्ष्मीबाई कहेला।

●

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. अंग्रेजी फौज के टुकड़ी आवते-आवते का फइलावे लागल ?

   (क) अफवाह (ख) आतंक

   (ग) सरकारी प्रचार (घ) धुआँ

2. मढ़ौरा के महथा गाछी में 18 अगस्त के का होत रहे ?

   (क) लड़ाई (ख) नाच-गाना

   (ग) सभा (घ) डकैती

3. मढ़ौरामें 1942 में कय गो फैक्टरी रहे ?

   (क) पाँच (ख) तीन

   (ग) दो (घ) चार

सही जवाब पर चिन्ह (✓) लगावऽ :

1. मढ़ौरा में जवन छात्र 42 के क्रांति में शहीद भइल रहे ओकर नाम रहे–

   (क) राम कुमार तिवारी (ख) भगत जी

   (ग) रामजीवन (घ) वासुदेव

2. मढ़ौरा में टॉमी लोगन पर मेहरारू लोगनी कवन चीज से प्रहार कइली–

   (क) बेलन (ख) डंडा

   (ग) मूसर (घ) लबदा

3. बहुरिया जी के ललकार के भीड़ पर का प्रभाव पड़ल ?

   (क) भीड़ तितर-बितर भ गइल (ख) भीड़ चुपचाप बइठल रहे

   (ग) भीड़ आक्रमक हो गइल (घ) भीड़ भयभीत हो गइल

पाठ से

1. गाँधी जी 'करो या मरो' के नारा दिहलें। मढ़ौरा में आंदोलनकारी लोग एकरा प्रभाव में का-का कइलस ?

2. महथा गाछी में 18 अगस्त के सभा कवना बात खातिर होत रहे ?

3. महथा गाछी में टॉमी आके का करे लगले आ ओकर लोग पर का प्रतिक्रिया भइल ?

4. बहुरिया जी जब भीड़ के ललकरलीं त भीड़ का कइलस ?

5. मारल गइल अंगरेजी फौज के टॉमियन के लाश के लोग उठा के कहवाँ ले गइल ? कइसे ले गइल? ओह लाशन के का कइलस ?

6. बहुरिया जी के लोग काहे इयाद करेला आ का कहेला ?

पाठ से आगे

1. बहुरिया जी जइसन कवनो आउर क्रांतिकारी महिला का बारे में पता क के लिखऽ ।

2. महथा गाछी के घटना आ जालियाँवाला बाग के घटना में का-का समानता बा ?

3. स्वतंत्रता संग्राम के ई पाठ पढ़ के मन में जवन भाव जागेला ओकरा के प्रकट करऽ ।

4. लक्ष्मीबाई के रहे ? उनका बारे में जे जानकारी होखे लिखऽ ।

अनुमान आ कल्पना

1. भीड़ जब बहुरिया जी के ललकरला से आक्रामक हो के लौट आइल। टॉमियन पर पथराव करे लागल। घबराहट में टॉमी लोग खेत का ओर भागल। कादो-कीच में फँस के जान गँवा दिहल। घबराहट में आउरी का हो सकेला ?

2. शहीद रामजीवन जोश में आके राइफलधारी टॉमी के जान पर खेल के पकड़ लिहले। जोश में आउर का-का कइल जा सकेला ? कवनो एगो काम के वर्णन करऽ।

3. मढ़ौरा में ब्रिटिश राज में ओकरा सैनिकन के लोग मार दिहल। क्रोध में ऊ का-का कइले होखी? अपना मन से कल्पना के आधार पर लिखऽ।

4. अपना कल्पना के आधार पर रामजीवन जइसन कवनो बलिदानी के चित्रण कर।

शब्दार्थ

सऊँसे	-	पूरा
लुत्ती	-	चिनगारी
अगोरल	-	रखवाली कइल
झाँक के देखल	-	जंगला भा परदा के ओट में से तनी सा देखल
कुल्हि	-	सब

अध्याय-छव

घाघ-भड्डरी

घाघ- भड्डरी के खेती आ मौसम संबंधी कहाउत लोग के मुँहजबानी याद बा। ई अनुभव से उपजल बा। घाघ भड्डरी ससुर-पतोह रहे लोग। ई लोग एक दोसरा के उल्टहूँ कहाउत कहले बा। घाघ के जन्म 1696 ई में सारण जिला में भइल रहे।

घाघ के कहाउत खेती-बारी के तरीका आ मौसम-परिवर्तन के बारे में बतावता। एह से भोजपुरी भाषा के मारक क्षमतो के पता चलता।

बरखा

अगहन दूना पूस सवाई।
फागुन बरसे घर से जाई॥

एक बूँद जो चइत में पड़े।
सहस बूँद सावन में हरै॥

करिया बादर जीउ डेरवावै।
भूरा बादर खुब बरसावै॥

सावन भादो खेत निरावे,
ऊ गृहस्थ बहुत पावे।

आदि न बरसे अदरा, हस्त न बरसे निदान।
कहै घाघ सुनु घाघिनी, भये किसान-पिसान।।

पूरब के बादल पश्चिम जाय, वासे वृष्टि अधिक बरसाय।
जो पश्चिम से पूरब जाय, वर्षा बहुत न्यून हो जाय।।

उतरे जेठ जो बोलै दादूर।
कहै भड्डरी बरसै बादर।।

रात निबद्दर दिन को घटा।
घाघ कहै ये बरखा हटा।।

अकाल

जै दिन जेठ बहे पुरवाई।
तै दिन सावन धूर उड़ाई।।

बोवाई

चित्रा गहूँ अदरा धान।
न उनके गेरूई न इनके घाम

किसान

बाँध कुदारी खुरपी हाथ। लाठी हँसुवा राखै साथ।
काटै घास औ खेत निरावै। सो पूरा किसान कहलावै।।

खादर

जेकर खेत पड़ा नही गोबर।
वाहि किसान को जानो दूबर।।

निराई-गुड़ाई

तीन पानी तेरह कोड़।
तब देख ऊखी कै पोर।।

सावन भादो खेत निरावै।
तब गृहस्थ बहुतै सुख पावै।।

मड़ाई

दो दिन पछुआ छव पुरवाई। गहूँ जव को लेव दँवाई।
ताको बाद ओसावै सोई। भूसा दाना अलगे होई।।

पटवन

धान,पान औ खीरा।
तीनो पानी के कीरा।।

अभ्यास

पाठ से

1. तहरा कवन मौसम पसन पड़ेला? आ काहे ?
2. बेंग कब बोलेला ? बेंग के बोलला से कवना मौसम के आभास होला ?
3. कवन किसान बहुत सुख पावेला? आ कइसे ?
4. कवन-कवन फसल के पहचान का-का होला ?

शब्दन के बात

1. एक समान ध्वनि वाला शब्द लिखऽ ।

   जइसे सोई-होई
2. नीचा लिखल शब्दन के एक से जादा अर्थ लिखऽ ।

दादूर	-	घटा	-
निदान	-	बादर	-
दूबर	-	निराई	-

अन्वय करऽ

उतरे जेठ जो बोले दादूर
कहै भड्डरी बरसै बादर
जइसे-जो बोलै दादुर उतरे जेठ
बादर बरसै भड्डरी कहै

परियोजना

1. पता करऽ आजो घाघ भड्डरी के कहाउत साँच बा ?
2. गाँव में सुनल कवनो कहाउत लिखऽ ।
3. घाघ के बारे में आस-पड़ोस से जानकारी प्राप्त करऽ ।

कहाउत (लोकोक्ति)

1. *कहाउत के पीछे कवनो कथा भा घटना होला। ओह से निकलल बात लोगन के जबान पर चल निकलेला तब ऊ कहाउत (लोकोक्ति) कहल जाला ।*
2. *कहाउत अपना आप में स्वतंत्र होला । ई दूसर वाक्य के अंश के रूप में ना आवेला ।*

भोजपुरी महीना

1. चइत
2. बइसाख
3. जेठ
4. अषाढ़
5. सावन
6. भादो
7. कुवार
8. कातिक
9. अगहन
10. पूस
11. माघ
12. फागुन

शब्दार्थ

सहस	-	हजार के संख्या
निरावै	-	सोहनी, खर पतवार निकालल
भूरा	-	भूअर
न्यून	-	कम
दादूर	-	बेंग, मेढ़क
निबद्दर	-	साफ भइल
दूबर	-	कमजोर

अध्याय-सात

महाश्वेता देवी

बंगला के महान लेखिका महाश्वेता देवी अपना सामाजिक सरोकार खातिर सभऽतर जानल जाइले। इहाँ के जनम 1929 में ढाका में भइल रहे । इहाँ के लेखन में सतावल लोग के दु:ख - दर्द अभिव्यक्त भइल बा। इहाँ के प्रसिद्ध किताब बाड़ी सन - **मास्टर साब, झाँसी की रानी, 1084 वें की माँ, जंगल के दावेदार** ।

डाइन जइसन अंधविश्वास का करते बहुते लोग के जिनगी तबाह हो जाला। एह कहानी में अइसने परिवार के कथा उरेहाइल बा ।

डाइन

लोग कहेला कि भगीरथ के माई चंडी डाइन हई । ओह घड़ी भगीरथ एकदम लड़िका रहले। चंडी के लोग गाँव से निकाल दिहल । ऊ रेल-लाइन के ओह पार एगो मड़ई में कइसहूँ दिन काटे लगली । भगीरथ अपना मयभाउत माई के देख-रेख में पोसात रहन । उनका ई ना मालूम रहे कि चंडी उनकर माई हई । एक दिन ऊ अपना बाबूजी के चंडी डाइन से बतियावत देखलन। उनका बड़ा डर लागल । ऊ पूछले -

''बाबूजी । तू डाइन से बतियावत रहऽ ।''

उनका बाबूजी के नाँव मलिन्दर रहे । अब उनका से ना रहाइल । ऊ असलियत बता दिहले

''सुन बबुआ! ऊ मेहरारू आज डाइन जरूर बाड़ी बाकिर ऊ तोहार माई हई ।''

माई! ई सुन के भगीरथ के काठ मार देलस । पहिले त उनका विश्वास ना भइल । ऊ मने मन अचरज में पड़ गइलन । ऊ डाइन के बेटा हउवन, एकरा बादो केहू उनकर बेइज्जती भा अवहेलना ना करेला । एकरा पीछे ई कारण रहे कि लोग बुझो जे डाइन के लड़िका के दूरदुरावेला उनका घर के लड़िकन के डाइन खा जाले । एही डरे उनकर मयभाउतो माई गंजन ना करत रही ।

ओकर बाबूजी एगो छतनार गाछ के नीचे बइठ के कुल पुरान बात बतावे लगले -

" तू डेरा जन । ऊ तोहार माई हई । उनकर दुःख ना जनबऽ ? "

पहिले पाँच साल से कम उमिर के लड़िकन के मरला पर गाड़ल जात रहे । चंडी के बाबूजी के काम अइसने लड़िकन के गाड़े के रहे । कुदारी से गड़हा खोनस, मुवल लड़िका के रखला के बाद माटी डाल के ओह पर कँटीला झोंप - झाप से तोप देस । एकरा बाद ऊ सियारन के खेदत रहस। हरेक शनीचर के हाथ में डाला थमले ऊ गाँव भर के चक्कर लगा के कहस -

" हम रउवा सबके सेवक .... चाकर हईं । गाँववाला लोग, हम हई गंगापूत । हमार डाला दीं, सभे ..... ।"

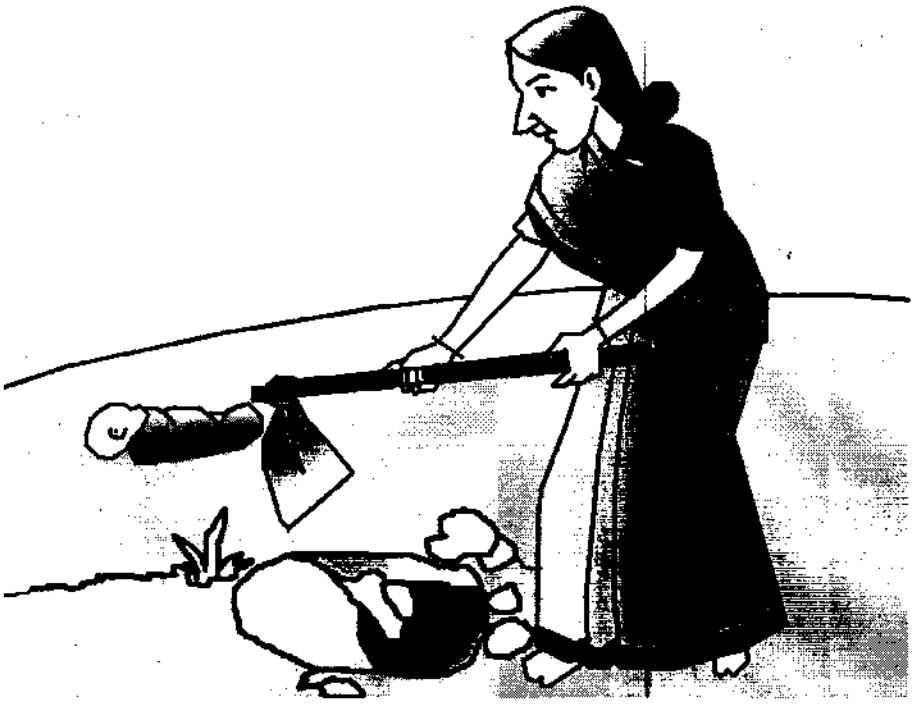

उनका से सभे डेरात रहे । उनका नजर से लोग छोट लड़िकन के बचा के रखे । अपना जबान से एको लफ्ज निकलले बिना लोग उनका डाला में भीख डाल देव आ उल्टा पाँव लवट जाव ।

एक दिन ओकरा जगे, कँटीली आँखियन आ ललछौही केशवाली एगो लड़की आके खड़ा हो गइल –

''हम चंडी हई । फलनवा गंगापूत के बेटी ! हमार बाबूजी मर गइले । बाबूजी के डाला, अब हमरा के दिहल जाव .....''

''अपना बाप के धंधा ते चलइबे ?''

''हँ हम चलाएब ।''

''डर ना लागे ।''

''तनिको ना ।''

डर भय के बात चंडी के साँचो समझ में ना आवत रहे । बेटा-बेटी मरेला, त ओकर बाप-मतारी रोवेले । ओह बिलाप के मतलबो ऊ बूझत रहे । बाकिर लाश के भला केहू अपना घर में सँजो के रखेला भा राख सकता । ओकर संस्कार कइल त चंडी के काम रहे, माने ओकर जीविका रहे । एह में डर भा निठुराई के भला का बात बा ? अगर अइसन कवनो बात होखे त ओकरा के त विधाता के नियम नू कहल जाई ! फेर लोग ई काम करेवाला से काहे घिनाला ।

मलिन्दर एही चंडी से बियाह कइले । साले भर में चंडी माई बन गइली ।

..... अइसही एक दिन, गोदी में भगीरथ के लिहले-दिहले चंडी रोवत-रोवत वापस अइली ।

''हमरा के ऊ लोग ढेला मरलख ह गंगापूत ? कहता लोग कि हमार नजर खराब बा ।''

मलिन्दर चंडी के बात सुन के भयंकर खीस में काँपत करीब-करीब तांडव - नृत्य पर उतर अइलन ।

''हमरा मेहर के ढेला मारे, कवना के हिम्मत ? कवना के शामत आइल बा ?''

''ई ल ! अब तू ओकरा के मारे जइब ?''

''ढेला काहे मरलस?''

चंडी ओहिजा बइठल-बइठल बहुत देर ले ओकरा के अपलक निहारत रही ।

''हमरो मन ना करेला गंगापूत कि हाथ में कुदारी थामीं । ई काम हम अपना खुशी से ना करीले । बाकिर हमहूँ का करीं । विधाता इहे चाहता, कि ई काम हमरा से करावे । एह में हमार कवन कसूर बा ? बोल ऽ ऽ ऽ .....''

अपना लड़िका भइला के बाद चंडी के मन मुवल लड़िका के गाड़े-तोपे के ना करे। उनका हृदय में माया-मोह उपज चुकल रहे । कुदारी से गड़हा खोनला के बाद, ऊ आपन मुँह दोसरा ओर फेर लेस । गड़हा के काँट-कुश आ झाड़ी से तोपियो देला के बाद उनका डर बनल रहत रहे । उनका हरमेसा ई अंदेसा लागल रहत रहे कि कवनो बेरा कवनो सियार माटी कोड़ल शुरू कर दी। ऊ ई काम छोड़े के चाहस बाकिर उनका बुझाव कि अइसे कइला से भगवान नराज होईहें ।

एही घरी एगो हादसा हो गइल ।

मलिन्दर के कवनो दूर के रिश्तेदारी में के बहिन हवा-पानी बदले खातिर ओकरा गाँवे अइली। एकाधे दिन में ओकर बेटी चंडी के दुलरूआ बन गइल । ओही साल गाँव में मइया (चेचक) के भयंकर प्रकोप भइल । मेहरारू लोग चेचक के टीका लेवे के बदले शीतला स्थान जाये लागल । चंडियो ननद के बेटी के लेके शीतला माई के पूजा गइली । रेल लाइन के अरिया शीतला माई के स्थान रहे । बाकिर हरानी के बात भइल । कुछ ही दिन में ओह लड़की के मइया निकललीं आ ओकरा के लूट ले गइली । अब ओह लड़की के माई, बुआ, काका सब इहे कहत फिरस कि चंडी इनका बेटी के जान ले लेली ।

जब चंडी ई सुनलस त नागिन खानी फुफकार उठल -

''कबो ना ! हमरा हाथे केहू के नुकसान नइखे हो सकत ।''

बाकिर लोग चुप ना रहल । ऊ लोग चंडी पर तरह-तरह के अछरंग लगावे । ऊ लोग

हरदम उनका पर नजर राखे । चंडी अगुता के कहली कि "अब ई काम हम ना करब । "

मलिन्दर बात ओरवावे खातिर बहुत हँसी-मजाक कइले । बाकिर बात बढ़ते गइल । लोग चंडी पर डाइन होखे के आरोप लगावे । चंडी कह त देली कि अब हम ई काम ना करेम बाकिर अपना हाथे माटी दिहल लड़िकन के इयाद हरदम उनका आवे ।

कबो कबो चंडी खुदे बतावस "नीमन कइनी कि बेजाँय ... ई के बताई गंगापूत ? बाकिर हमार मन का कहता पता बा ? जब रात होला नूँ हमार बपसी जइसे हमरा के हाँक लगावेले ।"

एक दिन के बात ह । रात में चंडी के बुझाइल कि मुरघटिया में सियार आके उनकर माटी दिहल लाशन के कोड़ रहल बाड़े । उनका से ना रहल गइल । ऊ मलिन्दर से बेबतवले चल गइली । सियारन के खेद के ऊ गड़हा पर माटी देवे लगली ।

तले गाँव के लोग मलिन्दर के लेके उनका के घेर लिहल । चारो ओर लुकारी जरत रहे । सभे चंडी पर लड़िकन के खाये के आरोप लगावत रहे । चंडी केतनो सफाई दिहली कि ऊ मोह में आके लड़िकन के लाश तोपे अइल बाड़ी बाकिर केहू ना मानल । सभे उनका के डाइन कहे लागल आ अंत में लोग डाइन बनाइये के छोड़ल ।

भगीरथ के मन में अपना माई से भेंट करे के साध जागल । ऊ एक दिन अपना माई के लगे चल गइलन आ कहलन–

"तहरा लगे दोसर साड़ी नइखे का ? तू नीमन साड़ी पहिनबू । हम स्कूल में पढ़िले । हम नीमन लड़िका हईं ।".....

"तू काहे रोवेलू ? ..... हम सुनले बानी । ....."

चंडी कहली –

" गंगापूत के बेटा घरे लवट जा आ फेर कबो एह किओर मत अइह । हम डाइन हईं । डाइन के लगे कबो-कवनो दिने ना आवे के ..... हम गंगापूत के बता देब ।"

भगीरथ देखलस, माई मेड़ी पर नपल-तुलल गोड़ से चलल जात रही । रूखल-सूखल झोंटा के गुच्छा हवा में उड़ियात रहे ।

अपना पलानी में आके चंडी सोंचे लगली । अरसा भइल ऊ इंसान खानी सोचे-विचारे के ताकत खो चुकल रहली । अचानके उनका मलिन्दर के नासमंझी पर बड़ खीस बरल । भगीरथ के ठीक से सम्हारे के चाहीं । हमरा लगे ई कइसे आ गइल ? ऊ रातिये खाँ मलिन्दर से शिकायत करे चलली ।

ऊ उठ के लालटेन जरवली आ हनहनात आवत रेल लाइन के कगरी-कगरी आगा बढ़े लगली। मलिन्दर ओही राहे लौटेले । रेलवे लाइन के कगरी-कगरी चलत, कुछ लोग पर उनकर नजर पड़ल । ऊ लोग रेलवे लाइन से कुछ हटावत रहे । ना! ना! ऊ लोग बाँस के गट्ठर ले आ के लाइन पर ढेर लगावत रहे । आज रेल आवे वाला रहे । ऊ लोग बाँस गाड़ के रेल रोके वाला रहे ।

'' तू लोग बाँस गाड़ऽ तार ? हमरा के देख के डेरा के भागऽ ताड़ । चल पहिले बाँस हटाव .....''

ई उहे लोग रहे जे एक दिन ढोल पीट के उनका खिलाफ शोहरत देवे के बहाने, फैसला सुना के उनका के डाइन बना दिहले रहे ।

हवा में बरखा के थपेड़ा ! चंडी लालटेन उठा लेली । उफ ! कवना कदर निरूपाय ! केतना असहाय रही चंडी ! अगर ऊ साँचहू के डाइन हई, त उनकर पालतू दूत, अन्हार के दानव, तुरंते प्रकट होके ट्रेन के रोक काहे नइखन देत ? हँ, समाज के लोगन में ई दुस्साहस जरूर बा। बस, इहे त कर सकता समाज ! केतना लाचार बाड़ी चंडी । चंडी हाथ में लालटेन, बेतहाशा . .... तेज-तेज आउर तेज दउर पड़ली ।

ऊ बाँह उठा-उठा के ट्रेन के आगे आवे से मने करत रही, ओकरा के रोके के कोशिश करत रही-मत आवऽ । आगा मत आवऽ । रूक जा । इहाँ पहाड़ जइसन ऊँच-ऊँच बाँस गड़ाइल बा।

ट्रेन कवनो खुराफाती लड़िका खानी हरेक बाधा-बिघिन के अनसुना करत चंडी पर एकबारगी टूट पड़ल ..... ।

आपन जान देके ट्रेन के दुर्घटना से बचावे खातिर चंडी के नाँव के शोहरत दूर-दूर ले पहुँच गइल, इहाँ तकले कि सरकारी मुहाल तकले ।

लाशघर से चंडी के लेके जब ऊ लोग चलल त दरोगा बाबू मलिन्दर के गाँव तशरीफ ले अइले । उनका संगे बी० डी० ओ० साहेबो रहनी ।

" रेल कंपनी चंडी गंगादासी के मेडल दी मलिन्दर ! बाकिर हम त तहरा लोगिन के रामकथा जानतानी, एही से हम बता दिहनी कि उनकर केहू नइखे । बाकिर आमना-सामना करावल जरूरी रहे, एही से साहेब आइल बानी ।"

"साहस के काम रहे । ऊ बड़ा हिम्मत के काम कइली । सभे उनका के धन्य - धन्य कह रहल बा । तहार कुछ लागत रहली ? " दरोगा बाबू पूछले ।

सब केहू चूप ! बिरादरी के लोग एक दूसरा के ओर अर्थ भरल निगाह से देखल । ओह में से एक जना गर खजुआवत मूड़ी गड़ले - गड़ले जबाब दिहले -

"जी हजूर, हमनी के रिश्तेदार रहली । "

भगीरथ अवाक । भयंकर अचरज भरल निगाह से भीड़ के चेहरा के ओर देखत रहले ..... ।

''भई, तहरा लोगिन के हाथ में त उनकर मेडल सौपला से रहल सरकार ! ''

''जी, हमरा के दीं । ''

– भगीरथ आगा बढ़ अइलन ।

''तू के हव ? ''

''ऊ .... हमार माई रहली । ''

''अच्छा ! तहार का नाँव ह ? का करेल ? ''

- बी० डी० ओ० साहेब लिखे लगनी ।

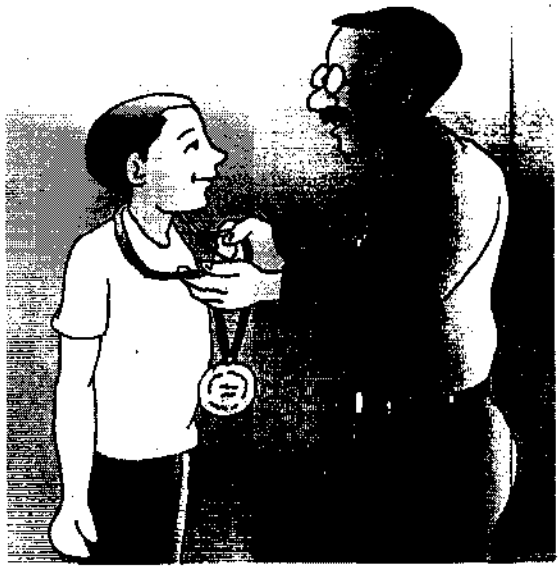

भगीरथ के आँखियन से लोर के धार बह चलल । ऊ गर खँखार के जबाब दिहलन -

'' हुजूर हमार नाँव ह - भगीरथ गंगापूत !''

पिता - पूज्य मलिन्दर के लड़िका

माँ ..... स्वर्गीय चंडी गंगादासी

भगीरथ आपन वंश परिचय देवे लगलन .....

●

अभ्यास

पाठ से

1. चंडी जान दे के का कइली ?
2. "ऊ ... हमार माई रहली । " भगीरथ के ई कहला पर का भइल ?
3. चेचक निकलला पर मेहरारू लोग का कइल ?
4. चंडी कब माई बनली ?
5. चंडी के मन में कब माया - मोह उपजे लागल ?
6. चंडी बियाह के पहिले देखे में कइसन रहली ?
7. महाश्वेता देवी के परिचय लिखऽ ।

पाठ से बाहर

1. भोजपुरी के कवनो कहानी के अंग्रेजी भा दोसरा कवनों भाषा में अनुवाद करऽ ।
2. अनुवाद कला के बारे में बतावऽ ।
3. तहरा घरे भा पास - पड़ोस में मइया (चेचक) निकलला पर का कइल जाला ?
4. चंडी के खानदानी पेशा का रहे ?

कल्पना आ अनुमान

1. का तहरा नजर में केहू के डाइन कह के सतावल जाता ?
2. का मुरघटिया में काम करे वाला से घिनाए के चाही ? का ऊ लोग गलत काम करेला ?
3. डाइन प्रथा के खिलाफ भाषण दऽ ।

अनुवाद-कला

पहिले से कवनो भाषा में लिखल भा कहल गइल बात के बाद में कवनो दोसरा भाषा में लिखला भा कहला के अनुवाद कहल जाला । पहिला भाषा के अर्थ बाद के भाषा में बनवले रखल जाला ।

भाषा

1. कवना बात के दोसरा-दोसरा भाषा में कहल-सुनल आनंददायी होला ।

   जइसे 'ऊ एगो मड़ई में कइसहूँ दिन काटे लगली' के अंग्रेजी

   अनुवाद होई ' She any way begins to lead her life in a small hut '

   अइसही आगा दिहल वाक्यन के अंग्रेजी भा दोसरा कवनों भाषा में अनुवाद करऽ -

   (i) ऊ तोहार माई हई ।

   (ii) ओकर बाबूजी एगो घन गाछ के नीचे बइठल रहले ।

   (iii) हम रउवा सब के सेवक हईं ।

   (iv) ते अपना बाप के धंधा चलइबे ?

2. नीचे लिखल शब्दन के अनुवाद अंग्रेजी भा दोसरा कवनो भाषा में करऽ -

   (i) असलियत (ii) कुदारी (iii) गड़हा

   (iv) कँटीला (v) धंधा

3. नीचे दिहल हिंदी शब्दन के भोजपुरी में का कहल जाला -

   (i) सौतेला

   (ii) क्रोध

   (iii) पिता

   (iv) माँ

   (v) चाचा

शब्दार्थ

मड़ई	-	पलानी
नाँव	-	नाम
मुरघटिया	-	श्मशान
दुलरूआ	-	प्यारा

अध्याय-आठ

संत कबीर दास

संत कबीर दास एगो महान समाज सुधारक संत कवि रहीं। इहाँ के जनम विक्रम संवत 1455 आ मउवत विक्रम संवत 1575 में मानल जाला। इहाँ के समाज में फइलल कुरीतियन पर चोट कइनी।

संत कबीर के कहनाम बा कि मउवत जिनगी के सबसे बड़ साँच ह । एकरा के पूरा साहस का संगे स्वीकारे के चाहीं।

पद

कवन ठगवा नगरिया लूटल हो ।।
चंदन काठ के बनल खटोला, तापर दुलहिन सूतल हो ।
उठ री सखी मोर माँग सवार, दुलहा मोसे रूसल हो
आये जमराज पलंग चढ़ि बइठे, नैनन आँसू छूटल हो ।
चारि जने मिलि खाट उठवले, चहुँ दिसि धू-धू उठल हो
कहत कबीर सुनो भाई साधो, जग से नाता टूटल हो ।।

अभ्यास

पाठ से

1. चंदन काठ के बनल खटोला कवना चीज के कहल गइल बा ?
2. सूतल दुलहिन कवना अर्थ में आइल बा ?
3. संत कबीर कवना तरे के कवि रहीं ?
4. एह पद के का भाव बा ?
5. 'कहत कबीर सुनो भाई साधो में साधो' केकरा के कहल गइल बा ?

पाठ से आगे

1. कबीर के ई पद तहरा गाँव-जवार में कब गावल जाला ?
2. निरगुन कवना तरे के पद के कहल जाला ?
3. लोग का बीच कबीरा कइसन पद के कहल जाला ?
4. कबीर के एह पद से मिलत-जुलत कवनो दोसर संत कवि के दोसर पद पढ़ऽ ।
5. तहार प्रिय कवि के ह ?

कल्पना आ अनुमान

1. तहरा अगर संत कबीर से भेंट होइत त, तू का पूछतऽ ?
2. का तहरा घरे कबीर के कवनो पद भा दोहा गावल जाला ?
3. ई पद पढ़ला के बाद मन में कवना तरे के भाव उपजता ?

भाषा के संगे

1. 'तापर दुलहिन सूतल हो' में सुतल क्रिया हवे। अइसन आउर क्रिया लिखऽ ।
2. आगे लिखल शब्दन के हिंदी में केंगन लिखल जाला-

   जमराज -

   कवन -

   तापर -

   मोर -

   चहुँ दिसि -

शब्दार्थ

			एक पाठ में प्रतीक
ठगवा	–	ठग	मउवत
खटोला	–	खाट, खटिया	पचाठी
दुलहिन	–	नया बियाहल मेहरारू	मुरदा
दुल्हा	–	नया वियाह करे वाला मरद	ईश्वर
चंदन काठ	–	चंदन के लकड़ी	बाँस

अध्याय-नौ

संत टेकमन राम

संत टेकमन राम के जनम चंपारण जिला के धनौती नदी के तट पर बसल गाँव झखरा में भइल रहे । इहाँ के संत बाबा भीखम राम जी से ज्ञान मिलल । टेकमन राम जी आगे चल के सिद्ध संत भइनी । टेकमन राम जी बसंत पंचमी के दिने समाधि लेले रहनी ।

कवि के मत बा कि भगवान भक्त भा संत से कवनो विशेष अंतर ना राखिले । एह कविता में कवि अपना तर्क के पुष्टि नारद जी आ भगवान के बीच बतकही से करवले बानी ।

पद

संत से अंतर ना हो नारद जी संत से अंतर ना ।।

भजन करे से बेटा हमार, ग्यान पढ़े से नाती ।

रहनी रहे से गुरू हमार हम रहनी के साथी ।।

संत जेवे के त वटीं में जेइलें, संत सोए हम जागी ।

जिन मोर संत के निन्दा कइले, ताही काल होईं लागी ।।

किरतनिया से बीस रहीले नेहुआ से हम तीस ।

भजनानन्द का हिरदा में रहिले, संत के घर शीश ।।

संतन मोरा अदल सरीरा हम संतन के जीव ।

सब संतन में हम रमि रहिले जइसे मखन में घीव ।।

सिरी टेकमन महाराज भीखम स्वामी जइसे मखन घीव ।।

●

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. संत टेकमनराम के गुरू के नाम का रहे?

   (क) कबीर दास (ख) संत धरम दास

   (ग) बाबा भीखम राम (घ) संत दरिया दास

2. संत टेकमन राम कवना संप्रदाय के कवि रहीं ?
3. संत टेकमन राम कवना जिला के रहीं ?
4. संत टेकमन राम के ज्ञान कहाँ मिलल रहे ?
5. पाठ में ज्ञान के नाती बतावल गइल बा कइसे ?

पाठ से

1. संत केकरा के कहल जाला ?
2. भजन आ ज्ञान खातिर भगवान के हृदया में कवन स्थान बा ?
3. रहनी के साथे भगवान के नाता बतावऽ ।

4. संत के निन्दा करेवाला आदमी से भगवान कइसन व्यवहार करिले ?

5. जवन संबंध मक्खन के घीव से बा, ऊहे संबंध आत्मा आ परमात्मा के बीच बा । स्पष्ट करऽ ।

कविता से आगे

1. भक्ति भा साधना के कवन ढंग जीवन में उतारल जादे नीक बा ?

2. ईश्वर प्राप्ति के सहज उपाय का हो सकेला ? बताव ।

भाषा के बात

1. नीचे लिखल शब्दन के पर्यायवाची शब्द लिखऽ –

रहनी,	शीश,	हिरदा
नेह,	सरीर,	संत

कुछ करे खातिर

'सब संतन में हम रमि रहिले' के माने भइल कि नीमन करम करेवाला हर आदमी के अंतस में भगवान बिराजीले । एह उक्ति से संबंधित कवनो अउर कवि के कविता खोजऽ आ लिख ।

शब्दार्थ

रहनी	-	नीमन सुभाव वाला, चरित्रवान
जेवे	-	खाइल
निन्दा	-	शिकाइत
हिरदा	-	हिरदय, हृदय
सरीरा	-	शरीर

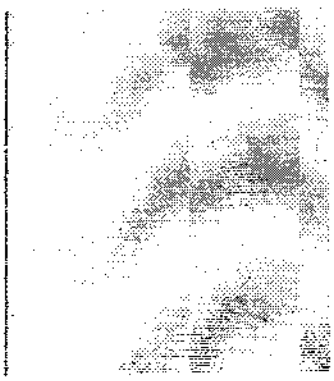

अध्याय-दस

एह पाठ के रचना पाठ्य-पुस्तक निर्माण कार्यशाला में भइल बा ।

बिस्मिल्लाह खाँ भेजपुरी क्षेत्र के गौरव बानी। उहाँ के डुमराँव के माटी से उठ के पूरा दुनिया में छा गइनी।

शहनाई के सरताज

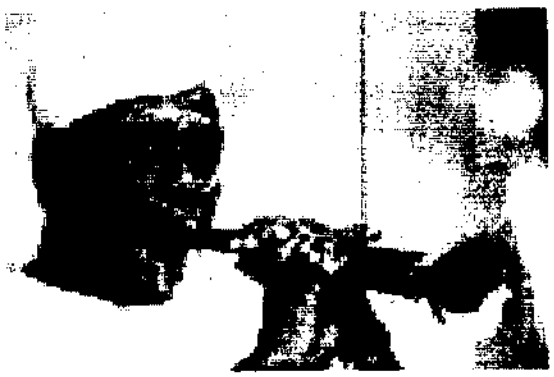

बिस्मिल्लाह खाँ के नाँव शहनाई वादन में अमर बा। संगीत साधना के बल पर ऊहाँ का प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँचनी। संगीत के क्षेत्र में असाधारण योगदान खातिर भारत सरकार उहाँ के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित कइलस।

बिस्मिल्ला खाँ के जनम 21 मार्च 1916 ई० के बक्सर जिला के डुमराँव में भइल रहे। माई के नाँव मीतान आ बाबू जी के नाँव पैगम्बर बक्स खाँ रहे। इहाँ के खानदाने गीत-संगीत परंपरा के वाहक रहे। इहाँ के मातृभाषा भोजपुरी रहे आ अक्सर बिहारी जी के मंदिर में भोजपुरी चइता गाईं । उहाँ के शहनाई वादन के तालीम एही मंदिर से शुरू भइल। गुरू दादा रसूल बक्स खाँ रहनीं। उहाँ के सिखवनी कि कइसे काबू से शहनाई फूँकाई आ देर तकले स्वर बनल रही। शहनाई भारत के एगो पुरान वाद्यन में आवेला। शहनाई बियाह बगैरह मांगलिक अवसरन पर बजवावल जाला।

बिस्मिल्लाह खाँ लइकाइये में ममहर (बनारस) चल गइलें। मामा विलायत अली खाँ आ अलीबक्स खाँ से आगे के तालीम शुरू भइल। मामा लोग राग के बारे में बतावत, बजावहूँ के सिखावल। गावे के शैली बतावल ताकि शहनाई वादन में आकर्षण आ जाव। गंगा घाट के सीढ़ियन पर बइठ के शहनाई के रियाज होखे–"गंगा दुआरे बधइया बाजे, गंगा दुआरे ....."। ई रियाज कबों-कबों सिद्धेश्वरी मंदिर, शीतला मंदिर आ विश्वनाथ मंदिर में अराधना स्वरूपो होखे। अपना साधना आ अभ्यास के बलबूते संगीत जगत् के बुलंदियन के छुए में समर्थ भइनी। गाँव-गँवई के अदना-सा साज शहनाई बिस्मिल्लाह खाँ के ओंठन के छू के महान बन गइल।

संगीत के निरंतर साधना ऊहाँ के सबसे बड़हन ताकत रहे। एही साधना के बूते ऊहाँ के 1930 ई० में अखिल भरतीय संगीत समारोह, इलाहाबाद में पहिलका प्रस्तुति कइनी। 1938 ई० में आकाशवाणी लखनऊ से शहनाई प्रस्तुत भइल, जवन निरंतर चलत रहल। एकरा बाद त उनकर सुर-साधना कश्मीर से कन्याकुमारी आ गुजरात से आसाम के सीमा लाँघ के विदेशन में झंडा पहरावे लागल। ऊहाँ के 15 अगस्त सन् 1947 ई० के लालकिला के प्राचीर से शहनाई पर विजय धुन बजा के धन्य हो गइनी।

बिस्मिल्लाह खाँ अपना जादुई फूँक से कई तरह के रागन के पहचान देवे में सक्षम रहनी। होरी, चइता, दादरा, बधाव, ठुमरी आ कजरी आदि विशेष रहल। बानगी देखीं– "बाली उमर लइकइयाँ गवनवा हम नाहिं जइबे"। प्रसिद्ध फिल्मकार विजय भट्ट खाँ साहेब के शहनाई वादन पर फिलिम बनवले 'गूँज उठी शहनाई'। ई फिलिम 'दिल का खिलौना हाय टूट गया' गीत के साथे सुपर हिट भइल। लता मंगेशकर के गर्व एह बात के बा कि ऊहाँ के खाँ साहेब के धुन के स्वर देले बानी। लता जी खाँ साहेब से मिलनी कम बाकिर जुड़ल रहनी जादे। एही से कहल गइल बा कि "गुनी जाने गुनियन के अउर ना जाने कोई"।

खाँ साहेब विश्व के अनेक देशन में सम्मानित अतिथि के गौरव प्राप्त कर चुकल बानी। भारत में ऊहाँ के पद्मश्री, पदम्भूषण आ पद्मविभूषण जइसन सम्मान मिल चुकल बा। अपना देश के नागरिक बनावे खातिरा कई गो देशन से निमंत्रण आइल। बाकिर बिस्मिल्लाह खाँ के दू टूक जबाब रहे, "का तोहनी ओहिजा बनारसो के बसइब, जहाँ गंगा बहत होखस"। खाँ साहेब के अपना बनारसी भइला के गर्व रहे।

आजीवन सुर के 'नूर' समझ के 'नादब्रह्म' के साधना में निमग्न रहे वाला बिस्मिल्लाह

खाँ के सलाह बा कि "आत्मविश्वास राखीं। नीमन काम करे के बा ओमे डूब जाईं। एतना डूबीं कि कुछ अलगे आ कुछ खास योग्यता लेके लौटीं। संगीत त महासमुंदर ह, सभका हिस्सा में कुछ-ना-कुछ लहरे आवेला। हमरो हिस्सा में कुछे लहर आइल बा।" खाँ साहेब सीख देत कहले बानी-"संगीत कवनो मिसरी के ढेला ना ह कि घोरीं आ पीया दीं। संगीत में सीखे वाला के भूमिका चौदह आना आ सिखावेवाला के भूमिका दू आना होला। ज्ञान लेवे के पात्रता होखे के चाहीं। ई जरूरी नइखे कि उस्ताद के लइके उस्ताद होइहें"।

नब्बे बसंत पूरा भइल त खाँ साहेब नब्बे किलो के केक कटनीं। एही अवसर पर अपना जीवन पर लिखल किताब 'मोनोग्राफ ऑफ बिस्मिल्लाह खाँ' के विमोचन कइनीं। खाँ साहेब के एके गो अफसोस रह गइल कि इंडिया गेट, डुमराँव आ दरभंगा में शहनाई ना बजा पवलें।

21 अगस्त 2006 के मरते-मरते 'गंगा दुआरे बधइया बाजे .....' सुना गइलें। गंगा माई के दुलरूआ आखिरी-आखिरी तकले माई के कर्जा उतार गइलें।

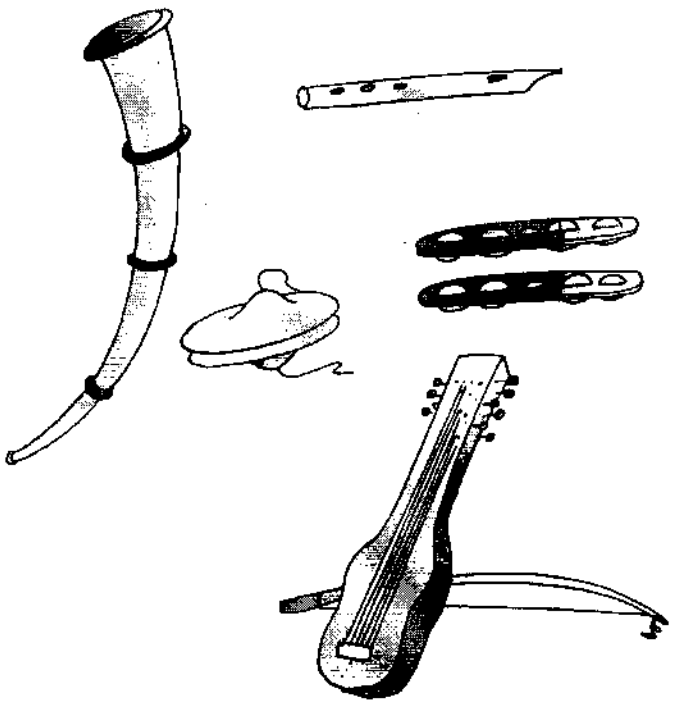

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. बिस्मिल्लाह खाँ कवन बाजा बजावत रहनी?

   (क) बाँसुरी (ख) सिंघा

   (ग) शहनाई (घ) तुरही

2. खाँ साहेब 15 अगस्त 1947 ई० के कहाँ शहनाई बजवले रहनी ?

   (क) इंडिया गेट (ख) लालकिला

   (ग) कुतुबमीनार (घ) आकाशवाणी

3. भारत सरकार खाँ साहेब के देश के सर्वोच्च सम्मान देले रहे ओकर नाम ह--

   (क) पद्मश्री (ख) पद्मभूषण

   (ग) पद्मविभूषण (घ) भारत रत्न

4. खाँ साहेब के जनम कहँवा भइल रहे ?

   (क) बनारस (ख) डुमराँव

   (ग) सीवान (घ) भोजपुर

1. बिस्मिल्लाह खाँ के जनम कब आ कहाँ भइल रहे ?
2. बिस्मिल्लाह खाँ के शहनाई वादन कहवाँ से आ केकरा देख-रेख में शुरु भइल ? लिखऽ ।
3. बिस्मिल्लाह खाँ शहनाई के रियाज अक्सरहाँ कहाँ-कहाँ करीं ?
4. खाँ साहेब कवना गीत के धुन बजा के गंगा मइया के अराधना करीं ?

5. खाँ साहेब 14 बरिस के उमर में कवना मंच से आ कब प्रस्तुत कइनी ?

6. बिस्मिल्लाह खाँ के कब भारत के सर्वोच्च सम्मान मिलल ?

7. खाँ साहेब आकाशवाणी के कवना केंद्र से विशेष क के जुड़ल रहीं ?

8. 'गूँज उठी शहनाई' फिलिम में सुर आ स्वर केकर-केकर रहे ?

निबंध से आगे

1. बिस्मिल्लाह खाँ अपना शहनाई से कवन-कवन सुर निकालत रहनी ? ऊहाँ के प्रिय रागन के नाँव गिनावऽ ।

2. जे-जे खाँ साहेब के शहनाई वादन के आगे बढ़ावे में सहयोग देहल, ओकरा विषय में कुछ जानकारी लायक तथ्य लिखऽ ।

3. संगीत में सीखे वाला के भूमिका चउदह आना आ सिखावे वाला के भूमिका दू आना होला । ई कहल कहाँ ले सही बा ?

अनुमान आ कल्पना

1. शहनाई के साथे अउरी कवन-कवन बाजा बाजेला ? पता क के लिखऽ ।

2. शहनाई कब-कब बाजेला ? दादी आ नानी से पूछ के लिखऽ ।

3. 'दिल का खिलौना हाय टूट गया' गीत में खाँ साहेब शहनाई बजवले बानी । अउरियो गीत जवना में खाँ साहेब शहनाई बजवले होखीं, ओकरा के संग्रहित क के लिखऽ ।

4. विदेश से स्थायी निवास खतिरा खाँ साहेब के अवसर मिलल रहे, बाकिर खाँ साहेब ठुकरा देहनी । एकर का कारण हो सकता । अनुमान लगाव आ लिखऽ ।

5. खाँ साहेब के अंतिम इच्छा पूरा ना भइल ? एकर का कारण हो सकता ?

भाषा के बात

1. नीचे लिखल शब्दन के अउरी का-का कहल जाला ? सोच के लिखऽ ।

   सीख, उस्ताद, बनारस, ओंठ, गंगा

2. नीचे जोड़ा में शब्द लिखल बा । के तरे पता चली कि जोड़ा शब्दन में का अंतर बा ?

आदि,	किला,	पवन,	शिखर,	सुर
आदी	कीला	पावन	शेखर	सूर
	नाई	वाद्य	सन्	
	नाई	वाद	सन	

परियोजना कार्य

1. मुँह से फूँक के कवन-कवन बाजा बाजेला ? छोट-छोट लइका मुँह से फूँक के जवन-जवन बाजा बजावेले ओकनी के नाँव लिखऽ । इहो बताव कि ई सब केंगन बनावल जाला ?

2. तोहरा गाँव-जवार में अगर केहु शहनाई बजावत होखे त ओकर पता क के जीवनी लिखऽ भा बतकही लिखऽ ।

3. पुरनका सब बाजा कबो-कबो आ कहीं-कहीं बाजता । एकर का कारण बा ? अपना वर्ग के लइकन, शिक्षक भा अपना से बड़-बुजुर्ग से पूछ के लिखऽ ।

शहनाई

शादी-बियाह जइसन मांगलिक अवसरन पर शहनाई बाजल बड़ा नीमन लागेला । ई मूलत: अरब से आइल बाजा ह ।

शहनाई में सामान्यत: आठ से नौ गो छेद होला जवना में सात गो छेद बजावे के कामे आवेला। बाकी बाँचल छेद या त मोमबत्ती से भर दियाला भा खुलल छोड़ दियाला जेसे सुर निर्धारित कइल जा सके । ई एक तरह से करिया लकड़ी से बनेला। एकरा निचला भाग में पीतर के एगो छोट घंटी लागल रहेला । एह साज के लंबाई एक से डेढ़ फुट ले होला। एकर कंपिका पालाघास नाँव के एगो घास से बनावल जाला ।

शब्दार्थ

सरताज	–	सिर के ताज, मुकुट
आजीवन	–	जीवनभर
नीमन	–	अच्छा
दुआरे	–	दरवाजा
आकाशवाणी	–	रेडियो स्टेशन
तालीम	–	शिक्षा
प्राचीर	–	देवाल

अध्याय-ग्यारह

भोजपुरी लोकगीत के भंडार बड़ी समृद्ध बा। एह में जिनगी के सुख-दु:ख का यथार्थ के अभिव्यक्ति मिलेले। लोकगीत जनता के हृदय के आवाज ह। इहे वजह बा कि पश्चिमी संस्कृति के बढ़त प्रभाव का बादो भोजपुरी लोकगीतन के लोकप्रियता बढ़ते जाता। प्रस्तुत गीत में भोजपुरिया संस्कृति के सोजहग चित्र उभर के आइल बा। मइया के पियास लागल, पानी माँगला आ ओकरा बाद के संवाद का माध्यम से ई गीत पूरा होता।

लोकगीत

नीमिया के डाढ़ि

नीमिया के डाढ़ि मइया लावेली झुलुअवा हो कि झूमी-झूमी ना,
सातो बहिनी गावेली गीत हो कि झूमी-झूमी ना ।
झुलत-झुलत मइया के लगली पियसिया हो कि चलि भइली ना,
मलहोरिया-निवास मइया चली भइली ना ।
सुतल बाड़ू कि जागल हो मलिनिया, कि बून एक ना,
मोहके पनिया पियाव हो कि बून एक ना ।
कइसे के पनिया पियाई, ए सीतल मइया, मोरा गोदिया ना,
बाड़न बालका नदान मइया, मोरा गोदिया ना ।
बालका सुताव मालिन, सोने के खटोलवा कि निछुनवे होके ना,
मोहके पनिया पियाव हो निछुनवे होके ना ।

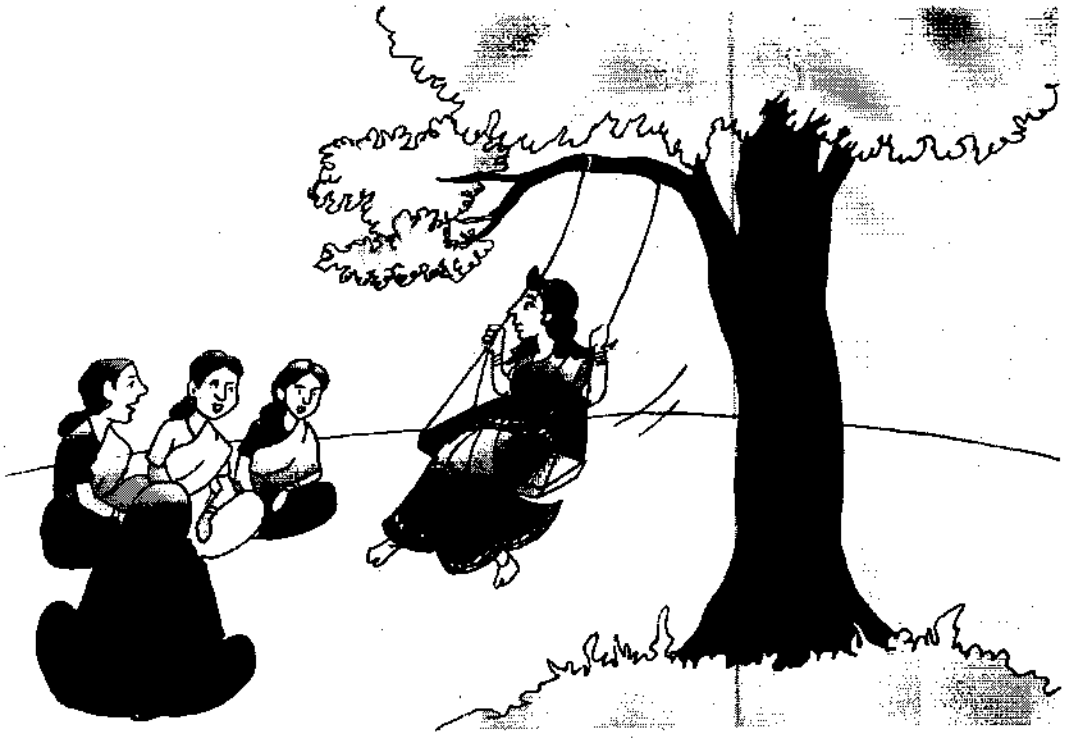

सोने के खटोलवा, मइया, टूटी-फूटी गइले कि बलकवा राउर ना,

हो कि भुइयाँ लोटी जइहें हो, बलकवा राउर ना ।

जाहि तोरे मालिन,रोइहें बलकवा हो, उठाई हो लेबो ना,

राजा-मोती के अँचरवा में उठाई हो लेबो ना ।

कहाँ पइबो मइया हो, सोने के घइलवा, कहाँ हो पइबो ना,

कि रेसमसुत के डोरिया हो, कहाँ हो पइबो ना ।

सोनरा के घरवा, मालिन, सोने के घइलवा, पटहेरवा घरवा ना,

हो रेसमसुत डोरिया, पटहेरवा घरवा ना ।

पातर कुइयाँ, पताले गइले पनिया हो, डफोरिके भरिहऽ ना,

मइया पीहें जुड़पनिया हो, डफोरिके भरिहऽ ना ।

एक हाथे लिहली सोने के घइलवा हो, दहिनवे हथवा ना,

सीतल जुड़पनिया हो, दहिनवे हथवा ना ।

मइया पीयसु जुड़पनिया हो, दहिनवे हथवा ना ।

जइसे के, मालिन, मोहे जुड़वलु हो कि ओइसे-ओइसे ना,

तोहार धीयवा जुड़ासु, मालिन, ओइसे-ओइसे ना,

तोहार पतोहिया जुड़ासु, मालिन, ओइसे-ओइसे ना ।

धीया बाड़ी ससुरा, पतोहिया बाड़ी नइहर हो कि केकरा के ना,

सीतल मइया दिहलू असीसिया हो कि केकरा के ना ।

धीया बाढ़सु ससुरा, पतोहिया बाढ़सु नइहर कि उनके के ना,

मालिन! दिहलीं असीसिया हो कि उनके के ना ।

अभ्यास

पाठ से

1. एह गीत में का कहल गइल बा ? संक्षेप में बताव ।
2. मलहोरी के का काम ह ?
3. पटहेरा के कवन काम बा ?
4. पानी पीयला पर मइया कवन आशीर्वाद दे तानी ?
5. ई गीत संवाद के माध्यम से चलता । कइसे ?

पाठ से आगे

1. ई गीत कवना लोकछंद में बा ?
2. एह लोकगीत में एह घड़ी कवनो परिवर्तन भइल बा ? पता कऽ के लिखऽ ।
3. मलहोरी, पटहेर आ डफोर के पेशागत शब्दन के पूछ के ओकरा अर्थ के संगे लिखऽ ।
4. लोकगीत आ गीत में का अंतर होला ?

भाषा के संगे

1. निम्नलिखित शब्दन के मूल शब्द लिखऽ –

   जइसे नीमिया से नीम ।

   झुलूअवा

   बलकवा

   पियसिया

   मलहोरिया

   गोदिया

2. आगे लिखल शब्दन के खड़ी बोली में का कहल जाला-

जइसे-भुइयाँ – भूमि

कुइयाँ –

तोहार –

डाढ़ि –

अँचरवा –

पनिया –

पतोह –

धीया –

3. 'तोहार धीयवा जुड़ासु' कह के देवी मइया आशीर्वाद दे तारी। ई भविष्य के बात बा। देवी मइया के आशीर्वाद पूरा भइल। तब एही वाक्य के कहल जाई कि 'तोहार धीयवा जुड़ा गइली' ई वर्तमान काल में बा। एही 'तोहार पतोहिया जुड़ासु' के वर्तमान काल में बदलऽ ।

4. एह गीत में क्रिया के बहुत शब्द आइल बा। जइसे गावेली। अइसन क्रिया के शब्दन के चुन के लिखऽ।

परियोजना कार्य

1. शादी-बियाह, खेती-गृहस्थी आ आउर संबंधन से जुड़ल लोकगीत जमा कर ।

2. तहरा जानकारी में केहू लोकगीत गायक होखे त पता करऽ कि लोकगीत कवना वाद्य यंत्र के सहारे गावल जाला ?

3. तू कवनो गाछ पर झुलुवा झुलले बाड़ऽ ?

4. मलहोरी, पटहेर, डफोर आदि के परंपरागत पेशा पर नया-नया मशीन के का प्रभाव पड़ता ? पता क के लिखऽ ।

शब्दार्थ

झुलुअवा	–	झुलुआ, झुला
निछुनवे	–	मन से, ठीक से
खटोलवा	–	खाटी, खटोला
घइलवा	–	घइला, घड़ा
धीयवा	–	बेटी

अध्याय-बारह

रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त'

रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त' भोजपुरी के कवि रहीं। इहाँ के जनम 9 अगस्त 1919 के वर्त्तमान पूर्वी चंपारण जिला के गोविंदगंज के दुबे टोला में भइल रहे।

एह कविता में धोखा देवे वाला से हँसी-हँसी में सावधान रहे के कहल गइल बा।

बिलाइ भगतिन

बिलाई भइली भगतिन आसन जमा के ।।

उज्जर चदरिया के ओढ़ि रामनामी
माथा पर मछरी के भसम रमा के।
घोंघन के चुनि-चुनि माला बनवली
गवें-गवें फेरे लगली दुम सुटुका के ।। बिलाई...

एक दिन मूसन के मीटिंग बोलवली
गाँव का बगइचा में मंडप रचा के।
एने-ओने ताकि-तुकि आँख मटकवली
भाखन के तोब दिहली छोड़ सरिया के ।। बिलाई...

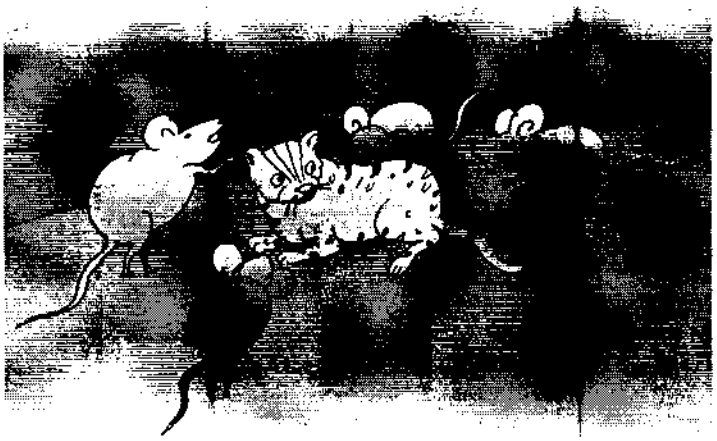

'हम हईं रे बबुअन ! तोहनी के नानी
ना भावे बात पूछ पुरखन से जाके ।
तोहन कारन हम भइनी जोगिनिया
रोज फलहार करीं गंगा नहा के ।। बिलाई...

तबहूँ ना बात मान तोहन ए मुअनूँ
हमरे के वोट दे द एक-एक गिना के ।
चूहन का वोट से बिलाई भइली रानी
लगली शिकार खेले घर में समा के ।। बिलाई...

गवें-गवें चूहन के चट करे लगली
लिहली फुलाय पेट सय चूहा खा के ।
आखिर में एक दिन फूटल भंडा
बँड़वा नचोर लिहलसि मुँह खिसिया के ।। बिलाई...

केहू धइलसि अहुँचा, केहू धइलसि पहुँचा
होखे लागल भगतिन के सेवा बना के ।
जनता ना मानेला कहला से भइया
आखिर में दम लेला सरगे ठेका के ।। बिलाई...

●

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'बिलाई भगतिन' कविता पढ़ला से कइसन भाव आवता ?

   (क) वीर रस के (ख) शृंगार रस के

   (ग) हास्य रस के (घ) वात्सल्य रस के

2. मूसन के मीटिंग बोला के बिलाई भगतिन का कइली ?

   (क) भाग चलली (ख) आँख मटकवली

   (ग) खा गइली (घ) डँटली

3. बिलाई भगतिन केकर प्रतीक बाड़ी ?

   (क) पशु के (ख) संत के

   (ग) कोमलता के (घ) नेता के

4. बिलाई भगतिन कवन चीज के माला बनवली ?

5. बिलाई भगतिन के सेवा कइसे भइल ?

पाठ से

1. बिलाई मूसन से मिल के का-का कर रहल बाड़ी ?

2. बिलाई भगतिन मूसन के बोला के का समझवली ?

3. बिलाई भगतिन मूसन के बहला-फूसला के का मँगली ?

4. बिलाई भगतिन रानी बन गइला पर का करे लगली ?

5. आखिर में बिलाई भगतिन के कवन हाल भइल ?

पाठ से आगे

1. बिलाई भगतिन जइसन चरित्र वाला कवनो दोसर कहानी भा कविता सुनले आ पढ़ले बाड़ त ओकरा के अपना कक्षा में सुनावऽ ।

2. बकुला भगत वाला कहानी सुनले बाड़ऽ, त ओकरा के अपना इयारन के सुनावऽ।

3. बिलाई भगतिन जइसन केहू आदमी अगर आस-पास होखे त ओकर आउर ओकर दिहल सजाय के वर्णन करऽ।

मुहावरा

अइसन वाक्यांश, जवन सामान्य अर्थ के बोध ना कराके कवनो विलक्षण अर्थ के बोध करावे ओकरा के मुहावरा कहल जाला। मुहावरा के प्रयोग से भाषा में सरलता, सरसता, चमत्कार आ प्रवाह आ जाला। ई वाक्य के अंश बनिये के आवेला।

भाषा के बात

1. नीचे लिखल मुहावरन के वाक्य में प्रयोग करऽ।

   आसन जमावल, दुम सुटुकावल, चट कइल, आँख मटकावल।

2. एह पाठ में आँख मटकावल मुहावरा के प्रयोग भइल बा। आँख पर अउरी मुहावरा इकट्ठा करऽ।

3. एह वाक्य के ध्यान से पढ़ऽ

   रमेश आँख मटकावत बाड़न। सुशीला आँख मटकावत बाड़ी।

   एह वाक्य में 'बाड़न' आ 'बाड़ी' क्रिया के प्रयोग काहे भइल बा ?

4. भगत से भगतिन 'इन' प्रत्यय लगा के स्त्रीलिंग बनावल गइल बा। एही तरे नीचे लिखल शब्दन में 'इन' प्रत्यय लगा के स्त्रीलिंग बनावऽ।

   (i) समधी

   (ii) हीरो

   (iii) ठग

   (iv) लोहार

5. *शब्द के बाद में जवन अक्षर भा अक्षर-समूह लगावल जाला ओकरा के प्रत्यय कहल जाला। इहाँ संज्ञा में प्रत्यय लगा के ओकर रूप बदलल गइल बा बाकिर इहाँ शब्द के अर्थ ना बदलल। पाठ में चादर शब्द में इया प्रत्यय लगा के चदरिया कइल गइल बा जइसे चादर से चदरिया।*

तू अइसने शब्द चुन के लिखऽ

6 एक मुट्ठी सरसो

बरखा पीट-पीट बरिसो

एक मुट्ठी लाई

बरखा बिलाई

एह खेल गीत के आखिर में आइल 'बिलाई' आ कविता में आइल 'विलाई' दूनों के अर्थ में का अंतर बा ?

शब्दार्थ

भगतिन	-	मेहरारू भक्त
घोंघन	-	अइंठा
फलहार	-	खाली फल खा के रहल
नचोर	-	नोच लिहल
आखिर	-	अंत में

अध्याय-तेरह

भगवती प्रसाद द्विवेदी

भगवती प्रसाद द्विवेदी भोजपुरी के नामी कथाकार हईं। इहाँ के जनम 1 जुलाई 1955 के उत्तर प्रदेश के बलिया जिला में भइल रहे।

*इहाँ के प्रकाशित किताब बाड़ी सन- **दरद के डहर, साँच के आँच (उपन्यास), थाती** (लघुकथा-संग्रह), **ठेंगा** (कहानी-संग्रह), **जै-जै आगर** (कविता-संग्रह) इहाँ के लघु कथा संग्रह **थाती** पर अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पुरस्कार मिल चुकल बा।*

गाछ-बिरीछ आदमी खातिर बड़ी उपयोगी होले सन। एकरा से आदमी के रक्षा होला। गाछ आ ओकर रखवाली कइल तपस्या खानी बा। ई कहानी गाछ के महातम बतावता।

जंगल में मंगल

कोलकाता के एगो कोठरी में मुखर्जी बाबू के परिवार रहेला। मेहरारू के स्वर्ग सिधरला बरिसन बीत गइल। उनका एगो बेटा आ एगो बेटी-बस दुइए गो संतान बा। दूनों महाविद्यालय में पढ़ेलन स। मुखर्जीदा एगो प्राइवेट कंपनी में नौकरी करेलन। पइसा के तंगी में जइसे-तइसे जिनिगी के गाड़ी खींचत बाड़न। बीड़ी के अइसन लकम लागल रहे कि लमहर अरसा से तपेदिक (टीवी) जकड़ लेले बा। डॉक्टर इलाज का सँगही कुछ दिन खातिर कवनो पहाड़ी इलाका में भा दूर-दराज के गाँव में जाके सेहत-लाभ करे के सलाहो देले बाड़न। बाकिर ऊ जइबो करस त कहवाँ ? कई पुश्त से उनका परिवार के खाली एही महानगर से त वास्ता रहल बा। गाँव में ना केहू हित-नात, ना केहू से दोस्ती-इयारी।

रत्नेश, मुखर्जी बाबू के बेटा आशुतोष के लँगोटिया इयार ह। दूनों एके कॉलेज में पढ़ेलन स।

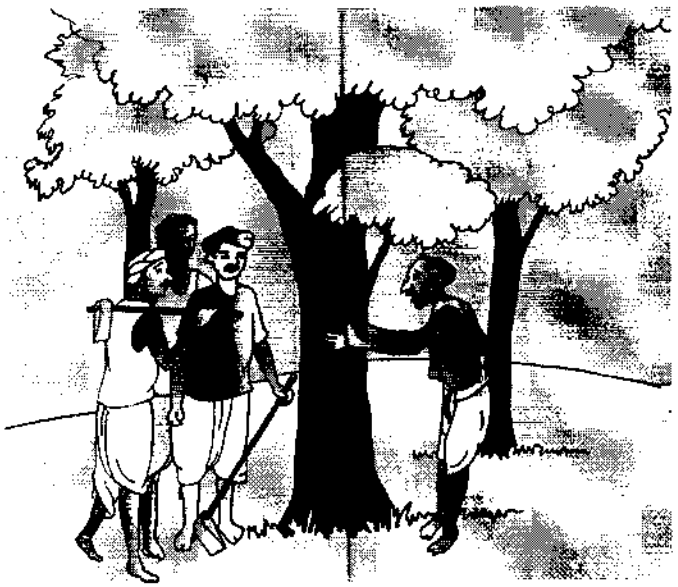

रत्नेश विज्ञान संकाय में बा आ आशुतोष कला संकाय में। सुदूर देहात के रहवइया रत्नेश उहाँ होस्टल में रहेला । आशुतोष के बासा पर ऊ अकसरहाँ आवत-जात रहेला। आशुतोष के बहिन रत्ना के ऊ कबो-कबो पढ़इबो करेला ।

रत्नेश के जब मुखर्जी बाबू के बेमारी के पता चलल, त ऊ उनका के अपना गाँवे लिया जाए खातिर निहोरा कइले । पहिले त ऊ आनाकानी कइलन आ बेटी के अकेले छोड़ के उहाँ जाए से मना क देलन । बाकिर जब रत्नेश गरमी के छुट्टी में पूरा परिवार के गाँवें लिया जाए के बात कहलस, त ऊ टार ना पवलन आ सउँसे परिवार रत्नेश का सँगे गाड़ी से गाँव खातिर रवाना हो गइल ।

स्टेशन प उतरके ताँगा से गाँव के ओर चलल लोग। छवर के दूनों ओर के मनोरम कुदरती नजारा रहे । प्रकृति के कोरा में डेग धरते अइसन बुझाइल जइसे मुखर्जी बाबू के आधा रोग आपने आप छू-मंतर हो गइल होखे । रत्नेश के बाबूजी बाँके बिहारी से मिलले त ऊ फूले ना समइलन। उनकर विनयी, मिलनसार सुभाव आ गाछ-बिरीछ, माल-मवेशी, चिरई-चुरुंग खातिर उनकर अटूट मोह-ममता देखके ऊ दंग रह गइलन । कोठी, सुख, संपदा, लमहर-खेती-बारी, नौकर-चाकर के बावजूद घमंड के नामो-निशान ना । बड़प्पन एही के नूँ कहल जाला ! मेहरारू आ तीन-तीन गो बेटन के भरल-पुरल परिवार । बड़का बेटा शमशेर इंजीनियरिंग कऽ चुकल बा । दोसरका रत्नेश वनस्पति विज्ञान के होनहार विद्यार्थी आ सबसे छोट परितोष नर्सरी के छात्र । सचहूँ लछिमी आवेली त छप्पर फार के ।

भोरही-भोरे मुखर्जी बाबू बाँके बिहारी का संगे दूर ले निकल आइल बाड़न । खाली गोड़ के नीचे के गुदगुदावत हरियर दूब। मोती-अस चमचमात सतरंगी ओस के बून । चरवाही में जात

रम्भात गाय-बछरू । रंग-बिरंगी चिरइन के चह-चह। नीला आसमान के फइलल बाँह आ अँकवार भेंट करे के आतुर हरियर-हरियर पेंड़-खूँट । बाँके बिहारी कई बिगहा में फइलल आपन बगइचा देखावत बाड़न । फेरू राज के बात बतावत कहत बाड़न। मुखर्जी बाबू, एह बगइचो का पाछा एगो कहानी बा । बियाह का बाद कई बरसि गुजार गइल, बाकिर हमरा कवनो संतान ना भइल । एक रात सपना में एगो महात्मा दर्शन देके कहलन कि तहरा से वन देवता कुपित बाड़न । उनका कोप से बचे खातिर अगर तू एगो बाग लगा देबऽ त तहरा पुत्र-रतन के प्राप्ति होई । फेरू त अगिले दिन से हम बागवानी के काम में जीव-जान से जुटि गइल रहलीं । ओकरे नतीजा ह ई हरा-भरा फलदार गाछ।

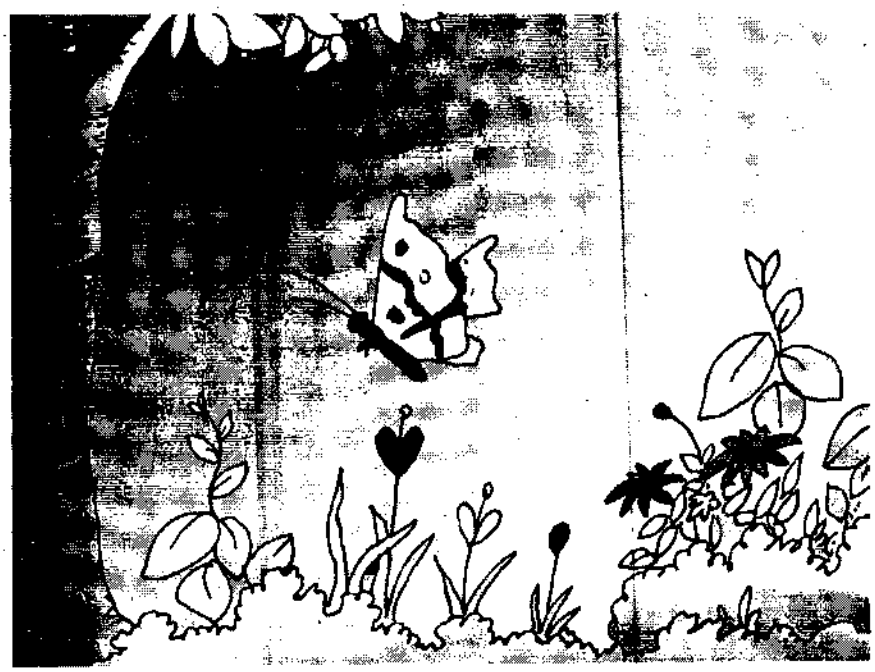

मुखर्जी बाबू त अभिभूत हो गइल रहलन। उनका नाक में बाँके बिहारी के पसेना के सोन्ह-सोन्ह गमक आवत रहे । तलहीं घुमत-घामत रत्नेश आशुतोष, रत्ना आ परितोषो उहवाँ आ धमकलन । वनस्पति विज्ञान के विद्यार्थी रत्नेश उहाँ के पर्यावरण आ एकहो-एकहो गो गाछ के खासियत बतावे लागल, जबकि परितोष तितिली पकड़े आ चिरइन का साथे खेले में मगन हो गइल । रत्नो उहाँ के मनभावन नजारा देखके भाव-विभोर हो गइल रहे।

लवटत खा बाँके बाबू के नजर आम के एगो गाछ पर पड़ल त उनकर मरम घवाहिल हो उठल । रात में केहू आम के एगो मोट डाढ़ काट ले गइल रहे। रोज-ब-रोज गाछन में अन्हाधुन कटाई चिंता के विषय बन गइल बा। बाँके बाबू बेचैन होके बतावत बाड़न, सरकार हरियर गाछ के कटाई रोके खातिर कानून त बनवले बिया, बाकिर लकड़ी काटके जीवन-यापन करेवाल गरीबन खातिर कवनो वैकल्पिक व्यवस्था नइखे कइले। दोसरा ओर, धनी आ ठीकेदार, पुलिस अउर वनअधिकारियन के जेब गरमा के कानून के अँगूठा देखावत बाड़न । सरकारी स्तर पर थाला त लगावल जाला, बाकिर उन्हनी के हिफाजत आ रख-रखाव के इंतजाम ना रहला से ऊ कुछुए दिन में सूख-मुरझा जालन स ।

बाँके बाबू के बात से सभकरा मुँह प फिकिर के लकीर खिंचाए लागत बा ।

रात में लिट्टी-चोखा खाके आ गरम दूध पीके मुखर्जी बाबू जब सूते के तैयारी करत बाड़न, तलहीं बाँके बाबू के कोठरी से कहा-सुनी आ हल्ला-गुल्ला सुनि के उनकर कान खड़ा हो जात बा। चौकन्ना होके ऊ सुने लागत बाड़न । इंजीनियर शमशेर बगइचा के मए गाछ कटवाके उहवाँ फैक्टरी बइठावल चाहत बा, बाकिर बाँके बाबू एकरा खातिर कतई राजी नइखन होत । दूनों जाना आपन-आपन दलील देत बाड़न । बाकिर बौखलाइल शमशेर आखिरकार गाछन के सफया करवावे के फैसला सुनाके बहरिया जाताड़े ।

रात में बाँके बाबू बेर-बेर करवट बदलत बाड़न । अचके में नींन अइला पर ऊ सपना के दुनिया में भूला जात बाड़न । उन्हुका उज्जर धूप-धूप जटाजूट-दाढ़ी वाला महात्मा लउकत बाड़न जिन्हिकरा आँखिन से टप्-टप् लोर टपकत बा आ अंग-प्रत्यंग लोहूलोहान बा । ऊ खुद के वृक्ष-देवता बतावत बाड़न आ मनई के राकसी व्यवहार से जार-जार रो रहल बाड़न । अनगिनत लोग उनका एक-एक अंग के छपाक्-छपाक् काट रहल बा आ ऊ बेबसी से बेर-बेर कराहत बाड़न ।

'ना ... हरगिज ना !' बाँके बाबू के आँख खीस से खून उगिले लागत बाड़ी स आ ऊ पसेना से तर-ब-तर होत उठके बइठ जात बाड़न ।

फजीरे जागि के बाँके बाबू बरामदा में बइठ के प्रभाती गावत बाड़न । तलहीं उनका बगइचा से 'ठक-ठक' के आवाज लगातार आवे लागत बा। ऊ बेतहाशा बगइचा के ओर भागत बाड़न ।

बगइचा के हाल देखते उनका कठया मार देत बा । आज ओह बड़की बारी के गाछन के काटे खातिर कई गो मजूर टाँगा लेके हाजिर बाड़न स । इंजीनियर शमशेर के फरमान पर दनादन टाँगा, टाँगी आ कुल्हाड़ी चल रहल बाड़ी स ।

बाकिर जइसही बाँके बाबू बाघ नियर दहाड़त बाड़न, उनकर रोबदार गुर्राहट सुनते टाँगा-टाँगी -कुल्हाड़ी चलावेवाला मए-के-मए हाथन के थथमा मार देत बा । बाकिर दोसरे छन शमशेर सभे मजूरन के आपन काम जारी राखेके आदेश देत बाड़े । त थथमल हाथ फेरू कटाई के काम में जुट जात बाड़न स।

आखिकार बाँके बाबू पगलइला-अस एने से ओने भागत बाड़न, फेरू एगो कटात गाछ से सटत दूनों हाथ पसार के छापि लेत बाड़न। शमशेर तबो काम ना रोके के आ टाँगा से वार करे के कड़ियल आदेश देत बाड़े।

बाकिर तलहीं थाना के दरोगा, सिपाहियन का साथे रत्नेश, आशुतोष आ मुखर्जी बाबू उहाँ पहुँच जात बाड़न। सभकर सिट्टी-पिट्टी गुम हो जात बा। शमशेर के पुलिस पकड़ लेत बिया।

गाँव के ढेर लोग-लुगाई जमा हो जात बाड़न। मजमा लाग जात बा। बाँके बाबू आ उनका बड़की बारी के जै जैकार होखे लागत बा। रत्नेश वन आ पर्यावरण के हिफाजत खातिर जनचेतना जगावे के जरूरत पर जोर देत बाड़े। रत्नो धउरत-धूपत उहाँ के रत्नेश के एह काम में साथ देबे के ऐलान करत बाड़ी। परितोष पर्यावरण पर एगो मोहक गीत सुनावत बाड़े:

'वन बिन विपत-अमंगल बा,

जंगल में बस मंगल बा......,

सभ केहू सामूहिक सुर में गीत के दोहरावत गाछन से अँकवारी भेंट करत लपेटा जात बा आ ओह जंगल में साँचो के मंगल के गलबाँही डलले ठठा के हँसत बाड़न। रत्नेश के एगो हाथ में रत्ना के हाथ आ दोसरा में पर्यावरण-हिफाजत के स्लोगन बा। उन्हनी के माथ पर झूमत गाछन से फूलन के झोंप झरे लागत बा।

●

अभ्यास

पाठ से

1. मुखर्जी बाबू परिवार का संगे कहवाँ रहत रहीं ?
2. मुखर्जी बाबू के आर्थिक हालत ठीक ना रहे। ई कइसे बुझाता ?
3. मुखर्जी बाबू के कवना चीज के खराब लत लागल रहे आ ओकरा से उनका का हानि भइल ?
4. रत्नेश मुखर्जी बाबू से कवना बात के निहोरा कइलन आ काहे खातिर ?
5. बाँके बिहारी बाबू के सुभाव के बारे में लिखऽ ।
6. मुखर्जी बाबू का संगे घूम-घाम के लौटत खानी बाँके बाबू के मन काहे घवाहिल भ गइल ?
7. बगइचा में से आवत ठक-ठक के आवाज सुन के बाँके बाबू का कइलन ?
8. रत्नेश पर्यावरण के सुरक्षा खातिर का करे के चाहत रहले ?
9. मुखर्जी बाबू के रोग-बियाधी कइसे बिला गइल ?

पाठ से आगे

1. तहरा गाँव में कबो गाछ कटइला के केहू विरोध कइले बा ?
2. का तू अपना कवनो इयार के घरे गइल बाड़ ? अगर गइल बाड़ त ओकर इयादगारी लिख।

कल्पना आ अनुमान

1. तहरा हरिहर गाछ कटइला से पइसा मिलत होखे त का तू गाछ कटवइबऽ ?
2. अइसन धरती के कल्पना करऽ जवना पर चारू ओर गाछे-गाछ होखे ।

भाषा के संगे

1. ऊ जइबो करस त कहवाँ ?

   एह वाक्य में 'कहवाँ' शब्द प्रश्न पूछे के बोध करावता। अपना मन से अइसन दूगो प्रश्नवाचक वाक्य लिखऽ ।

2. कोलकाता के एगो कोठरी में मुखर्जी बाबू के परिवार रहेला ।

   मुखर्जी बाबू के परिवार कहवाँ रहेला ? प्रश्न के ई उत्तर हो सकेला । नीचे कुछ वाक्य दिहल बा एकरा पर प्रश्न वाचक वाक्य बनाव, जेकर उत्तर ई वाक्य हो सके ।

1. रत्नेश आशुतोष के लंगोटिया इयार हउवें ।
2. मुखर्जी दा एगो प्राइवेट कंपनी में नौकरी करेलन ।
3. रात में बाँके बाबू बार-बार करवट बदलत बाड़न ।
4. आम-महुआ के बियाह के गीत पढ़ऽ ।

   'दूर-दराज' व्याकरण का दृष्टि से .... शब्द बा ।

5. एह पाठ में अइसन शब्दन में 'गाछ-बिरीछ', 'माल-मवेशी', चिरई-चुरूंग, खेती-बारी, 'नौकरी चाकरी' आइल बा-एह सब के वाक्य में प्रयोग करऽ ।

परियोजना

1. गाछ के रक्षा से संबंधित गीत खोज के गावऽ ।
2. कवनो गाछ-बिरीछ में पानी पटावऽ ।

शब्दार्थ

स्वर्ग सिधारल	-	मुवल
प्राइवेट	-	निजी
लँगोटिया इयार	-	जिगरी दोस्त
हिफाजत	-	सुरक्षा
ऐलान	-	घोषणा

पढ़ऽ-गुनऽ

गीत

चंदा मामा, आरे आव ऽ पारे आव ऽ
नदिया किनारे आव ऽ
सोना के कटोरिया में दूध भात ले ले आव ऽ
बबुआ के मुँहवा में घुटुक।

(2)

ओका - बोका
तीन - तड़ोका
लउवा - लाठी
चंदन - काठी
चनना के नाँव का ?
इजई, बिजई
पान, फूल, तितली
पुचुक।

कबड्डी के बोल

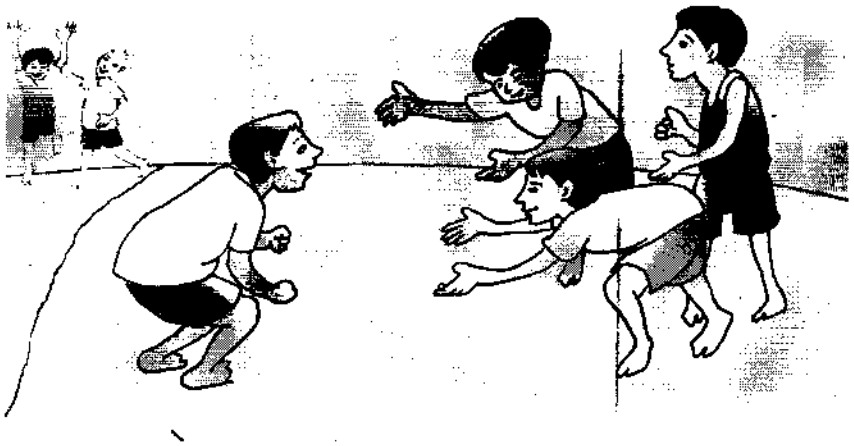

आव ऽ तानी कबड्डी
डेरइ ऽ जनि हो
हाथ गोड़ टूटी
कपार तोहार फूटी
लड़िकपन छुटी, लड़िकपन छुटी .....

✦

कबड्डी में लबड्डी पाताल में पुआ
मालिन बिटया खेलत होइहें जुआ

✦

चल कबड्डिया ऐना, तोर माई बीने बेना
एगो हमरो के देना, एगो हमरो के देना

✦

आम छू, आम छू, कौड़ी बादाम छू

✦

एक मुट्ठी गरई, छल-छल करई
कवन बेटा मोर पहुँचा धरई

✦

चल कबड्डिया आइले, तबला बजाइले
तबला का ताल पर घुँघरू बजाइले

अंघी लगावे के गीत

1

आव रे चिरइया, वन खोंतवा लगावऽ।
तोहरा खोंता में आग लगो, बाबू के सुतावऽ

2

आव रे खेदन चिरइया, गुलगुल अंडा पारऽ
तोहरा अंडा में आग लागो, बाबू के खेलावऽ

3

आव रे निनरिया नीनर वन से,
बबुआ आइल ममहर से।
लेंड़वरिया में से आव, बँसवरिया में से आव
बबुआ का अँखिया पर बइठ के सुताव

गीत

1

ए बिलाई मउसी
कोदो के चलउसीं
बिलरा बेराम बा
हमरा कवन काम बा ?

2

कनिया दू गो धनिया द ऽ
जीरा मरिच के फोरन द ऽ

अइले तहार भाई
मोटरी सकेत कर ऽ

3

काली माई करिया
भवानी माई गोर
टूटही मड़इया में करेली अँजोर

सात भईंस के सात चभक्का
सोरह सेर घीव खाऊँ रे
कहाँ गइले तोर बाघ मामा
एक टक्कर लड़ जाऊँ रे

जाड़ा

1

राम जी राम जी घाम कर ऽ
सुगवा सलाम करे
तोहरा बलकवा के जाड़ लागत बा

कमरी ओढ़ के बिहान करेला
पुअरा फूँक-फूँक तापत बा।

2

मटर के भूँजा पटर-पटर
तीसी के भूँजा चाईं
कानी आँख में दीया बरे
उग ऽ हो गोसाईं!

3

जाड़ लागे जरनी बयार बहे पापी
तातले खिंचड़िया खिअइह ए काकी

गीत

राजा रानी आवेले, पोखरा खोनावेले
पोखरा के आरी-पारी इमली लगावेले
इमली का गाछ पर नौ सौ अंडा
अंडा गिरे रेत में, मछरी का पेट में
ई संवरकी धवलक, बात बनवलक
बसिया भात पर बेना डोलवलक
बुढ़िया माई, बड़ चतुराई
सभका के खाँड़ा टूकी, अपने अढ़ाई !

किरिया उतारे के गीत

1

बकुला-बकुला कहाँ जा ताड़ ऽ ?
मूरई का खेत में
सेर भर सतुआ लेले जा
गंगा में दहववले जा
गंगा में के खूँटा-खूँटी
लोहे के मचान
सभ कर किरिया उतरिहें भगवान

2

एक मुट्ठी सुतरी
हजार किरिया उतरी

●

बुझउवल

(i)	करिया आँटी गइल अकास दाँते धइलन बाप तोहार।	तरकुल
(ii)	अत्थल पर पत्थल, पत्थल पर पइसा। बे पानी के घर बनावे, ऊ कारीगर कइसा।।	मकरा
(iii)	मुँह में आगि पेट में पानी। जे बुझे से बड़का गिआनी।।	हुक्का
(iv)	जब-जब किला प नाक रगड़ब ऽ होखी खूब अँजोर।	दियासलाई
(v)	राजा के बेटा, नबाबे के नाती। सइ गज कपड़ा के बान्हेला गाँती।।	पिआज
(vi)	छोटी चुकी बिटिया, मारे कछनिआँ। बड़े-बड़े मरदन के छुटेला पसेनिआँ।।	बिच्छी
(vii)	सावन फरे चइत गदराय। ताकर फर सुग्गो ना खाय।।	बबूर
(viii)	एक मुट्ठी लाई अकास में छिटाई। ना बिनले बिनाई, ना गिनले गिनाई।।	तरेगन
(ix)	आली के ढमढम, चाकर पतइआ। फरे के लद-फद फरि गइल मिठइआ।।	केरा
(x)	काजर अस कजरारी बेटी, अंगुर के सिंगार। बइठल बाड़ी पतरी डाढ़ी, देखत बा संसार।।	जामुन
(xi)	सँउसे ताल में एके खरई	चनरमा

(xii)	अस्सी कोस के पोखरा, चउरासी कोस के घाट। बजर परो ओह पोखरा कि पंडुक पिआसल जाइ ।।	ओस
(xiii)	राजा के बेटी रजमतिया नाँव। घँगरी पहिरि के बजारे जाव ।।	मुरई
(xiv)	खड़ा होखे के लुरिये ना धउरेलें जोर से।	साइकिल
(xv)	तोहरा घरे गइलीं निकालि के बइठि रहलीं।	जूता
(xvi)	लाल गाय खर खाय। पानी पीये मर जाय ।।	आगी
(xvii)	लरबरा के डाली टनटना के निकाली।	रोटी
(xviii)	लाली गइया बड़ी मरखइया। ओकर दूधवा बड़ी मिठइया ।।	मध
(xiv)	चार हड़हर गड़हर चार अमृत फल दू गो सुखल काठी एगो हाँके माछी।	गाय/भैंस
(xx)	कटोरा पर कटोरा। बेटा बापो से गोरा ।।	नारियल

आम

—रामलखन सिंह

सब फलन में राजा आम।
आइल बसंत नया मोजर लागल,
राह-बाट में गमके लागल,
चल निहारे के मोहे लागल,
पपिहा डाल पर बोले लागल,
कुहुक कोइलिया दुनू साम। सब फल न में .....

जब टिकोरा लमहर भइल,
सब केहू बगिया ओर गइल,
घूम-घूम के बीने लागल,
राह-पेड़ा में बाँटे लागल,
रखवारन के इहे काम। सब फल न में .....

चटनी रोज पिसाये लागल,
सतुआ रोज सनाये लागल,
बाप-बेटा मिल खाये लागल,
आपन भाग सराहे लागल,
एमे चाही टनकत घाम। सब फल न में

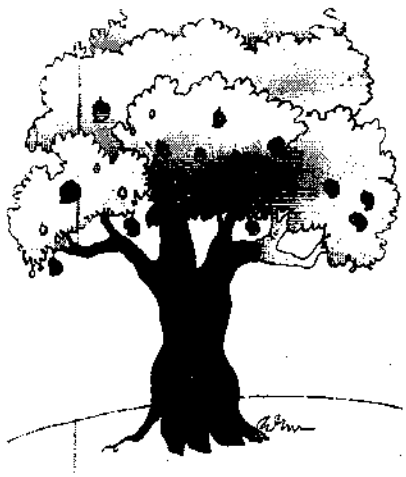

रोहिन नछतर जबे चढ़ल,
रिमझिम-रिमझिम बूनी परल,
आम पाकि के चूए लागल,
घूम-घूम लोग लूटे लागल,
चाप-चाप के चूसे लागल,
आम-नाम गोहरावे लागल,
रामलखन के बनल काम। सब फल न में

चाँद

—लक्ष्मीकांत सिंह

ए चाँद उतर आवऽ हमरी अँगना,
हमरी अँगना होऽ चाँद हमरी अँगना
ऐ चाँद उतर आवऽ हमरी अँगना।

तोहर ई सलोना रूप कब तक निहारीं
चकवा-चकई बनी रात कइसे गुजारीं
तोहरे दिवानी हईऽ तू हीं हमार सपना।
ऐ चाँद उतर आव हमरी अँगना.....

नथुनी में डालब चाहे झुलनी में झुलायब
कहब त चन्द्रहार में तोहरे सजायब
टीका में डाल केऽ भरब माँग अपना।
ऐ चाँद उतर आव हमरी अँगना.....

थाली में पानी बा खुलल अँगना
नीचे उतरीह जब बजाइब कँगना
तोहरे संग खेलिहनऽ हमार ललना।
ये चाँद उतर आवऽ हमरी अँगना.....

कहानी

डेढ़ लाख टकिया सिपाही

-गिरिजाशंकर राय 'गिरिजेश'

साधुशरण जब पुलिस कप्तान का पद पर जिला में अइलन ऊ चहलन कि पुलिस का छवि में सुधार होखे । थानेदारन के बोला के टाइट कइलन । एक जना ढिलाई कइलन त तुरत लाइन हाजिर क दिहलन आ उन्हन का जगह पर अच्छा-ईमानदार दरोगा के तैनात कइलन । एह दरोगन के कवनो कप्तान थाना ना देत रहलनस, काहें कि ई काम करसऽ । ईमानदार हवन स । कुल्हि थानेदारन से कप्तान के पइसो बन्हल बा । कप्तान काहे, डी.आई.जी. से लेके मंत्री तक-ले धंधा चलत बा । ई भ्रष्टाचार ना होके शिष्टाचार हो गइल बा । हर महीना थानाध्यक्ष लगे कप्तान शिष्टाचार निभावे आवेलन स। मिलला का बाद चलत के बेर लिफाफा थमाके सलाम ठोक के चल जालन स । ई लिफाफे शिष्टाचार ह । जवन दरोगा ना क पावेलन स त उनहन के थाना ना मिले । साधुशरण उन्हन के थाना दिहलन त उनकर खूब सराहना भइल ।

ऊ पहिली बेर जिला पवले रहस । ट्रेनिंग का बाद जिलन में सहयोगी के भूमिका निभावे के परल रहे । अब स्वतंत्र प्रभार मिलल ह त ऊ कुछ अइसन क दिहल चाहत रहलन कि उनकरो नाम महकमा में हो जाय, जइसे कुछ पुलिस अफसरन के चर्चा आजो उनकरा रिटायर भइला का बादो चलत रहेला ।

उनका खियाल बा कि जब ऊ पुलिस के ई नौकरी पवलन आ ट्रेनिंग का बाद बाबूजी के पैर छू के आवे लगलन त बाबूजी एतने कहलन -

''बेटा ! पइसा खातिर धर्म मत छोड़िह । कुछ अइसन करिह जवना से हमार मोंछ हरमेशा ऊपर रहे । कवनो दुखिया आ निर्दोष के मत सतइहऽ । कोशिश करिह कि जे आवे ओके न्याय मिल जाय ।'' साधुशरण बाबूजी के बात सोच के हँस देस । बाबूजी के का मालूम कि कहात कुछ बा होत कुछ बा । अपराध करेवाला साफ निकल जाता आ निर्दोष दंड पा जात बा । कानून के अइसन पेच बाड़न स जवना के इस्तेमाल क के अपराधी छटक जात बाड़न स । निर्दोष लटक जात बाड़े । फैसला सबूत पर होखे ला । ऊहो एह सबूत का आगे लाचार बाड़े बाकिर कुछ कर रहल बाड़न । जवन हो जाय उहे ठीक बा ।

पहिली तारीख के थानेदारन के लिफाफा आवे लागल । ई लिफाफा बड़का अधिकारियन तक जालन स । एहमें डालल रकम जुटावे खातिर नीक-जबून काम करेलनस ओह काम के कइसे रोक सकेलन स । एक बेरा ऊ रोके क कोशिश कइलन त डी.आई.जी. बोलवले रहलन, कहलन ''मिस्टर पांडे, हम जानत बानी की तू एगो अच्छा अफसर बाड़ । हमरा तोहरा पर गर्व बा बाकिर ऊ लिफाफन के मत रोके के प्रयास करऽ । कुल्हि उल्टा हो जाई । लिफाफा रोकला के अर्थ ना लगावल जाई कि तूँ ईमानदार बाड़ । ओकर अर्थ ई लागी कि कुल्हि माल ईमानदारी का नाम पर तूँ खुदे हड़प जात बाड़ । फेर तूँ केतना ईमानदार रहब ?''

''सर आप ना बचाइब ?'' साधुशरण पुछलन ।

''काहे ना बचाइब । एही खातिर न बोला के समझावत बानी । ना मनब त कइसे बचाइब । नया खून ह; ठीक बा, काम कर बाकिर लछुमन रेखा का भीतर रह के ।''

साधुशरण सलाम क के लौट आइल रहलन । उनकरा लागल कि डी.आई.जी. साहेब ठीक कहत बाड़न । जहाँ सइगो कसाई तहाँ एगो का बसाई । सब एके रंग में डूबल बा । केकर केकर धरीं नाँव कमरी ओढ़ले सगरी गाँव, इहे हाल बा ।

काल्हु दफ्तर में एगो नेता जी मिले आइल रहलन । साधुशरण के तारीफ करत-करत पुलिस के आलोचना करे लगलन कि पुलिस अब ऊ पुलिस नइखे । पुलिस के सिपाही बलात्कार करत बाड़न, लूटमार करत बाड़न, हत्या करत बाड़न, ऊ जनता के मददगार नइखन स रह गइल ।

''नेताजी !'' साधुशरण टोकलन -''पुलिस जब अइसन बा त काहे न ओकर इस्तेमाल कम करत बानी जा । अब त सभा होत बा त पुलिस भेजीं, रामलीला होत बा त पुलिस भेजीं

मोहर्रम बा त पुलिस भेजीं, इंतहान बा त पुलिस भेजीं, जान के खतरा के नाम पर 'गनर' ले के नेता घूमत बाड़न। हम जानत बानी कि पाँच प्रतिशत के जान के खतरा बा । 95 प्रतिशत लोग आपन रोब डाले खातिर गनर लिहले बा । जानके खतरा नइखे, हमनी के रिपोर्ट के बावजूद सरकार उनके ई कहके 'गनर' दे देत बा कि पुलिस क रिपोर्ट पक्षपातपूर्ण बा । अब रउवा बताईं पुलिस खराब बा त ओकर भूमिका कम करेके चाही बाकिर एकर त जीवन क हर क्षेत्र में हस्तक्षेप बढ़त जात बा । एहमें रचनात्मक ढेर बा आ कुछ अइसन होते बा ऊ कुछ अवसादग्रस्त सिपाही क देत बाड़न स । ओह में कार्रवाई होत बा । ई कइसे कहल जा सकेला कि कुल्हि पुलिसकर्मी खराब बाड़नस । हँ कुछ नेता लोग जरूर बिगाड़ देता ।''

नेता जी उनकर मुँह ताके लगलन, फिर मुद्दा बदल गइल, बाद में ऊ बतलवन की चौराहा पर पुलिस का वसूली से जनता बहुत परेशान बा, कुछ करीं । साधुशरण नेता जी के आश्वासन दिहलन कि खुदे ऊ एह मामला के देखिहन । ओह दिन उनकर नींद अचानक रात में टूटल। देखलन सबेरे के तीन बजत रहे । ऊ उठ के नित्यक्रिया से निवृत होके कपड़ा पहिरलन आ काल बेल बजा दीहलन । संतरी आके सलाम ठोकलस ।

''ड्राइवर से कह द अबे चले के बा । गाड़ी में आके बइठस । 'गनर' के कहि द तैयार हो जास ।'' संतरी मुड़ी हिलाके सलाम ठोक के चल गइल । साधुशरण गाड़ी में आके बइठ गइलन । गाड़ी का माथ पर लागल पीली बत्ती बन करे के ऊ आदेश दिहलन । गाड़ी सामान्य रूप से सड़क पर दउरे लागल । कई जगह क चक्कर लगवला का बाद ऊ ओह रास्ता पर अइलन जहाँ से कुछ दूर पर ऊ चौराहा रहे जवना पर घूसखोरी आ वसूली के शिकायत नेताजी कइले रहलन । साधुशरण गाड़ी रोके के कहलन । गाड़ी रूक गइल । ऊ गनर से चौराहा ओर जात कवनो लदल ट्रक रोके के कहलन । गनर एगो ट्रक रोक दिहलस । ऊ ट्रक बरौनी से दिल्ली जात रहे । साधुशरण ड्राइवर का केबिन में बइठ गइलन । गनर के कहलन कि हम फोन करब तब अइहजा । गाड़ी ओहिजा रहल । ट्रक आगे बढ़ल । चौराहा में खाड़ दू बंदूकधारी में एगो हाथ देके ट्रक रोकवलस, आ ट्रक रोकते ऊ बोलल ''ड्राइवर साहेब, दस्तूरी त दे दीं । एही तरे सूखे सूखे चल जाइब त हमनी के नजर साफ हो जाई।''

ड्राइवर बीस रुपया निकाल के दिहलस। सिपाही बोलल आउर पसेंजर त बइठवले बाड़ ओहू के कुछ दे द । ई त तोहार शुद्ध कमाई ह । ना त ओही लोग से कह ऊ दे दे ।'' साधुशरण ट्रक से उतर के दस रुपया के नोट सिपाही के थमा दिहलन । सिपाही मद्धिम प्रकाश में समझ

ना सकल कि यात्री के ऊ नोट लेके ऊपरी जेब में रख लिहलस। साधुशरण एक किनारा होके कंट्रोल रूम अपना मोबाइल फोन से संदेश दिहलन कि उनकरा ड्राइवर के चौराहा पर पहुँचे के बोले। पलक झपकते एस.पी. के गाड़ी चौराहा पर आके खाड़ भइल। दूनो सिपाही दौड़ के गइलन स। खाली गाड़ी देख के संतोष भइल।

एगो पुछलस "साहेब नइखन का ?"

"बाड़े त" ड्राइवर बोललस।

"कहाँ बाड़े ?" सिपाही पुछलस।

"हऊ का हवन" ड्राइवर देखवलस।

किनारे खाड़ आदमी के देखते दूनो सिपाहिन के थरथरी ले लेहलस। ऊ उहे यात्री रहे जवना से दस रुपया के नोट हाले लेहले रहलन स। साधुशरण दूनो के बोलवलन आ बोललन "का इहे तोहन लोग के डियूटी ह ? तोहन लोग पूरा महकमा के बदनाम क के रख देत बाड़ जा। दूनो जाना 'सस्पेंड' कइल जात बाड़ जा। काल्हु दस बजे दफ्तर में हमरा सोंझा पेश होके आपन सफाई दीह जा, सफाई लिखल रहे के चाही।" साधुशरण वायरलेस सेट करके थाना के ओह स्थान पर दूगो नया सिपाही भेजे के आदेश दिहलन। थोरकी देर में थानेदार के जीप आ गइल। ओह में से दूगो सिपाही उतरके साहेब के सलाम ठोकलन स। दरोगो जी सलाम ठोकले। साधुशरण दरोगा जी के खूब खीचाई कइलन "तू गश्त करत त ई सिपाही अइसन ना करतन स। तू खुदे ई करावत बाड़। एह बेर त छोड़ देत बानी बाकिर आगे से कवनो दूसर केस पकड़ाइल त तोहार थानेदारी ना रही। लाइन में आमद बिना कहले अगिला दिन करा लिहऽ।"

साधुशरण गाड़ी में जाके बइठ गइलन। दारोगा जी दूनू सिपाही के साथे सलाम ठोकलन। गाड़ी बंगला पर चल गइल। अगिला दिन दूनो 'सस्पेंड' सिपाही दफ्तर में आके अपन जवाब थमा के सलाम करत चल गइलन स। ओह घड़ी कुछ अइसन लोग बइठल रहे कि साधुशरण कुछ बोल ना पवलन। जवाब अपना घरवाली फाइल में दिहलन। उनकर आदत ह कि शाम के आठ बजे से नौ बजे तक घर का दफ्तर में बइठ के जरूरी कागज पर दस्तखत आ आर्डर के काम निपटा देस। शाम के जरूरी फाइल के निपटावत रहलन कि दूनो 'सस्पेंड' सिपाही के जवाब सामने आइल। एगो आपन गलती मान के माफी मँगले रहे आ आगे से अइसन ना करे के प्रतिज्ञा कइले रहे बाकिर दूसरा के जवाब साधुशरण के हिला के रख देहलस। सिपाही लिखले रहे-

''साहेब, हम बहुत गरीब घर के हईं । माई बाबू आगे ना पढ़ा सकलन त चाहस कि हमार नोकरी लाग जाव । अकेल लइका हम रहलीं । उन्हन का बुढ़ापा के सहारा रहलीं । बाबू दौड़-धूप कइलन । विधायक जी, सांसद जी आ मंत्री के गोड़े हाथ गिरलन बाकिर कवनो नतीजा ना निकलल । ऊ बड़ा निराश रहलन एही बीचे उनकर भेंट मुराहू से भइल । मुराहू बतवलन कि पुलिस में भर्ती बा । हमरा के भर्ती करवा दीहन बाकिर डेढ़ लाख रुपया घूस लागी । हमार बाबू सुनलन त उनका काठ मार देहलस । जिनगी में एतना रुपया ऊ एक साथे ना देखले रहले फेनु घूस कहाँ से देते । मुराहू बतवलन कि रुपया के व्यवस्था त हो जाई बाकिर सूद देबे के परी आ दू बीघा गोंयड़ा के खेत रेहन धरे के पड़ी । नोकरी के गारंटी बा । थोरही दिन में त कमा के लइका करजा भर दी । फेनु त कुल्हि चानी रही । मुराहू के सपना एतना रंगीन रहे कि हमार बूढ़ बाप तन मन से रंगा गइले आ चार बीघा के कुल्हि खेत में से दू बीघा रेहन ध दिहलन । सूद पर रुपया मिल गइल । माई सत्यनारायण बाबा के कथा कहवावे के मनलस । बहिन बरम बाबा के झूल मनलस । हम भरती में लाइन लगा दिहलीं । एक महीना के दौड़-धूप में हम भरती हो गइलीं । भरती होखे त हजार लइका आइल रहलन बाकिर भरती उहे भइल जे 'डेढ़ लाख टकिया' रहे । सोचे के बात त ई रहे कि एह भर्ती के अखबारन में ईमानदारी आ पारदर्शी कह के बड़ा तारीफ कइल गइल काहे से कि रिपोर्टरो लोगन के आ नेता लोगन के एक-एकगो कण्डिडेट भर्ती करावे के मोका दिहल गइल रहे । हम ट्रेनिंग में भेजल गइलीं आ फिर पोस्टिंग हो गइल । घर के माहौल देखीं त हमे रोवाई आ जा कि हमे सिपाही बनावे में हमार बाबू बन्हकी धरा गइल बाड़न । उनका के छोड़ावल हमार कर्तव्य बा । नौकरी लगते हमार बियाहो खातिर लोग धउरे लागल बाकिर जबले बाबू के खेत छोड़ा ना लेइब तबले बियाह के कवनो मतलब ना बुझाला । पोस्टिंग अइसन मिले जवना से बाबू क करजा उतरे । पुलिस लाइन में अइसन जगह पोस्टिंग करावे खातिर पूजा चाहत रहे । हम ओकर व्यवस्था कइलीं आ एहिजा पोस्टिंग भइल । हम जानत बानी कि घूस लिहल आ दिहल अपराध ह बाकिर जवना नौकरी के नींव घूस से परल बा ओकरे में कवन सिद्धांत चलाईं ।

साहेब राउर ईमानदारी के नाँव सुनले बानी । एही से ईमानदारी से हम आपन जवाब लिखत बानी । महकमा के गंदा के कइल ? जे भर्ती करावे खातिर डेढ़ लाख लिहल ऊ कि जे पूजा ले के एहिजा हमार पोस्टिंग कइलस ऊ कि बाबू के बन्हकी छोड़ावे खातिर हम जवन ई क रहल बानी तवन? निर्णय रउरा करीं आ दंड के भोग बराबरी होखे के चाही । भ्रष्टाचार आ

ईमानदारी कहाँ होखे के चाही ? रउरा सोचीं आ कबो हमरा के बोला के समझा देब । गलती माफ करब'' । साधुशरण सिपाही के जवाब पढ़ के उत्तेजना से भर गइलन । उनकर पूरा चेहरा लाल हो गइल । फाइल जोर से बंद क दिहलन ।

अगिला दिन कप्तान के पेशकार एगो कागज लेके अइलन । सस्पेण्ड दूनो सिपाही बोलवावल गइलन स । ऊ कहलन -''साहेब तोहन लोग के निलंबन खतम क दिहलन । जा के डियूटी कर । जा ई आदेश ऐह कागज में बा ।'' ऊ कागज थमा के दफ्तर में चल गइल ।

एक हफ्ता बाद अखबार में खबर छपल पुलिस अधीक्षक का तबादला पी.ए.सी. में ।' समाचार में लिखल रहे कि कप्तान साधुशरण आपन तबादला अनुरोध कके पी.ए.सी. में करा लिहलन ह । भरोसामंद सूत्रन के कहनाम बा कि ऊ पुलिस विभाग में व्याप्त भ्रष्टाचार दूर करे में अपना के असमर्थ पवलन ।

सबेरे अखबार पढ़के साधुशरण हँस दिहले । चाय के प्याली बढ़ावत उनकर मेमसाहब कहली -'' अब त रउरा एस.पी. ना रहलीं ?''

साधुशरण कहलन ''एस.पी. नाहीं हम नाँवे से जन्मजात एस.एस.पी. हईं यानी साधुशरण पाण्डेय ...'' दूनो बेकत के समवेत हँसी गूंज गइल ।

उनकर मेहरारू पुछली - ''का रउरा भ्रष्टाचार से हार गइलीं ?''

''ना, उचित समय पर जवाब देब'' साधुशरण जवाब देत अखबार पढ़े लगलन ।

●

कहानी

भभूत

–विजय कुमार तिवारी

लोग उनका के भगेलू काका के रूप में जानेला। असली नाम केहू का मालूम नइखे। का जरूरत बा? अब ऊ केहू खातिर भगेलू आ केहू के काका बाड़ें। काका, मेहनत के जवन मिसाल कायम कइले बाड़े, ऊ अद्‌भूत बा। उनकर सुतल-जागल, उठल-बइठल सबके महता बाटे। एतने से समुझल जाव कि उनकर खुशबू सँउसे जवार में उनका जीयते फइलि गइल।खेतन में उत्पादन बढ़ल बा, जवना से लोगन के चेहरा रौनकदार हो गइल बा। पहिले ई हाल ना रहे। घर-परिवार, गाँव-जवार में भयंकर दुर्दशा रहे। लोग एक-एक दाना खातिर तरसत रहे।

बाहरा से खटखटावला के आवाज सुनि के ऊ चिहुंकि के उठले। नींद से मातल आँखि खुलते ना रहे। एतना भिनसरहा के होई सोचत काका कुंडी खोलि दिहले! हरिया रहे, काका के इयार। दुनो जाने पलानी में आ गइले। हरिया चिलम बोझे लागल। रोड़ी गायब रहे। साफियो जइसे अब फाटे, तब फाटे। ''एह से काम ना चली।'' हरिया गुनगुनाये लागल। पानियो त नइखे काका आपन बड़की बेटी के हाक लगवले आ पानी ले आवे के कहले- ''एगो साफ कपड़ो ले अइहे,'' अब देहरी से ई लवटे लागल त काका जोर से कहले।

ईंकरा के घिस-घासि के हरिया चिलम के छेद में टिके लायक रोड़ी बना लिहलस। गाँजा के मलि-भिसि के पहिलहीं तइयार कइले रहे। कपड़ा के टुकड़ा हाथ में लेते ओकरा आँखि में एगो चमक उभरल। खुश होत हरिया कहलस-'साड़ी के मालूम होता।' ओकर सब ताकत, कहीं ना कहीं एही तरे उद्देश्यहीन होके बरबाद होत जाता, बाकिर ओकरा समझ में नइखे आवत। अइसन हाल में समझलो मुश्किले होता।

छन भर पहिले भगेलू काका चिढ़ि गइल रहले। एगो आक्रोश उभरल रहे उनका चेहरा पर, बाकिर अब सब खतम हो गइल। चिलम के गंध में सब डूब गइल। ई डूबल केतना भयानक होला, चाहें कतहूँ डूबल जाय। काका चिलम थामि लिहले। हरिया किनारा पर हाथ-पाँव मारत रहे, अब

उनका पीछे रहे। एने भोर-भोर के हवा में लजत रहे, शीतलता रहे। बम भोले काका दम लगवले। चिलम के आगि तेज हो गइल, लहर उठे लागल। हरियो दम मारे लागल। ई क्रम तब तकले चलल जबले चिलम के आगि राख ना हो गइल।

भगेलू काका लोटा उठाके खेत का ओरि चल दिहले। उनकर आँख लाल हो गइल रहे आ मन चिरई लेखा उड़े लागल। अइसन हालत में उनका से ढेर दूरि ना जाइल गइल, लवटि अइले। बेटी के पुकरले। छन दू छन प्रतीक्षा कइले। जब कवनो जवाब ना मिलल त चिल्लाये लगले, ''मरि गइले का रे, केहू नइखे सुनत। हमरा ओरि केहू के धियान नइखे, जइसे हम मरि-बिला गइल होईं'' उनकर मन आहत हो उठल।

''का टर्र-टर्र कइले बाड़?कवन झंझा आ गइल बा?'' काकी बाहर निकललली। काका चुप हो गइले, जइसे कुछ भइले ना होखे। काकी चालिस पार करे वाला बाड़ी बाकिर देखि के केहू ना कही। पाँच-पाँच गो लइका बाड़न स बाकिर अभियो हाड़ काठ में ताकत बा, तन बदन में कसाव बा। ई कुदरती खेल बा ना त एह जलालत आ गरीबी में जियले कठिन होइत। उहवें काका पैतालिस के जगे साठ-पैसठ के लागताड़े। दुबर-पातर शरीर पातर-पातर बेजान बाँहि, निकलल हाड़, धंसल आँख, पचकल गाल आ ओह पर बेहतरीन उगल करिया सफेद घास।

''का चाहीं?''

''दतुअन'' काका डेराते कहले।

''हाथ पर हाथ धइले बइठल रहऽ आ जाई'' तुनकल काकी पतानी के पिछुआरी चल गइली। पिछुवाड़ी के खाल जमीन में टूटल डाल-पात रखल जाला। बरसात में पानी भरि गइला से बँसवारि के पार तकले एगो तालाब बनि जाला। काकी ओने कमे जाये चाहेली। भूतन के जमावड़ा बा शायद। जब से बियाह कराके आइल बाड़ी, भूत ब्रह्म आ चुड़ैलन के एक से एक कहानीं सुनले बाड़ी। घर के आगे-पाछे ओरी भूतन के बसेरा बा। शुरू-शुरू में काकी का बड़ा डर लागत रहे। अब त आदत पड़ गइल बा। गाँव के हर आदमी के इहे दशा बा। पहिले ऊ कहीं दूर खेत-खलिहान, बगईचा में रहेला। धीरे-धीरे करीब आवत जाला। लोग ओढ़े-बिछावे लागेला, डरे-डराये लागेला। कबो-कबो त छोट-से-छोट घटना से पूरा वातावरण में दहशत फइल जाला। भय आ दहशत के एगो माहौल में जीयत आइल बा ई कुनबा! इहाँ सवाल प्यार-सहनभूति के नइखे। इहाँ त जीए- मुए के सवाल बा। पेट भरे के सवाल बा। ई अज्ञानता से मुक्ति के सवाल बा।

काका मुँह-हाथ धोके तइयार भइले त बड़की जोन्हरी के बासी लिट्टी ले आके सामने परोसलस।

नमक-मिरिचा के संगे पानी के बल घोंटल शुरू कइ दिहले। लिट्टी सुखल रहे। चबावल ना जात रहे। घर में कुछु आउर त रहे ना।

एही बीच छोटका दउरत आइल आ काका से चिपकि गइल। ''ले,खा ले''। काका एगो छोट टुकड़ा ओकरा मुँह में दिहले। मुँह चलावत ऊ आँगन ओरि भाग गइल। छन भर खातिर काका के मन प्रसन्न हो गईल। फेरू धीरे-धीरे उदासो भइल कि आज तकले लइकन खातिर उचित भोजन पानी के इंतजाम ना हो सकल।खेतन में जोन्हरी-बजरा के अलावा कुछ होत नइखे। काका अधखइले उठ गइले। उनका अचानक इयाद आइल कि देवीस्थान से समहर अगेंया आइल बा। रोवाँ-रोवाँ प्रसन्न हो उठल, महीनवन बाद आज सुअन्न मिली। उहो पूरा ताम-झाम के साथे। काका साँझ-बेला के इंतजार करे लगले। एक ओर अँतड़ी में कुलबुलाहट रहे, त दूसर ओर भोज में मिले वाली मुलायम-मुलायम पूड़ी के महक। एगो संतोष छलकल काका के चेहरा पर। बाकिर दुखो रहे कि मेहरारू आ लइकन के ना मिल पाई पूड़ी ! माँगब, ऊ निश्चय कइले, एक -आध टुकड़ा सबके मिल जाई! समहर अगेंया बा। दूनो लइकन के हिस्सा पर काफी मिले के चाहीं। रात में सबके भोजनो हो जाई। काकी के बोला के काका चेतवले, 'हमरा लवटला के बादे कुछ करिह।'

''तब तकले लइकन के रोवावत रहब ?''

''ना, बात ई बा कि नेवता समहर के बा। लइकन के नाम पर छाना मिलहीं के चाहीं।''

''ना मिली तब .....''

–''हँ, ई बात त बा!''

काका के मन फेरू उदास हो गइल। काकी भीतर चलि गइली। उनकर मन भइल कि सरेह से घुम आईं, बाकिर फिरू असकतिया गइली। गाँवें में चक्कर लगा ली, काका सोचले आ निकल पड़ले। हवा तेज चलत रहे आ सूरज माथा पर आ गइल रहले। हरिया नीम के छाँह में खटिया बिछवले चइता के सूर अलापत रहे। हरिया के बाप जवार के नीमन गवइया! बेटवो पर असर पड़ल बा। काका के देखते ऊ खड़ा हो गइल आ मुस्किया के कहलस, ''आव काका! कबो-कबो घर से बाहरो निकलल कर''। काका के हरिया के एहतरे पूछल ठीक ना

लागल। .... ''बइठ ना काका'' हरिया मनुहार कइलस !

''देवीस्थान चले के बा नू?'' बात बदले खातिर काका पूछले।

''अभी एको ना बजल काका,'' पेट सहलावत डकारि के हरिया कहलसि, ''पहिले आधा सेर सतुआवा पचे, तब नू।''

काका का आत्मग्लानि लेखा लागल। उनका अपना पर गुस्सा आइल कि कांहे ना दूनो लिट्टी खा लिहलीं। अइसही अफसर रहिती आ शान से भोज में जइतीं। नादे पर चढ़ल बैल के ऊ ध्यान से देखले। हरिया रोज दूपहर में आपन बैलन क खिया देला! बैल एके टक घर ओरि देखत रहेलस। ''इहे हाल हमरो बा'', काका के लागल। मन में पीड़ा अउर सघन हो गइल। ''ना, कुछ-ना-कुछु त करहीं के पड़ी'', काका के मन में जोश जागल! उनका अपना पतनशील दशा पर दुख भइल। सबसे बेसी दुख अपना अकर्मण्यता पर भइल।

वइसहीं इहाँ केहू से केहू ना डेराव, केहू-केहू के अदब ना करे! कहे खातिर त सब ब्राह्मण बाड़े, बाकिर केहू के पासे संस्कार नइखे। सबके सब लालची, लोलुप, चोर आ व्यभिचारी बाड़े। छन भर खातिर पूरा गाँव एगो करिया-कलूटी उड़त परछाईं लेखा दिखाई दिहलस। गाँव के लइकन सब लोटा उठवले देवीस्थान जाये खातिर तइयार रहले स। सबका तन पर साफ-सुथरा कपड़ा रहे। हरिया लेखा नवही बाभन आछा-आछा धोती-कुर्त्ता पहिन लिहले! बूढ़वा लोग जइसे के तइसे तइयार हो गइल। मइल धोती आ मइल गंजी पहिनले भगेलू काका कान्हा पर गमछा राखि के लोटा उठा लिहले। हरिया तेजी से आइल आ कहलस, ''काका पहिले दम लाग जाव''।

''हमरा भूख लागल बा।'' हरिया हँसे लागल। कहलस, '' काका कहत त अइसे बाड़ जइसे अबहीं बइठब आ अभीए पकवान हाजिर। कोस चले के बा। पहिले आराम त कई ल।''

''जोगाड़ कहवाँ बा?''

''सब बा। पहिले बइठ त''

तीन-चारि गंजेड़ी अऊर आ गइले। काका के भूख के मारे बुरा हाल रहे। बाकिर चिलम के गंध खींच लिहलस। हरिया चिलम बोझे लागल। गाँजा पी के लोग चले लागल। दरवाजा पर दूनो लइका बइठल रहले स। एगो लंगटे रहे। चेहरा में मांछी उड़ावत पलानी का ओर देखत रहे।

काका लोटा उठवले जात लोगन के देखत रहलें। काका के मन में दुख हो गइल। देवीस्थान पर पहुँच के राहत के साँस लिहलें। इनार के शीतल पानी से लोग आपन-आपन पाव धोवल। अइसन समय में उहाँ बहुत भीड़ हो जाला। एगो मेला लाग जाला। चूड़ी, सेनुर, फीता, ककही, खेलौना, मिठाई के छोट-छोट दूकान सज जाली सन। दूर देहात आ शहर से लोग मनौती माँगे आवेला। लोग आपन-आपन दुख से छुटकारा पावल चाहेला। ऊ दृश्य बड़ा लोहमर्षक होला। जब जवान -जवान लड़की, मेहरारू सब बार छितरवले अस्त-व्यस्त ढंग से ब्रह्म खेले ली स। कामना पूरा भइला पर आ रोग से मुक्ति मिलला पर लोग ब्राह्मण भोज करवावेला। एह सजल संवरल सुधर गोर-गोर मेहरारूअन के देखि के काका का आश्चर्य होता। काका के ना लागे कि एहनिओ के दु:ख होत होई। उनका लेखा बहुत लोगन खातिर ई एगो अबूझ पहेली बा। काका मने-मने देवी मईया के प्रणाम कइले आ ओह ओरि देखे लगले जहवाँ बभनन के पाँति-बइठल रहे। लोग पुड़ी-कचौड़ी के आनंद लेत रहे। ऊ ललचत निगाह से परोसे वालन के देखले। फेरू उनकर ध्यान मंदिर से दूर ओह खेतन के ओर गइल जहवाँ चारो ओर हरियाली रहे! इहो त बलुअरे जमीन ह बाकिर खेतन में हरियाली बा। कोईरी जाति बड़ा मेहनती होले। एगो हमनी का बानी जा। काका का अपना पर घृणा लेखा भइल। इ सब पानीए के नू कमाल बा। हमनिओं का पानी के इंतजाम करे के चाहीं तबे भोजन मिली, सुअन्न। काका के मन में उत्साह लेखा जागल।

पांति उठल त हरिया हाथ धोवे लागल। काका पांति में बइठि गइले। जब पूड़ी पड़ल त उनकर मन लइकन का ओरि चलि गइल। टीस उठल उनका छाती में। काका खाए लगले। लगातार उनका सोंझा भूखाइल लइकन के छाया नाचत रहे। ठीक से खाइल ना गइल। हाथ-मुँह धोके काका भगत जी की ओर मुड़ले! कहले, ''घर में दू गो लइका बाड़ेस भगत जी,''

''त, ले काहे ना अइनीहाँ महाराज।''

''अबही छोट बाड़न स। एतना दूर चलल .....''

''कुछुओ दे दीं'' काका गमछा फइला दिहले।

''हम छाना ना दिहीं पंडीतजी! जे आ जाला, सबके खिया देनी।''

''लइका भूखाइल होइह स'' काका गिड़गिड़ाये लगले।

काका के सामने एगो पतल आ गइल। ऊ गमछा में बान्हि लिहले। लइका खुश हो जइहें स। काका तेज चाल चले लगले। हरिया टोकलस कि काका एतना तेज काहे चलतार?

''चलऽ चुपचाप! साँझि बा, गोधूलि बेला में भूत-प्रेत बाहर निकले ल स। ''

''डेरा गइल नू ,'' हरिया हँसे लागल।

''मिसिर के बगइचा आगहीं बा। भभूतियो नइखे''

शंका के साथे काका कहले।

''हमरा त नइखे भूत-उत के डर। जे डेराला, काका ओही के भूतओ पकड़ेले स।'' हरिया के हँसी में व्यंग रहे!

''अइसन मति कह। ते नइखिस जानत कि .....।'' बात पूरा ना होखे पावल। काका के हालत बिगड़े लागल। ऊ नाचे लगले आ दौड़ लगावे लगले। उनकर हाव-भाव विचित्र हो गइल। हरिया परेशान हो गइल कि ई का हो गइल। केहू पकड़े के कोशिश कइल त दे पटकनिया। लोग धर-बान्हि के घरे ले आइल। काकी पंखा हाँके लगली। लइका सब उनका के देखे लगले स। दुआर पर गाँव भर के लोगन क भीड़ जमि गइल! ''भूत पकड़ले बा'' ई सोचि के ओझा-देवा,भभूत के उपचार होखे लागल। धीरे-धीरे जब उनुका कुछ आराम मिलल त पलक खोललें! गमछा देखवले। पुड़ी, सब्जी आ चीनी पाके लइकन प्रसन्न हो गइले स। ओकनी के प्रसन्नता देखि के काका के मन गद्-गद् हो गइल। ''पानी के इंतजाम जरूरे करब'' काका मने-मने बुदबुदइले। खेत के कवनो कमी नइखे। बस मेहनत के कमी बा। अब मेहनत करब। एह बभनई से श्रम के कइल जियादे उत्तम होई। काका के नींद लाग गइल। काकी सिरहरना भभूति के पोटली

राख दिहली। भोर में काकी के नींद खुलल त देखतारी कि सुतल-सुतल ऊ ना जाने का-का बड़ बड़ा तारे। माथा छुवली, त देहि तपत रहे, बुखारे रहे।

''ओह ! भयानक सपना .....'' काका के नींद खुलल। सपना के भय उनुका चेहरा पर झलकत रहे। सपना में देखले कि एगो भव्य देवालय बनल बा आ उहे ओकर पुजारी बाड़े। भोर में जागल, स्नादि कइल, पूजा कइल आ समय से भोजन ..... उनुका साथे परिवारो के कायाकल्प हो गइल! देवालय के महिमा के साथे-साथे उनका प्रताप के कीर्तिपताका चारू ओरि फइलल बा। लोग आवता आ रोग-मुक्त होके जाता। उनुका आशीर्वाद से दैहिक, दैविक आ भौतिक तीनो तरह के व्याधि से छुटकारा हो जाता! बाभन-भोज, कीर्तन, हवन-पूजन आ एक से एक स्वादिष्ट भोजन। लोगन के आदर के साथे काकी के प्यार मिलता। सब भभूत के माया ह। काका भभूत उठावतारे आ लोग चंगा हो जाता। एक दिन जइसे वज्रपात हो गइल। अचानके भयंकर आँधी चले लागल, तूफान आ गइल। देवालय टूटि के छत-विक्षत हो गइल। चारू ओरि त्राहि-त्राहि मचि गइल। ''ओह भयानक सपना'' काका उठि बइठले! एने- ओने देखले! सब पहिलहीं जइसन रहे! कहवाँ गइल ऊ देवालय, ऊ भीड़ आ ऊ पकवान? काका चारू ओरि देखले, उहे दुख, उहे संताप आ उहे पीड़ा! उनकर आँखि खुलल त खुललें रहि गइल? भभूत के मायाजाल आ पुजारी के दावपेंच देख चुकल रहले।

काका के बेमारी देखि के काकिओ घबड़ा गइली। हरिया के दवाई खातिर भेजली। हरिया हँसे लागल, कहलस, का काकी। भभूत के कृपा ना भइल?''

नमक मत छिड़क! जो जल्दी डाकडर के बोला ले आव। ''सुई-दवाई के बाद काका के आँख खुलल। बेमारी ठीक होखे लागल। डाक्टर से मालूम भइल कि भूखइला पेट ढेर खइला से, जियादे पानी पीयला से अइसन हो जा सकेला। एह गरमी में अइसहीं बेमारी हो जाई। काका पूरा आत्मविश्वास के साथ उठले। उनकरा अपना सिरहाना भभूति के पोटली दिखाई दिहलस। काका ओह पोटली के पीछे फेंक दिहले। अगिला दिन आपन मन के योजना के अनुसार काका कुदारी उठा के सरेह की ओर चल दिहले। लोग टुकुर-टुकर देखे लागल। लोग पूछल त काका जवाब दिहलें– ''दोसरा का ओर ललचइला आ भीख माँगला से अच्छा बा आपन खेतन में काम कइल। तोहनियों लोग चलऽ'' । इहे धरती सोना उगिले लागल। तबे से विकास शुरू हो गइल। करिया-कलूट, मरियल गाँव अब खुशहाली के आनंद लेता आ भगेलू काका के लोग सिर माथा चढ़ावता।

●

शब्दकोश

तहरा लोगिन खातिर एजवाँ छोटी चुकी शब्दकोश दिहल जाता। एह शब्दकोश में पाठ में आइल शब्द दिहल बा। कवनों-कवनों शब्द के कई-कई गो अर्थो होला।

शब्द के अर्थ से पहिले कई तरह के अक्षर-संकेत दिहल गइल बा। एह संकेतन से तहरा लोगिन के व्याकरण संबंधी जानकारी मिली। भोजपुरी में लिंग निर्णय बहुत जगे हिंदी से अहलदा बा। नीचे अक्षर संकेत दिहल गइल बा–

अव्य	–	अव्यय	अ. क्रि	–	अकर्मक क्रिया
क्रि	–	क्रिया	स. क्रि	–	सकर्मक क्रिया
सं.	–	संज्ञा	वि.	–	विशेषण
पु.	–	पुल्लिंग			
स्त्री	–	स्त्रीलिंग			

अंग-प्रत्यंग	: पु. सं.	-	देह के सब छोट-बड़ अंग
अँकवार	: स्त्री०	-	आलिंगन
अँचरवा	: पु०	-	साड़ी के ऊ हिस्सा जवन सामने छाती पर होला, आँचरा
अछरंग	: पु० सं.	-	कलंक, दाग, झूठ दोष लगावल, अपयश
अमंगल	: वि०	-	अशुभ, जवन नीमन ना होखे
असीसिया	: स्त्री०	-	आशीर्वाद, आशीष
ऑफिस	: पु० अंग्रेजी	-	दफ्तर, कार्यालय
ओंठन	: पु० सं	-	ओठ

कगरी-कगरी	:	-	किनारे-किनारे
कजरी	: स्त्री० सं.	-	एक तरह के गीत जवन बरसात में मिर्जापुर आदि में गावल जाला, करिखा, करिया आँख वाली गाय, भादो बदी तीज के मनावल जाये वाला पर्व
कनिया	: स्त्री सं.	-	नवकी दुल्हिन
करिया	: पु० वि.	-	कोइल,कोइला भा करिखा के रंग के
गाँज	: पु० सं	-	पुअरा के ढेर, ढेर, टाल, बहुतायत
गाछ	: पु० सं.	-	पेड़, दरख्त, पौधा
गोड़	: पु० सं	-	पैर, टँगरी
घाम	: पुं०	-	धूप, रउदा
घोनसारी	: सं.	-	भूंजा भूंजेवाला जगहा
चऊका	पु० सं.		चार के समूह, खायेक बनावे के जगे
चरण	: पु० सं.		टँगरी, गोड़, पैर, पाँव, पद्य भा श्लोक के एगो हिस्सा,
चान	: पु० सं.	-	चाँद, चन्द्रमा
चिरकूट	पु सं.	-	फाटल पुरान कपड़ा, चिथड़ा
चेचक	: पु० सं. फारसी		एक तरह के बेमारी जवना के मइया कहल जाला
चौकन्ना	: अ० क्रि.	-	सचेत
छक्का	: सं.	-	छः के समूह, हिजड़ा, खोजवा, ताश के छउवाँ पता, क्रिकेट के खेल में बॉल के ऊपड़े-उपड़े बाउंड्री पार कइला पर छः रन मिलल
छौना	: पु० सं.	-	छोटहन लड़िका, जानवर के बच्चा
जनचेतना	: अ० कि०	-	लोग में जागृति के भाव
जनशैलाब	:	-	लोग के भीड़

जाँगर	: पु० सं०	–	अंग, हाथ-गोड़
जीउ	: पु०	–	मन, प्राण, जीव
झलमल	: पु० क्रि. वि.	–	अन्हार में रह-रह के होखे वाला थोड़िका अँजोर, चकमक
डाईन	: स्त्री० सं०	–	ऊ मेहरारू जेकरा बारे में लड़िका मुआवे के अंधविश्वास होला, टोना जादू करेवाली
डाढ़ि	: स्त्री० सं०	–	डार, डेहुँगी,
डेलीवरी	: क्रि० अंग्रेजी	–	बच्चा भइल, प्रसूति, कवनो समान दीहल
ढेला	: पु० सं.	–	माटी के छोटहन टुकड़ा, ढेपा
तरेंगन	: पु० सं.	–	जोन्ही, तारा
थाला	: पु० सं.	–	जड़ आ माटी के संगे छोटहन गाछ, जवन एक जगे से दोसरा जगे लगावे खातिर निकालल जाला
थैंक्यू	: अंग्रेजी	–	धन्यवाद
दंतुली	: स्त्री वि०	–	जवना मेहरारू के दाँत ओठ के बहरी निकलल होखे।
दस्तखत	: पु. सं.	–	हस्ताक्षर
दादरा	: पु० सं.	–	एगो ताल,
दादुर	: पु० सं.	–	बेंग, ढाबूस, मेढ़क
दुबर	: वि०	–	पातर, निरबल
धीयवा	: स्त्री० सं.	–	बेटी
न्यून	: वि.	–	कम, छोटहन, थोड़िका
नइहर	पु. सं.	–	लड़की के माई-बाप के घर, मायका
ननद	- स्त्री० सं.	–	पति के बहिन
नाकाबिल	: फारसी	–	अयोग्य, जे कवनो काम लायक नइखे

निछुनवे	: सं०	-	मन से
निठुराई	: स्त्री० सं.	-	कठकरेजी, बेरहमी, कठोरता
निनरिया	: स्त्री० सं.	-	अँघी, नींद
निराई	: स्त्री. क्रि.	-	खेत से घास-पात निकालल, सोहनी
नीमन	- पु० वि०	-	नीक, बढ़िया, अच्छा, सुनर
परवरिश	: पु० फारसी	-	गुजारा, लालन-पालन
पराती	: स्त्री. सं.	-	भोर में गावे जाये वाला गीत
पलानी	: स्त्री. सं.	-	झोंपड़ी, मड़ई
पसेनिआँ	: पु. सं.	-	मेहनत भा गरमी के वजह से देह में से निकलत पानी, पसेना,
पहुँचा	: पु० सं	-	कलाई, गाटा, मणिबंधा हाथ में पहिनल जाये वाला एगो गहना
पुअरा	: पु० सं०	-	पुआल, धान के सूखल डाँठ
पुरखन	: पु. सं.	-	पूर्वज, पुरखा
बधाव	: पु.	-	बधाई, खुशी के उत्सव
बपसी	: पु. सं.	-	बाप, बाबू जी, बाबू
बहुरिया	- स्त्री. सं.	-	पतोह, दुल्हिन, नया बियहल मेहरारू
बाउर	: वि.	-	खराब, बुरा, बेकार, बेजाँय
बादर	: पु० सं०	-	घटा, बादल, मेघ
बान्ह	: पु० सं०	-	बान्हल, बाँध
बिपत	: स्त्री० सं०	-	दुख, आफत, विपदा
बिहान	: पु० सं०	-	सबेर, भोर, आवेवाला दिन
बुझाइल	: क्रि०	-	समझ में आइल, लागल

बेना	: पु० सं०	-	पंखा
बैट	: पु० सं०	-	बल्ला
भारत-रत्न	: सं०	-	भारत के रत्न, भारत के सबसे बड़ नागरिक सम्मान
मउवत	: स्त्री०	-	मरल, मर गइल, मुअल
मड़ई	: स्त्री० सं०	-	पलानी, झोंपड़ी
मतारी	: स्त्री० सं०	-	माई, माँ, महतारी
मयगर	: पु० वि०	-	दयालु
मयभाउत	: वि०	-	सौतेला, सौतेली
मलहोरी	: पु० सं०	-	फूल के कारोबार करे वाला
महतारी	: स्त्री० सं०	-	माई, माँ, मम्मी, मतारी
मालिन	: स्त्री० सं०	-	फूल के देख-भाल करनेवाली, फूल बेंचे वाली
मीटिंग	: पु० सं० अंग्रेजी		सभा
मुरघटिया	: पु० सं०	-	श्मशान, मुरदाघाट्टी, मुर्दा जरावे वाला जगह
मेहरारू	: स्त्री० सं०	-	औरत, स्त्री, महिला, मेहर
मोहक	: वि०	-	मन पसंद, मुग्ध क देवे वाला, मोह लेबे वाला
रियाज	: पु (सं)	-	अभ्यास
रिश्ता	: पु० (सं)	-	संबंध, नाता
रेसमसुत	: पु० (सं)	-	रेशम के डोरा
लँगोटिया इयार	: पु०	-	लड़िकाई के इयार, नजदीकी दोस्त
लफ्ज	: पु० अरबी	-	शब्द, बात, लबज
ललछौही	: (वि०)	-	हल्का लाल रंग वाली
लुगरी	: स्त्री० (सं०)	-	फाटल-पुरान लुगा
लुगाई	: स्त्री० (सं)	-	मेहरारू

वाईफ	: स्त्री. (सं) अंग्रेजी-		मेहरारू, पत्नी
शीतल	: (पु.) वि०	-	पाला, ठंडा, शांत
सखुआ	: पु० (सं)	-	इमारती लकड़ी के गाछ
सतरंगी	: स्त्री. (वि०)	-	सात रंग वाला
सरहुल	: (सं)	-	आदिवासी पर्व
साँझ	: पु० (सं०)	-	गदबेर, शाम
सॉरी	: स्त्री०, अंग्रेजी-		क्षमा भा माफी माँगल
सींचि	: क्रि.	-	पटावल
सुर	: पु० (सं)	-	स्वर
हनहनात	: क्रि. वि.	-	तेजी से
हिफाजत	: स्त्री. अरबी	-	सुरक्षा, बचाव, रक्षा